आदिवासी एक्सप्रेस

आमजन का एक मात्र हिंदी दैनिक अखबार

रांची, मंगलवार
24 जून 2025
वर्ष: 38, अंक: 196
पृष्ठ: 12, मूल्य: 3रु
RNI NO.: 49065/1989
DAVP CODE: 130961

देश

जलवायु परिवर्तन के संकट को देखते हुए पर्यावरणीय लागतों पर भी ध्यान दें लेखाकारः मुर्मु

झारखंड

अंतर्राष्ट्रीय विधवा दिवस पर पवन-पूजा की शादी बनी मिसाल, विधवा विवाह को सामाजिक सम्मान दिलाने की पहल

हजारीबाग

हजारीबाग श्मशान काली मंदिर में अंबुबाची महोत्सव की भव्य तैयारी, 22 जून से शुरू हुआ विशेष साधना पर्व

रांची सहित कई जिलों में गरज के साथ मूसलाधार बारिश

खोलना पड़ा कांके डैम का फाटक

बिशेष संवाददाता द्वारा

रांची: राजधानी रांची सहित आसपास के जिलों में सोमवार को भी गर्जन के साथ मूसलाधार बारिश हुई. लगातार हो रही बारिश से जन- जीवन पर असर पड़ा है. वहीं बारिश के बाद हरमू और स्वर्णरेखा नदी का जलस्तर बढ़ गया है. मूसलाधार बारिश की वजह से कांके डैम का जलस्तर बढ़ जाने के बाद एक बार फिर कांके डैम के डिस्चार्ज फाटक को खोल दिया गया. कांके डैम के एसडीओ शुभम उपाध्याय ने बताया कि कांके डैम का जलस्तर 27.5 फीट पहुंचने के बाद एहतियातन एक डिस्चार्ज फाटक को खोला गया है. आज हुई बारिश के बाद इसके खुले रहने की संभावना है. ऐसे में अभी यह बताना संभव नहीं है कि कितना क्यूबिक मीटर पानी छोड़ा गया. इस

बीच मौसम केंद्र, रांची ने अपने ताजा मौसम पूर्वानुमान में 26 और 27 जून को कई जिलों में भारी से अत्यधिक भारी बारिश का ऑरेंज और येलो अलर्ट जारी किया है.

झारखंड में पिछले 24 घंटे में मानसून की गतिविधियां सामान्य रही हैं. इस दौरान लगभग सभी स्थानों पर गर्जन के साथ हल्की से मध्यम दर्जे की बारिश हुई. 22 जून की सुबह 8.30 बजे से 23 जून की सुबह 8.30 बजे तक राज्य में सर्वाधिक बारिश हजारीबाग के विष्णुगढ़ में 109.3 स्रूबारिश हुई. वहीं रांची में 102.8स्रू बारिश रिकॉर्ड हुई है. इस दौरान सर्वाधिक बारिश वाले अन्य जिलों में पाकुड़ में 68 स्रू, चाईबासा में 55स्रू, रामगढ में 22.5स्रूऔर जमशेदपुर में 20.2 स्रूबारिश रिकॉर्ड की गई है.

वहीं खबर लिखे जाने तक राज्य में सबसे अधिक बारिश हजारीबाग में 54.5 एमएम रिकॉर्ड की गई. वहीं रांची में 44 एमएम और जमशेदपुर में 23.2 एमएम बारिश हुई है. वहीं अगर पूरे राज्य की बात करें तो झारखंड में जून महीने में औसत सामान्य मानसूनी बारिश 122.6 एमएम की जगह 247.4 एमएम बारिश हो चुकी है, जो सामान्य वर्षापात से दोगुने से भी अधिक है.

राजधानी रांची और आसपास के इलाकों में हो रही जोरदार बारिश की वजह से राजधानी के कई निचले इलाकों में जल जमाव से लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ा. वहीं हरमू और स्वर्णरेखा नदी में उफान नजर आया.

23 से 26 जून तक के लिए राज्य के कई जिलों में भारी बारिश का येलो अलर्ट जारी किया गया है. मौसम केंद्र,रांची ने अपने ताजा मौसम अपडेट में 26 जून की सुबह 8.30 बजे से 27 जून की सुबह 8.30 बजे तक राज्य के गुमला, सिमडेगा और पश्चिम सिंहभूम में भारी से अत्यधिक भारी बारिश का ऑरेंज अलर्ट जारी किया है, जबकि लोहरदगा, रांची, खूंटी, सरायकेला-खरसावां, पूर्वी सिंहभूम में भारी से अत्यधिक भारी बारिश का येलो अलर्ट जारी किया है.

वहीं 27 जून की सुबह 8.30 बजे से 28 जून की सुबह 8.30 बजे तक राज्य के गुमला, सिमडेगा, खूंटी, पश्चिमी सिंहभूम, पूर्वी सिंहभूम और सरायकेला खरसावां में भारी से अत्यधिक भारी बारिश का येलो अलर्ट जारी किया गया है.

मौसम केंद्र, रांची ने 23 जून से 25 जून तक राज्य के कई हिस्सों में थंडर स्ट्रॉम और 40 से 50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवा के झोंके चलने का येलो अलर्ट जारी किया है. वहीं 26 जून से 28 जून तक कई इलाकों में 30 से 40 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवा के झोंके चलने का येलो अलर्ट जारी किया है.

हजारीबाग में बारिश का कहर! भारी बारिश के दौरान कमरे की छत गिरने से दंपती की मौत

बिशेष प्रतिनिधि द्वारा

हजारीबागः हजारीबाग जिले के बरही थाना क्षेत्र के रसोइया धमना बाराटोला गांव में रविवार देर रात एक जर्जर मकान की छत गिरने से पति-पत्नी की दर्दनाक मौत हो गई। हादसे में हबीब अंसारी और उनकी पत्नी जुमेरा खातून मलबे में दब गए। ग्रामीणों ने दोनों को बाहर निकालकर अस्पताल पहुंचाया। जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया।

रात में सोने के दौरान हुआ हादसा्यह घटना रविवार रात रसोई धमना गांव में उस समय हुई जब दंपती कमरे में सो रहा था। दुर्घटना में जान गंवाने वालों की पहचान हदीस अंसारी (52) और उनकी पत्नी जुमैरा खातून (48) के रूप में हुई है।

बरही अनुमंडल पदाधिकारी (एसडीओ) जोहान टुडू ने बताया कि हादसे के समय दोनों अपने कमरे में सो रहे थे, तभी अचानक छत गिर गई और वे मलबे में दब गए। उन्होंने बताया कि घर के अन्य सदस्य सुरक्षित हैं क्योंकि वे अलग कमरों में सो रहे थे। एसडीओ ने बताया कि दोनों शवों को बरही अनुमंडल अस्पताल में पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। उन्होंने कहा कि पीड़ित परिवार को सरकारी प्रावधानों के तहत मुआवजा दिया जाएगा। हादसे के बाद मौके पर पहुंची राहत और बचाव टीम की ओर से मलबा हटा कर शव को बाहर निकाला गया।

एसडीओ ने बताया कि क्षेत्र में इस तरह की घटनाओं से बचने के लिए पुरानी और जर्जर मकानों का सर्वेक्षण कराने का निर्देश दिया गया है। वहीं गांव वालों ने प्रशासन से जर्जर मकानों की पहचान कर जल्द कार्रवाई की मांग की है। क्योंकि लगातार झारखंड में भारी बारिश हो रही है। इसकी वजह से कई दुर्घटनाएं हो रही है। जलजमाव की वजह से जहां जन जीवन अस्त-व्यस्त है। कच्चे मकान भारी बारिश की वजह से ध्वस्त होते जा रहे हैं।

जुमैरा खातून स्थानीय वार्ड 9 की जनप्रतिनिधि थीं। इस हादसे से गांव में मातम का माहौल है। मृतक दंपति अपने पीछे चार बेटियां और एक बेटा छोड़ गए हैं। बरही सीओ अमित किस्कू ने बताया कि यह प्राकृतिक आपदा की श्रेणी में आता है। परिजनों को 4 लाख रुपये मुआवजा दिया जाएगा।

लगातार मुठभेड़ के बाद नक्सल संगठनों में भगदड़: जोनल आईजी

क्राइम संवाददाता द्वारा

पलामूः पुलिस सुरक्षाबलों की लगातार कार्रवाई के बाद नक्सली संगठनों में भगदड़ मच गई है. प्रतिबंधित नक्सली संगठन भाकपा माओवादी, जेजेएमपी और टीएसपीसी के टॉप कमांडर और कैडर आत्मसमर्पण करने की फिराक में हैं. पिछले एक महीने के दौरान लातेहार और पलामू में नक्सली संगठनों के खिलाफ कई बड़ी कार्रवाई हुई है.

पुलिस की कार्रवाई में लातेहार इलाके से जेजेएमपी के सुप्रीमो पप्पू लोहरा, उसका साथी प्रभात गंझू, माओवादी कमांडर मनीष यादव और पलामू का माओवादी एरिया कमांडर तुलसी भुईयां मारा गया है. कार्रवाई के दौरान 10 लाख का इनामी माओवादी कुंदन खरवार पकड़ा भी गया है. लगातार मुठभेड़ एवं पुलिस की कार्रवाई के बाद नक्सली संगठन में भगदड़ मची हुई है. इसी भगदड़ में लातेहार के इलाके में जेजेएमपी के टॉप कमांडर बैजनाथ सिंह ने आत्मसमर्पण किया था.

पलामू के जोनल आईजी सुनील भास्कर का कहना है कि पुलिस अपनी

कार्रवाई इंटेलिजेंस के आधार पर लगातार कर रही है. इसी कार्रवाई में पुलिस को लगातार सफलता मिल रही है. आईजी ने कहा कि जेजेएमपी का कमांडर पप्पू लोहरा एनकाउंटर में मारा गया है. इसके अलावा कई बड़ी कार्रवाई हुई है. कार्रवाई के बाद नक्सली संगठन से जुड़े कई सदस्य सरकार की योजना नई दिशा से जुड़ना चाहते हैं.

आईजी ने बताया कि सरेंडर पॉलिसी से प्रभावित होकर कई लोग सरेंडर करेंगे. पुलिस लगातार नक्सली संगठनों के कैडरों से आत्मसमर्पण करने की अपील कर रही है. सभी नक्सली से मुख्यधारा में शामिल होकर सरकारी लाभ लेने की बात कही जा रही है.

दरअसल, पलामू जोन में नक्सल संगठनों के खिलाफ लगातार अभियान चलाया जा रहा है. पुलिस खुफिया जानकारी के आधार पर नक्सली कमांडरों को टारगेट कर रही है और उनके खिलाफ अभियान चला रही है. पुलिस ने नक्सली कमांडरों से जुड़ी हुई एक-एक जानकारी इकट्ठा की है. इसके साथ ही नक्सलियों के समर्थकों की सूची भी तैयार की है.

तमाड़ में डायरिया का प्रकोप! 2 महिलाओं की मौत, 3 को किया गया रिम्स रेफर

संवाददाता द्वारा

खूंटीः राजधानी से सटे तमाड़ प्रखंड क्षेत्र के जारगो गांव में डायरिया से दो बुजुर्ग महिलाओं की मौत की बात कही जा रही है. जबकि तीन लोगों को इलाज के लिए रिम्स रेफर किया गया है. बताया जा रहा है कि जारगो पंचायत के डोमोडीह और गांगू गांव पिछले कई सप्ताह से डायरिया से ग्रसित है. हालांकि बीडीओ ने डायरिया से मौत होने की बात से इनकार किया है.

ग्रामीणों की सूचना पर मेडिकल टीम लगातार गांव में कैंप कर लोगों का इलाज कर रही है. 69 वर्षीय कमला देवी और 60 वर्षीय भदरी देवी की मौत हुई है. जबकि डायरिया के लक्षणों से ग्रसित पानीश्वरी देवी, विश्वनाथ महतो और रेखा देवी को गंभीरावस्था में रिम्स भेजा गया है, जहां तीनों का इलाज चल रहा है.

बुंडू क्षेत्र के आजसू नेता राजकिशोर कुशवाहा ने बताया कि लगातार बारिश के कारण कुंए और तालाबों का पानी दूषित हो गया है. ग्रामीणों का कहना है कि बिना किसी पूर्व चेतावनी के लोग वही पानी पीते रहे हैं, जिससे अचानक बीमारियों का प्रसार हुआ. हालांकि सूचना पर बुंडू प्रशासन ने गांव में स्वास्थ्य जांच शिविर लगाया है और पानी का सैंपल लेकर जांच के लिए भेजे गए हैं. बीडीओ के नेतृत्व में मेडिकल टीम भी मौके पर मौजूद है. ग्रसित लोगों का इलाज कर उनका सैंपल लिया गया है, ताकि बीमारी के कारण का पता चल सके.

इधर, बुंडू बीडीओ सावित्री कुमारी ने डायरिया से मौत होने से इंकार किया है. उन्होंने बताया कि जिन दो महिलाओं की मौत हुई है, दोनों पूर्व से बीमार थीं और उसी बीमारी के कारण उनकी मौत हुई है. हालांकि उन्होंने बताया कि तीन अन्य महिलाओं में डायरिया के लक्षण पाए गए, जिन्हें इलाज के लिए रिम्स रेफर किया गया है.

बीडीओ का कहना है कि गांव में वे खुद मेडिकल टीम के साथ जाकर क्षेत्र का निरीक्षण की हैं. मंगलवार को विशेष मेडिकल शिविर लगाया जाएगा और गांव के ग्रामीणों की जांच की जाएगी. इस बीच स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने पेयजल स्रोतों की तत्काल सफाई करने, गांव में क्लोरीन की गोलियां, ओआरएस और अन्य जरूरी दवाइयां वितरित करने तथा स्थायी जल शुद्धिकरण व्यवस्था लागू करने की मांग की है.

इलेक्शन फंड का पैसा नहीं किया खर्च, खरीदी लग्जरी गाड़ी: सीता सोरेन के पूर्व निजी सहायक

राजनीतिक संवाददाता द्वारा

रांची। पिछले वर्ष संपन्न हुए विधानसभा चुनाव में जामताड़ा से भाजपा की प्रत्याशी सीता सोरेन को 25 लाख रुपये बतौर इलेक्शन फंड भाजपा से मिले थे। उन्होंने इसका उपयोग चुनाव के दौरान नहीं किया। इस पैसे से उन्होंने एक लग्जरी गाड़ी खरीदी। यह दावा उनके पूर्व निजी सहायक रहे देवाशीष मनोरंजन घोष ने किया है। देवाशीष के विरुद्ध सीता सोरेन ने बीते छह मार्च को धनबाद में हमले का आरोप लगाया था। देवाशीष के मुताबिक चुनाव में कई कारणों से उनकी हार हुई, लेकिन वह गलत तरीके से आरोप लगाकर उसे और परिजनों को लगातार परेशान कर रही हैं।

बीते एक जून को सीता सोरेन ने दुमका में भी उनके विरुद्ध एक नया केस दायर किया है। इसके बाद देवाशीष सारे दस्तावेज के साथ सामने आकर सीता सोरेन से दो-दो हाथ करने के मूड में हैं। देवाशीष के मुताबिक बैंक से लेनदेन का सारा दस्तावेज उनके पास है।

सीता सोरेन के पास उनके ही लगभग आठ लाख रुपये उधार हैं, जिसमें दो लाख से अधिक का उधार गाड़ी के मद में है। इसके अलावा सीता सोरेन ने उनके वेतन-भत्ता मद का छह लाख रुपये से ज्यादा नहीं दिया है। देवाशीष से इस संदर्भ में राज्य के गृह सचिव से भी गुहार लगाई है।उधर देवाशीष के आरोपों के आरोपों के संदर्भ में सीता सोरेन से प्रतिक्रिया लेने की कोशिश की गई तो कोई जवाब नहीं मिल पाया।

देवाशीष ने कहा कि उनके पास सीता सोरेन द्वारा लगाए जा रहे आरोपों का जवाब देने के लिए सारे दस्तावेज और साक्ष्य उपलब्ध हैं। विधानसभा चुनाव के दौरान भाजपा प्रदेश कार्यालय द्वारा 25 व्यक्तियों की चुनाव समिति के कार्य को देखने की जिम्मेदारी उनकी थी। उसे पूरी निष्ठा से निभाया, लेकिन चुनाव हारने के बाद मनगढ़ंत आरोप लगाए जा रहे हैं।

धनबाद में 15 लोगों ने उनके साथ मारपीट की और गाड़ी, जमीन का दस्तावेज, पिन कोड के साथ एटीम कार्ड ले लिया गया। उससे विवेक सिंह की बहन खुशबू कुमारी के खाते में तीन लाख से अधिक ट्रांसफर हुए। इस केस में साक्ष्य रहने के कारण अदालत से जमानत मिली।

झारखंड में लोकायुक्त का पद पांच वर्ष से खाली, धूल फांक रहे हजारों आवेदन!

बिशेष प्रतिनिधि द्वारा

रांचीः झारखंड सरकार भ्रष्टाचार को लेकर भले ही जीरो टॉलरेंस की बात कह रही हो मगर हकीकत यह है कि लोकायुक्त जैसे महत्वपूर्ण पद पांच वर्षों से खाली है. लोकायुक्त सरकारी विभागों में फैले भ्रष्टाचार की शिकायतों की सुनवाई कर उस पर कार्रवाई करने की अनुशंसा करते हैं.

बता दें कि राज्य के लोकायुक्त रहे जस्टिस डीएन उपाध्याय का कार्यकाल फरवरी 2022 तक था. लेकिन कोरोना संक्रमित होने के बाद उनकी असामयिक निधन 29 जून 2021 को दिल्ली एम्स में हो गया था. उनके असामयिक निधन के बाद से झारखंड में लोकायुक्त का पद खाली है. लोकायुक्त कार्यालय में करीब तीन हजार आवेदन धूल फांक रहे हैं. इन आवेदनों पर लोकायुक्त के नहीं होने की वजह से सुनवाई नहीं हो पा रहा है.

लंबित केसों की सुनवाई के लिए पारंपरिक रुप से पहले सचिव स्तर से तिथि निर्धारित की जाती थी मगर फरवरी 2022 से कार्मिक विभाग ने चिट्ठी भेजकर इसे भी समाप्त कर दिया. जाहिर तौर पर कार्यालय में लंबित केसों की फाइलें उस समय से यूं ही पड़ा हुआ है.

लोकायुक्त कार्यालय में सचिव का भी पद खाली है और दैनिक कामकाज संयुक्त सचिव के भरोसे किसी तरह चल रहा है.

लोकायुक्त को लेकर जहां झारखंड हाई कोर्ट में सुनवाई चल रही है और सरकार ने जल्द नियुक्ति होने का भरोसा न्यायालय को दिया है. इन सब के बीच लोकायुक्त की नियुक्ति को लेकर सियासत तेज हो गई है भारतीय जनता पार्टी का मानना है कि राज्य सरकार न्यायालय से भी झूठ बोल रही है. कल तक नेता प्रतिपक्ष नहीं होने का बहाना बनाया जा रहा था अब तो नेता प्रतिपक्ष के भी बने हुए कई महीने हो गए हैं ऐसे में सरकार आखिर क्यों देरी कर रही है यह समझ से पड़े हैं.

भाजपा प्रवक्ता राफिया नाज ने सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि जिस जनता ने इस सरकार के प्रति विश्वास जताते हुए सत्ता में लाने का काम किया उसी जनता के साथ सरकार धोखा देने का काम कर रही है. लोकायुक्त जैसे महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्ति न होना सरकार की उदासीनता नहीं तो और क्या है. इधर विपक्ष के हमले पर संयमित रुख अपनाते हुए सत्तारूढ़ झारखंड मुक्ति मोर्चा ने लोकायुक्त नियुक्ति के लिए प्रक्रिया शुरू होने का दावा किया है. झामुमो प्रवक्ता मनोज पांडे ने कहा है कि राज्य में जल्द ही लोकायुक्त की नियुक्ति होगी सरकार ने इस दिशा में प्रक्रिया शुरू कर दी है.

लोकायुक्त की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा किया जाता है, लोकायुक्त की नियुक्ति के लिए मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में एक समिति बनती है. जिसमें उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश और विधानसभा में विपक्ष के नेता होते हैं. समिति की अनुशंसा पर नामित व्यक्ति को राज्यपाल या उनके द्वारा अधिकृत व्यक्ति के द्वारा पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई जाती है. लोकायुक्त का कार्यकाल 5 वर्ष या 70 वर्ष की आयु तक होता है या जो भी पहले हो. बहरहाल लोकायुक्त विहीन सरकार का यह आलिशान कार्यालय सह्लना है जहां गतिविधि के नाम पर सिर्फ और सिर्फ कर्मचारियों का रुटीन वर्क है.

रिम्स टू के मुद्दे पर गठबंधन के नेता खेल रहे फिक्स्ड मैचः प्रतुल

राजनीतिक संवाददाता द्वारा

रांचीः भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रतुल शाहदेव ने कहा कि रिम्स टू के मुद्दे पर गठबंधन के नेता फिक्स्ड मैच खेल रहे हैं. रिम्स टू के भूमि अधिग्रहण मुद्दे पर सरकार अपने सहयोगी दल कांग्रेस के दो अग्रणी नेताओं से विरोधाभासी बयान दिलवाकर जनता को गुमराह करने की कोशिश कर रही है. यह पूरे तरीके से फिक्स्ड मैच है.

प्रतुल ने कहा कि प्रतिपक्ष के नेता बाबूलाल मरांडी ने नगड़ी में रिम्स टू बनाने के खिलाफ आंदोलन की शुरुआत की तो सरकार आदिवासियों के आक्रोश के कारण बैकफुट पर आ गयी. बुरे तरीके से फंसी सरकार अब कांग्रेस के दो अग्रणी नेताओं से विरोधाभाषी बयान दिलवाकर कन्फ्यूजन पैदा करने की कोशिश कर रही है.

प्रतुल ने कहा कि किसी भी सूरत में आदिवासियों की कृषि भूमि पर रिम्स टू का निर्माण नहीं होगा. राज्य सरकार लाठी के बल पर अगर वहां से आदिवासियों को बेदखल करने की कोशिश करेगी तो भाजपा इसका कड़ा प्रतिकार करेगी. भाजपा इस बात के लिए संकल्पित है कि आदिवासियों की खेती योग्य जमीन पर रिम्स टू का निर्माण नहीं होगा.

ईरान-इजरायल युद्ध में अमेरिका के कूदने से भारत पर क्या असर पड़ेगा

भारत एक मुश्किल स्थिति में फंस गया है। उसके इजराइल के साथ बेहद अच्छे संबंध हैं। दोनों देशों के बीच रक्षा, खुफिया जानकारी और तकनीक का आदान-प्रदान होता है। वहीं, ईरान भारत के लिए एक महत्वपूर्ण आर्थिक और सांस्कृतिक भागीदार है। ईरान भारत को ऊर्जा (पेट्रोलियम और गैस) देता है। साथ ही, चाबहार बंदरगाह भारत के लिए मध्य एशिया और अफगानिस्तान तक पहुंचने का एक महत्वपूर्ण रास्ता है। इसमें भारत ने बहुत बड़ा निवेश भी कर रखा है। भारत हमेशा से पश्चिम एशिया को लेकर सतर्क रहा है। उसने 'मल्टी-एलाइनमेंट' की नीति का पालन किया है। इसका मतलब है कि उसने इजराइल, ईरान, खाड़ी देशों और अमेरिका जैसे परस्पर प्रतिद्वंद्वी देशों के साथ संबंध बनाए रखे हैं। लेकिन अमेरिका के इस संघर्ष में शामिल होने से भारत को अपनी नीति पर फिर से विचार करना पड़ सकता है।

अंजन कुमार

नई दिल्ली : अमेरिका की ओर से ईरान के परमाणु ठिकानों पर बमबारी करने से पश्चिम एशिया में तनाव अप्रत्याशित रूप से बढ़ गया है। इस क्षेत्र में पहले से ही अस्थिरता रही है। अब अमेरिका के युद्ध में शामिल होने से स्थिति और जटिल हो गई है। भारत के लिए यह सिर्फ एक दूर का संघर्ष नहीं है। भारत के इजराइल और ईरान दोनों के साथ गहरे संबंध हैं। इसलिए यह मामला भारत के लिए रणनीतिक, कूटनीतिक, आर्थिक और मानवीय हितों से जुड़ा है। भारत चाहकर भी इस संघर्ष से पूरी तरह से मुंह नहीं मोड़ सकता और न ही इजरायल या ईरान इस कठिन समय में भारत से ही उम्मीद छोड़ने की स्थिति में हैं। इजरायल के और करीब आ गया अमेरिका "अमेरिका और इजराइल अब और भी करीब आ गए हैं। अमेरिका पहले इजराइल को खुफिया जानकारी और मिसाइल सुरक्षा प्रणाली से मदद करता था। लेकिन, अब उसने ईरान के परमाणु ठिकानों पर हमला करने के लिए बी-2 बमवर्षक विमानों का इस्तेमाल किया है। इससे पता चलता है कि अमेरिका सीधे तौर इजरायल को सैन्य मदद देने के लिए तैयार है। इजराइल लंबे समय से ईरान के परमाणु हथियारों के बारे में चिंतित था। लेकिन उसके पास फोडी तक पहुंचने की ताकत नहीं थी। फोडी एक पहाड़ के 300 फीट नीचे स्थित है। अमेरिका के हमले ने इजराइल को वह मौका दे दिया है, जो वह सालों से चाहता था।

पश्चिम एशिया क्षेत्र में मुश्किल में फंसा भारत : सरसरी तौर पर देखें तो भारत एक मुश्किल स्थिति में फंस गया है। उसके इजराइल के साथ बेहद अच्छे संबंध हैं। दोनों देशों के बीच रक्षा, खुफिया जानकारी और तकनीक का आदान-प्रदान होता है। वहीं, ईरान भारत के लिए एक महत्वपूर्ण आर्थिक और सांस्कृतिक भागीदार है। ईरान भारत को ऊर्जा (पेट्रोलियम और गैस) देता है। साथ ही, चाबहार बंदरगाह भारत के लिए मध्य एशिया और अफगानिस्तान तक पहुंचने का एक महत्वपूर्ण रास्ता है। इसमें भारत ने बहुत बड़ा निवेश भी कर रखा है। भारत हमेशा से पश्चिम एशिया को लेकर सतर्क रहा है। उसने 'मल्टी-एलाइनमेंट' की नीति का पालन किया है। इसका मतलब है कि उसने इजराइल, ईरान, खाड़ी देशों और अमेरिका जैसे परस्पर प्रतिद्वंद्वी देशों के साथ संबंध बनाए रखे हैं। लेकिन अमेरिका के इस संघर्ष में शामिल होने से भारत को अपनी नीति पर फिर से विचार करना पड़ सकता है। ईरान एतिहासिक तौर पर सबसे अधिक कमजोरःदूसरी तरफ अमेरिका के लड़ाई में उतरते ही ईरान बहुत कमजोर हो गया है। एक हफ्ते में ही उसके सैकड़ों लोग मारे गए हैं और उसके परमाणु ठिकानों पर हमला हुआ है। 1979 की इस्लामी क्रांति के बाद से ईरान इतना कमजोर कभी नहीं हुआ था। उसके क्षेत्रीय सहयोगियों - हमास, हिजबुल्लाह और हूती को भी इजराइली हवाई हमलों से भारी नुकसान हुआ है। यहां तक कि ईरान के सुप्रीम लीडर खामेनेई की पकड़ भी कमजोर होती दिख रही है।

पाकिस्तान को अलग-थलग करने का बेहतर मौका : इस परिस्थिति से भारत अच्छा मौका भी निकाल सकता है। भारत ने हमेशा तटस्थ रहकर काम किया है। रूस-यूक्रेन युद्ध में भी उसकी यह रणनीति कारगर साबित हो चुकी है। ईरान के साथ भारत के पुराने संबंध हैं। यह भी एक अच्छी बात है कि भारत ने

किसी भी पक्ष को सीधे तौर पर सैन्य मदद नहीं दी है। लेकिन, पाकिस्तान ऐसा नहीं कर पाया है। खबरों के मुताबिक, पाकिस्तान ने अमेरिका को अपने क्वेटा एयरबेस का इस्तेमाल करने दिया। इन परिस्थितियों में मौजूदा जियोपॉलिटिक्स में भारत को कम से कम खाड़ी के देशों में पाकिस्तान के खिलाफ ज्यादा से ज्यादा मुल्कों को गोलबंद करने का मौका मिल सकता है।

भारत के सामने आ सकता है तेल और गैस का संकट : इस अंतरराष्ट्रीय संकट से भारत को खतरा भी है। खाड़ी और मध्य पूर्व में भारत के 80 लाख से ज्यादा नागरिक रहते हैं। उनकी सुरक्षा सबसे जरूरी है। भारत पहले ही ईरान से 1,400 से ज्यादा छात्रों को निकाल चुका है। उसे इजराइल से भी ऐसा करना पड़ रहा है। दूसरी तरफ भारत की ऊर्जा सुरक्षा भी खतरे में है। भारत अपनी जरूरत का लगभग 60% कच्चा तेल इसी क्षेत्र से आयात करता है। यही स्थिति गैस के साथ भी है। अगर स्थिति और बिगड़ती है, खासकर अगर ईरान होर्मुज जलडमरूमध्य बंद होने से तेल की आपूर्ति बाधित हो सकती है। इससे कीमतें बढ़ सकती हैं और भारत में महंगाई आ सकती है। इस क्षेत्र में अस्थिरता से भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा भी खतरे में पड़ सकता है। यह एक महत्वपूर्ण परियोजना है, जो चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव का मुकाबला करने के लिए जरूरी है।

अमेरिका की वजह से पाकिस्तान को लगा झटका : अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की पाकिस्तान के जनरल असीम मुनीर से नजदीकी से दिल्ली में चिंता थी। लेकिन ट्रंप की भारत से दूरी ने नई दिल्ली को अभी ईरान विरोधी कार्रवाई में दिखने से बचा लिया। ट्रंप प्रशासन ने पाकिस्तान पर ईरान के खिलाफ मदद करने का दबाव डाला, लेकिन भारत इस संघर्ष में शामिल होने से बच गया। उसने अपनी रणनीति को लचीला बनाए रखा। वहीं पाकिस्तान ने अमेरिका की मदद करके गलती की है। खबरें हैं कि पाकिस्तान ने बलूचिस्तान से अमेरिकी विमानों को ईंधन भरने की इजाजत दी। इससे उसकी तटस्थता पर सवाल उठ रहे हैं और यह पता चल रहा है कि वह बड़ी भू-राजनीतिक चालों में एक मोहरा भर है। इन हालातों में भारत को सैन्य रूप से तटस्थ रहना चाहिए, लेकिन राजनयिक रूप से उसे अमेरिका, ईरान, इजराइल और खाड़ी देशों सहित सभी पक्षों से बात करनी चाहिए। उसे अपने नागरिकों, ऊर्जा मार्गों और क्षेत्रीय प्रभाव की रक्षा करनी की दिशा में हर संभव कोशिश करनी होगी। ईरान कमजोर हो गया है और क्षेत्र में अस्थिरता है। ऐसे में भारत की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है। भारत एक स्थिर शक्ति है और उसके सभी पक्षों के साथ अच्छे संबंध हैं। ऐसे समय में जब वैश्विक गठबंधन तेजी से बदल रहे हैं, भारत की ताकत रणनीतिक संयम और समझदारी भरी कूटनीति दिखाने में है।

यूपी: 2027 के विधानसभा चुनाव के लिए बसपा ने बदली रणनीति

अशोक मिश्र

लखनऊ : डेढ़ साल बाद होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए बहुजन समाज पार्टी गांव-गांव जाकर अपना जनाधार बढ़ा रही है। पार्टी की करीब 1600 टीमें गांवों में पोलिंग बूथ और सेक्टर कमेटियां बनाकर लोगों को जोड़ रही हैं। पार्टी का कहना है कि पदाधिकारी भी नामित किए जा रहे हैं, जो लोगों को बसपा की नीतियों और विपक्ष की साजिशों से अवगत करा रहे हैं। बता दें कि पार्टी अध्यक्ष मायावती के निर्देश पर भाईचारा कमेटी और ओबीसी कमेटी लगातार काम कर रही हैं। पार्टी नेताओं का मानना है कि जिस तरह वर्ष 2007 में भाईचारा कमेटियों के जरिये समाज के सभी वर्गों के लोगों का गठबंधन स्थापित करते हुए सरकार बनाई गई थी, उसी फॉर्मूले पर अगले विधानसभा चुनाव की तैयारी करनी है। इसके तहत गांव-गांव जाकर कमेटियों का गठन करना पहली प्राथमिकता है। जिसके लिए हर विधानसभा क्षेत्र में चार टीमें बनाई जा चुकी हैं। पार्टी का मानना है कि बसपा नेताओं की नहीं, कार्यकर्ताओं की पार्टी है। चार बार रही बसपा सरकार में गुमनाम चेहरों को भी इसी तरह पार्टी ने सियासी पहचान दी थी। इसी वजह से पूरा फोकस विधानसभा स्तर पर बूथ कमेटियों, भाईचारा कमेटी और ओबीसी समाज को जोड़ने पर है। फिलहाल पार्टी तराई और अवध के इलाकों में फोकस कर तेजी से संगठन का विस्तार कर रही है। वहीं दूसरी ओर पार्टी के चीफ नेशनल कोऑर्डिनेटर आकाश आनंद बिहार चुनाव के बाद यूपी में भी सक्रिय हो सकते हैं। सूत्रों का कहना है फिलहाल बसपा सुप्रीमो के निर्देश पर आकाश आनंद बिहार चुनाव की तैयारियों में जुटे हैं। जिसके बाद उन्हें यूपी में भी सक्रिय किया जा सकता है। फिलहाल यूपी और उत्तराखंड के संगठन की समीक्षा और उससे जुड़े फैसले बसपा सुप्रीमो खुद ले रही हैं। बसपा नेताओं की नहीं, कार्यकर्ताओं की पार्टी है। समाज के सभी वर्गों के आपसी भाईचारे की बदौलत हमने सरकार भी बनाई है। बसपा सुप्रीमो के निर्देश पर गांव-गांव जाकर कार्यकर्ताओं के जरिये संगठन को मजबूत किया जा रहा है। बसपा ऐसी नर्सरी है, जो नेता बनाती है। पहले बड़ा मुकाम हासिल करने वाले नेता अपने बेटे-बेटियों के चक्कर में दूसरे दलों में चले गए थे।

पहलगाम आतंकी हमला: एनआईए ने बताया तीनों हमलावर पाकिस्तानी, लश्कर से जुड़े

ब्यूरो

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए भीषण आतंकी हमले की जांच में राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) को बड़ी सफलता मिली है। एनआईए ने पुष्टि की है कि इस हमले के तीनों हमलावर पाकिस्तानी नागरिक थे और वे प्रतिबंधित आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) से जुड़े थे। यह खुलासा दो स्थानीय लोगों की गिरफ्तारी के बाद हुआ, जिन्होंने हमलावरों को भोजन और शरण दी थी। 22 अप्रैल को पहलगाम के बैसारन घाटी में भारी हथियारों से लैस आतंकियों ने पर्यटकों पर अंधाधुंध गोलीबारी की थी, जिसमें 26 नागरिकों की मौत हो गई थी। इस हमले को 2008 के मुंबई हमलों के बाद देश में नागरिकों पर सबसे घातक आतंकी हमला माना जा रहा है। हमले के बाद जम्मू-कश्मीर पुलिस ने तीन संदिग्धों- पाकिस्तानी नागरिक हाशिम मूसा, अली भाई उर्फ तल्हा और स्थानीय कश्मीरी आदिल हुसैन ठोकर की स्केच जारी की थी। हालांकि, एनआईए की जांच में अब यह साफ हो गया है कि ये तीनों व्यक्ति हमलावर नहीं थे।

दो स्थानीय लोगों की गिरफ्तारी से मिला सुराग : एनआईए ने रविवार को दो स्थानीय लोगों- परवेज अहमद जोथर (बटकोट, पहलगाम) और बशीर अहमद जोथर (हिल पार्क, पहलगाम) को गिरफ्तार किया। जांच के दौरान इन दोनों ने खुलासा किया कि तीनों हमलावर पाकिस्तानी थे और लश्कर-ए-तैयबा के लिए काम कर रहे थे। एनआईए के प्रवक्ता के अनुसार, "परवेज और बशीर ने जानबूझकर तीन सशस्त्र आतंकियों को हमले से पहले हिल पार्क में एक मौसमी ढोक (झोपड़ी) में आश्रय दिया था। दोनों ने हमलावरों को भोजन और अन्य रसद सामग्री भी उपलब्ध कराई थी। जांच में यह भी पता चला कि हमलावर 20 अप्रैल की देर शाम इनके घर आए थे और उन्होंने भोजन पैक करने को कहा था। जाने से पहले उन्होंने दोनों को कुछ पैसे दिए और किसी को भी इस बारे में न बताने की धमकी दी। एनआईए ने गिरफ्तारियों से पहले 200 से अधिक लोगों, जिसमें पौनी ऑपरेटर, दुकानदार और फोटोग्राफर शामिल थे, से पूछताछ की थी।

सुलेमान शाह पर शक, पुराने हमलों से भी जुड़ाव : सूत्रों के अनुसार, हमलावरों में से एक की पहचान सुलेमान शाह के रूप में हुई है, जो पिछले साल 20 अक्टूबर को श्रीनगर-सोनमर्ग राजमार्ग पर जेड-मोर्ह सुरंग निर्माण कंपनी के सात कर्मचारियों की हत्या में शामिल था। एनआईए यह भी जांच कर रही है कि क्या सुलेमान का दक्षिण कश्मीर के कुलगाम जिले में अगस्त 2023 में तीन सैनिकों की हत्या और जम्मू के पुंछ जिले में मई 2024 में एक वायुसेना कर्मी की हत्या से कोई संबंध है। जांच के दौरान केंद्रीय एजेंसियों ने जुनैद रमजान भट्ट के फोन से बरामद तस्वीरों को दोनों गिरफ्तार स्थानीय लोगों को दिखाया। जुनैद, जो दिसंबर 2024 में जम्मू-कश्मीर पुलिस के साथ मुठभेड़ में मारा गया था, के फोन में चार आतंकियों की एक तस्वीर थी, जिसमें से तीन की पहचान हमले में शामिल लोगों के रूप में हुई।

पहले की धारणा में बदलाव : हमले के दो दिन बाद जम्मू-कश्मीर पुलिस ने जिन तीन लोगों के स्केच जारी किए थे, उन्हें शुरू में हमलावर माना गया था। हालांकि, एनआईए की जांच ने इस धारणा को गलत साबित कर दिया। अब यह स्पष्ट हो गया है कि हमले में शामिल तीनों आतंकी पाकिस्तानी थे और उनके नाम पहले जारी स्केचों से अलग हैं। एनआईए अब पिछले मामलों की भी समीक्षा कर रही है और बैलिस्टिक रिपोर्ट्स का मिलान कर रही है ताकि हमलावरों के खिलाफ मजबूत सबूत जुटाए जा सकें।

भारत-पाक तनाव और ऑपरेशन सिंदूर : इस हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव चरम पर पहुंच गया था। भारत ने 7 मई को 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पीओके) में आतंकी ठिकानों पर सटीक हवाई हमले किए, जिसमें नौ आतंकी शिविर नष्ट हुए और 100 से अधिक आतंकी मारे गए। इसके बाद पाकिस्तान ने नियंत्रण रेखा (एलओसी) और पंजाब व राजस्थान की अंतरराष्ट्रीय सीमा पर बार-बार संघर्षविराम का उल्लंघन किया।

आगे की जांच : एनआईए अब हमलावरों के डिजिटल फुटप्रिंट्स और कम्युनिकेशन नेटवर्क की जांच कर रही है। हमले के बाद शुरू में कुछ डिजिटल सुराग मिले थे, लेकिन आतंकियों के 'ऑफलाइन' होने के कारण जांच में चुनौतियां आ रही हैं। सुरक्षा एजेंसियां दक्षिण कश्मीर के जंगलों में तलाशी अभियान चला रही हैं। पहलगाम हमला जम्मू-कश्मीर में पर्यटन के लिए बड़ा झटका था। सरकार और सुरक्षा एजेंसियां अब इस तरह के हमलों को रोकने के लिए और सख्त कदम उठाने की योजना बना रही हैं। इस हमले ने इस सीजन में कश्मीर के पर्यटन को बहुत ज्यादा झटका दिया है। जम्मू कश्मीर सरकार, बॉलीवुड के एक्टर-एक्ट्रेसेज को अपील जारी करना पड़ी कि कश्मीर में अब हालात बेहतर है।

नीतीश कुमार की पार्टी में हो रहा 'खेला', 'अंतिम लड़ाई' लड़ रहा जेडीयू

रमाकांत चंदन

पटना : बिहार की सियासी गलियारों में इन दिनों नीतीश कुमार की पार्टी जेडीयू विशेष चर्चा में है। और वह भी नकारात्मक। बात विचित्र यह है कि जिसे देखो वह जेडीयू के टूटने या फिर किसी दल में विलय होने की भविष्यवाणी करने में लगा है। और एक बार तो खुद राज्य के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कुछ लोगों पर पार्टी के तोड़ने तक का आरोप लगा डाला था। आखिर जेडीयू के टूटने को लेकर या फिर पार्टी के अस्तित्व समाप्त होने को लेकर ही आशंका क्यों? आइये जानते हैं।

मुद्दे को फिर जीवित कर गए तेजस्वी : बिहार के पूर्व डिप्टी सीएम और नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने नीतीश के उत्तराधिकारी के सवाल पर कहा है कि पहले पार्टी रहेगी तब तो, पहले पार्टी बच जाए उसके बाद न उनके पुत्र निशांत कुमार की चर्चा उतराधिकारी के रूप में करेंगे। जेडीयू का एक धड़ा लंबे समय से निशांत कुमार को राजनीति में उतारने पर तुला है। लेकिन खुद नीतीश कुमार इसे रोक दे रहे हैं। वो परिवारवाद की राजनीति के खिलाफ हैं। और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने तो खुद ही कहा है कि जैसे शिवसेना और जेएमएम को तोड़ा जा रहा है, वैसे ही हमारी पार्टी को तोड़ा जा रहा था।

किस-किस पर लगा पार्टी तोड़ने का आरोप : जेडीयू को तोड़ने का आरोप वर्तमान केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह पर वर्ष 2022 में लगा था। तब ललन सिंह की नजदीकियां लालू यादव के परिवार के साथ बढ़ रही थी। चर्चा यह थी कि ललन सिंह कुछ विधायकों को तोड़कर तेजस्वी यादव को सीएम की कुर्सी पर बैठाना चाहते थे। इसी के बाज ललन सिंह को पार्टी के अध्यक्ष पद से हटाया गया और खुद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपनी पार्टी का कमान खुद संभाला और बाद में कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा को बनाया। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने तो मधुबनी की सभा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सामने ही इशारों ही इशारों में जेडीयू के एक नेता का नाम लिए बगैर कहा कि उनकी ही पार्टी के एक नेता ने कुछ गड़बड़ की, जिसकी वजह से बीजेपी के साथ गठबंधन टूट गया था और वे महागठबंधन में चले गए थे। अपने संबोधन के दौरान अपने पीछे बैठे पार्टी के एक नेता के तरफ उन्होंने इशारा करते हुए अपनी बातें कही थीं। नीतीश कुमार ने भले ही उसे नेता का नाम नहीं लिया लेकिन इतना जरूर कह दिया कि वह व्यक्ति उनके पार्टी का अध्यक्ष भी रहा है जिसके बाद अब अटकलें लगाई जा रही हैं कि क्या नीतीश कुमार का इशारा केंद्रीय मंत्री और अपने पार्टी के वरिष्ठ नेता ललन सिंह के तरफ था क्योंकि ललन सिंह ही पूर्व में जनता दल यूनाइटेड के राष्ट्रीय अध्यक्ष थे। आरसीपी पर भी लगा था आरोप"जेडीयू के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष आरसीपी सिंह पर तो मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने ही आरोप लगाया था। तब उन्होंने कहा कि आरसीपी को अध्यक्ष बना कर सम्मान दिया तो वे भाजपा से मिल कर गड़बड़ करने लगा तो हटा दिए। हालांकि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के इस बयान का जोरदार खंडन स्व. सुशील मोदी ने किया था। पूर्व डिप्टी सीएम सुशील कुमार मोदी ने जेडीयू के उस दावे को सरासर झूठ करार दिया है कि बीजेपी, जेडीयू को तोड़ने की कोशिश कर रही थी। सुशील मोदी ने जेडीयू के उस दावे को भी झूठा करार दिया है कि केंद्र की बीजेपी सरकार ने 2021 में आरसीपी सिंह को बिना नीतीश कुमार की सहमति को मंत्री बनाया था। वर्तमान में केंद्रीय मंत्री ललन सिंह ने तब कहा था कि वक्त आने पर बताएंगे कि पार्टी के अंदर कौन सी साजिश चल रही थी। उन्होंने इतना जरूर कहा कि चिराग पासवान की तरह जेडीयू के खिलाफ एक और साजिश चल रही थी। ललन सिंह ने ये भी कहा कि आरसीपी का तन जरूर जेडीयू में था, लेकिन मन कहीं और था। हालांकि उन्होंने खुल कर तो कुछ नहीं कहा लेकिन इशारा समझा जा सकता है। चिराग पासवान का नाम लेना, सीधे तौर पर बीजेपी की ओर इशारा था।

उम्र सबसे बड़ी बाधा : वरिष्ट पत्रकार ओम प्रकाश अश्क कहते हैं कि जदयू के टूटने या विलय को ले कर अक्सर सवाल उठते हैं तो उसकी वजह नीतीश कुमार का उम्र है। एक तरह से नीतीश कुमार की अंतिम पाली है। जेडीयू के भीतर कोई सेकंड लाइनर तैयार नहीं है जो सबको साथ लेकर चले। नीतीश कुमार ने आरसीपी सिंह और ललन सिंह को पार्टी की कमान सौंपी, पर दोनों पर ही पार्टी तोड़ने का आरोप लगा। दूसरी ओर जिस भूंजा पार्टी पर पार्टी को बर्बाद करने का आरोप लग रहा है वह आपस में एक हैं। या इनमें से किसी में सबको साथ लेकर चलने की क्षमता है क्या? जवाब 'ना' में आता है। इसलिए पार्टी को बचाने के लिए बार-बार निशांत कुमार का नाम आ रहा है। परिवार वाद के विरुद्ध रहे नीतीश कुमार अब निशांत को लेकर कितने पॉजिटिव हैं, यह तो आने वाला वक्त बताएगा।

हजारीबाग के लाल मनीष जायसवाल : एक साल का सांसद कार्यकाल-बेमिसाल

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। 24 जून 2024 का दिन हजारीबाग के इतिहास में एक स्वर्णिम अध्याय के रूप में दर्ज हो गया, जब हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के लाल सांसद मनीष जायसवाल की बुलंद आवाज पहली बार देश के सर्वोच्च सदन संसद भवन से गूँजी। यह वह दिन था जब एक ओर विश्व नेता के रूप में स्थापित हुए हिंदुस्तान के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तीसरी बार जनादेश प्राप्त कर मोदी सरकार 3.0 की की शुरुआत करते हुए खुद लोकसभा सदस्य के रूप में शपथ लिया वहीं मनीष जायसवाल ने 18वीं लोकसभा के सदस्य के रूप में शपथ लेते हुए अपने नाम के साथ अपने पिता का नाम जोड़कर मैं मनीष ब्रजकिशोर जायसवाल, ईश्वर की शपथ लेता हूँ... कहकर अपनी पितृ भक्ति का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया, जिसकी पूरे हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र में खूब सराहना हुई ।

पिता के अधूरे सपने को किया पूरा, जनता ने दिया ऐतिहासिक जनादेश

04 जून 2024 को लोकसभा चुनाव के परिणाम सामने आए, जिसमें हजारीबाग संसदीय क्षेत्र की जनता ने अपने चहेते जननेता और भाजपा प्रत्याशी मनीष जायसवाल को अपार जनादेश देकर सांसद चुना। हजारीबाग सदर विधानसभा क्षेत्र का दो बार प्रतिनिधित्व करने के बाद, पहली बार लोकसभा चुनाव लड़ रहे मनीष जायसवाल की जीत कई मायनों में बेहद खास थी। उनकी जीत की गूँज न केवल हजारीबाग, बल्कि पूरे देश में सुनाई दी, क्योंकि यह वह सीट है जहाँ से पूर्व में वित्त मंत्री, विदेश मंत्री, केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री और नागरिक उड्डयन राज्य मंत्री जैसे नेता रहे हैं।

मनीष जायसवाल ने अपने प्रतिद्वंद्वी प्रत्याशी को बुरी तरह हराकर अपने पिता ब्रजकिशोर जायसवाल के अधूरे सपने को पूरा किया, जिन्होंने पूर्व में सांसद का चुनाव लड़ा था। उनकी जीत हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र की जनता के बीच उम्मीद की एक नई किरण बनकर आई और पूरे क्षेत्र में जश्न का माहौल था ।

जनसेवा का संकल्प: सड़क से संसद तक जनता की बने मुखर आवाज

चुनाव जीतने के बाद, आहिस्ता चल जिंदगी, कुछ कर्ज चुकाने बाकी हैं, कुछ के दर्द मिटाने बाकी हैं, कुछ फर्ज निभाने बाकी हैं... के भाव को आत्मसात करते हुए सांसद मनीष जायसवाल ने हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र की जनता की वेदना को समझा और उनके अनुरूप फर्ज निभाने का दृढ़ संकल्प लिया। फिर क्या था, अनवरत जनसेवा और क्षेत्र के विकास के लिए सड़क से लेकर लोकतंत्र के सबसे बड़े सदन संसद तक, उन्होंने पूरी शिद्दत से जनमुद्दों को उठाया। महज एक साल के अपने कार्यकाल में उन्होंने खुद को तपाते हुए चिलचिलाती धूप, आंधी-तूफान, कड़ाके की ठंड और झमाझम बारिश के बावजूद सच्ची सेवा निष्ठा और समर्पण भाव से जरूरतमंदों की सेवा की।

एक साल में उपलब्धियों का लेखा-जोखा: जनसेवा, विकास और सशक्तिकरण

सांसद मनीष जायसवाल ने लोकसभा चुनाव 2024 में जीत दर्ज करने के तुरंत बाद ही बतौर सांसद आभार यात्रा निकाली, जो हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के कोडरमा जिले के चंदवारा से लेकर चतरा जिले के पिपरवार तक, कटकमसांडी से लेकर विष्णुगढ़ तक और चौपारण के चोरदाहा से लेकर रामगढ़ के बरलंगा तक, गोला से लेकर पतरातु तक - पाँचों विधानसभा क्षेत्रों के सभी प्रमुख स्थानों से होकर गुजरी। इस दौरान उन्होंने क्षेत्र के विभिन्न प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों पर पूजा-अर्चना कर अपनी ईश्वरीय आस्था का प्रदर्शन किया। शत- प्रतिशत उपस्थिति के साथ संसदीय भागीदारी सुनिश्चित की। 24 जून से लेकर 3 जुलाई तक चली 18वीं लोकसभा सत्र में उन्होंने अपने नाम के साथ अपने पिता ब्रजकिशोर जायसवाल के नाम का उल्लेख करते हुए शपथ ली। ओथ सत्र के अलावे दो बजट सत्र और एक शीतकालीन सत्र में शत-प्रतिशत उपस्थिति दर्ज कर उन्होंने अपने लोकसभा क्षेत्र और देश भर के विभिन्न मुद्दों को पुरजोर तरीके से उठाते हुए जनता की आवाज बनकर उभरे। इस दौरान क्षेत्र के हर वर्ग और ज्वलंत मुद्दों को उन्होंने बेबाकी से संसद के माध्यम से सरकार तक पहुंचाया । खेल को बढ़ावा देकर युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनकर उभरे। सांसद खेल महोत्सव- 2024 का बृहद पैमाने पर आयोजन कर उन्होंने लोकसभा क्षेत्र के हर एक प्रखंड में नमो फुटबॉल टूर्नामेंट का व्यापक विस्तार किया और खेल के क्षेत्र में ग्रामीण इलाकों में एक नई क्रांति लाई। नमो फुटबॉल टूर्नामेंट- 2025 की शुरुआत की तैयारी भी लगभग पूर्ण कर ली गई है और जुलाई महीने से ही इसका शुरुआत होने वाला है। हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र में लोकउत्सव का रूप धारण कर चुके यहां के रामभक्त श्रद्धालुओं के रोम- रोम में पुलकित होने वाले रामनवमी- 2025 के दौरान सांसद पारंपरिक अस्त्र- शस्त्र वितरण अभियान चलाकर हर अखाड़े तक तलवार और लाठी पहुंचाया ताकि रामनवमी के दौरान इस क्षेत्र में सदियों से चल रही अस्त्र-शस्त्र कला कौशल प्रदर्शन की परंपरा को अक्षुण्ण रखा जाए। हजारीबाग और रामगढ़ जिले के दिव्यांगों को सहायक यंत्र उपलब्ध कराने के लिए कैंप लगाया और फिर जरूरत के अनुरूप उन्हें सहायक यंत्र उपलब्ध कराया। क्षेत्र के कार्यरत विभिन्न कंपनियों के सीएसआर के तहत जनउपयोगी कार्य करने हेतु उन्हें निरंतर प्रेरित किया ।

संसद की तीन महत्वपूर्ण समितिय जिसमें प्राक्कलन समिति, फूड एंड कंज्यूमर अफेयर्स समिति और कोल एंड माइंस समिति में बतौर सदस्य उन्हें शामिल किया गया है। उन्होंने तीनों कमेटियों की सभी बैठकों में शत-प्रतिशत हिस्सा लिया है। जन-मुद्दों पर हमेशा मुखर रहते हुए केंद्र सरकार और राज्य सरकार के मंत्रियों और अधिकारियों से मिलकर उन्होंने अपने लोकसभा क्षेत्र की समस्याओं को उठाया और उनके निराकरण का पूर्ण प्रयास किया। झारखंड की विधि-व्यवस्था, भ्रष्टाचार, कुव्यवस्था और वर्तमान सरकार की तुष्टीकरण की नीति पर भी पुरजोर प्रहार करते हुए उन्होंने जनता के अनुरूप प्रखरता से आवाज बुलंद की। हाल ही में स्वास्थ्य विभाग में चिकित्सक और चिकित्साकर्मियों की मनमानी पर उनका जबरदस्त एक्शन, पुलिसिया जुल्म और बर्बरता के खिलाफ रामगढ़ के गोला और हजारीबाग के सदर थाना के बाहर घंटों के धरने के बाद पुलिस विभाग का बैकफुट पर आना, एवं हजारीबाग और रामगढ़ जिले में अघोषित बिजली कटौती और विभागीय रवैये के खिलाफ प्रचंड धरना प्रदर्शन के पश्चात बिजली की स्थिति में सुधार की कार्रवाई से उन्होंने स्पष्ट संदेश दिया है कि जनहित के मुद्दे को लेकर लोकतांत्रिक तरीके से विरोध का कोई भी कसर छोड़ेंगे नहीं। मीडिया और सोशल मीडिया के जरिए सदैव जनता से जुड़े रहें ।

निभाया सामाजिक उत्तरदायित्व, विधानसभा चुनाव में एनडीए को दिलाया प्रचण्ड

विधानसभा चुनाव- 2024 में पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ कार्य करते हुए उन्होंने हजारीबाग जिले और रामगढ़ जिले के सभी विधानसभा सीटों पर एनडीए समर्थित 6 में से 5 विधानसभा सीटों पर प्रचंड जीत दिलाई, जिससे करीब 25 साल बाद हजारीबाग में एनडीए का रिकॉर्ड वापसी हुआ। बीते दिल्ली विधानभा चुनाव में पार्टी द्वारा दो विधानसभा क्षेत्र के प्रभारी का दायित्व मिला उसे भी बखूबी निभाया। सांसद सामूहिक विवाह उत्सव- 2025 योजना के तहत सामाजिक दायित्व का निर्वहन करते हुए हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र की 101 जरूरतमंद बहन/बेटियों के अरमानों को पूरा करते हुए उन्होंने उनके सपनों को साकार किया और एक भाई बनकर पूरे शान-ओ-शौकत के साथ दैनिक जीवन में पारिवारिक और घरेलू जरूरी सामग्री देकर उनका कन्यादान कराया। पूरे लोकसभा क्षेत्र में हजारों बहनों को उनकी शादी से पूर्व लहंगा भेंटकर और उनसे सीधे बात करके उन्होंने एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। सांसद तीर्थदर्शन योजना की शुरुआत भविष्य में क्षेत्र के जरूरतमंद बुजुर्गों के सपनों को साकार करने के उद्देश्य से उन्होंने शुरू करने की घोषणा की है। इस योजना के तहत उत्तर प्रदेश के चार प्रमुख तीर्थस्थल - वाराणसी, प्रयागराज (संगम स्थल), विंध्याचल और अयोध्या दर्शन की यात्रा उन्हें कराई जाएगी। इसकी विधिवत शुरुआत सह प्रथम जत्थे की रवानगी आगामी 29 जून 2025 को हजारीबाग के प्रसिद्ध नृसिंह स्थान मंदिर प्रांगण से की जाएगी।

जनता के बीच सुलभ और सक्रिय सांसद

पहली बार हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र की जनता को यह एहसास हो रहा है कि उनका सांसद भी उनके बीच उनके सुख-दुःख में सहभागी बनकर सशरीर उपस्थित रहता है। पूरे लोकसभा क्षेत्र के हर सामाजिक, धार्मिक और व्यक्तिगत आयोजनों के निमंत्रण पर लोगों के बीच पहुँचकर अपनी सुलभता का सुखद एहसास सांसद मनीष जायसवाल ने लोगों को कराया है। सांसद सेवा केंद्र के माध्यम से 24×7 लोगों को जरूरत के मुताबिक स्वास्थ्य, बिजली, पानी, प्रशासनिक और पुलिस से संबंधित सेवा प्रदान की जाती है।

मनीष जायसवाल ने अपने एक साल के कार्यकाल में यह साबित कर दिया है कि वे केवल एक जनप्रतिनिधि नहीं, बल्कि हजारीबाग की जनता के सच्चे सेवक और सारथी हैं। उनका समर्पण और जनहित के प्रति उनकी निष्ठा हजारीबाग के विकास और जनता के कल्याण के लिए एक नई उम्मीद जगाती है।

प्रस्तुतिः-
रंजन चौधरी
सांसद मीडिया प्रतिनिधि,
हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र।

नई शिक्षा नीति भारत के स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों को साकार करेगा: कुलपति प्रो चंद्र भूषण शर्मा

- भारत फिर विश्व का पथ प्रदर्शक बनेगा, सोने की चिड़िया कहलाएगा
- विभावि के कुलपति ने नई शिक्षा नीति पर दिया व्याख्यान

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य है भारत की पुरानी प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित करना। भारत को फिर से सोने की चिड़िया बनाना। उक्त बातें विनोबा भावे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर चंद्र भूषण शर्मा ने कही। वह सोमवार को स्वामी विवेकानंद सभागार में नई शिक्षा नीति पर व्याख्यान दे रहे थे। यूसेट के डॉ अरुण कुमार मिश्रा ने सभी का स्वागत तथा कार्यक्रम का संचालन किया।

कुलपति ने बताया कि वह खुद नई शिक्षा नीति से पिछले 10 वर्षों से जुड़े हुए हैं। पहले 5 वर्ष इसके निर्माण के कार्य से और बाद के 5 वर्ष इसे लागू करने के कार्य मे। उन्होंने बताया कि जब इस शिक्षा नीति पर कार्य प्रारंभ किया गया तो यह सवाल पूछा गया कि जब भारत एक समय विश्व का पथ प्रदर्शक था तो 1947 के बाद ऐसा क्या हुआ कि हम इतना पीछे रह गए। प्रो चंद्रभूषण शर्मा ने बताया की तब तय किया गया की एक नई शिक्षा नीति लाई जाएगी जिसके माध्यम से भारत फिर से विश्व का पथ प्रदर्शक बनेगा। कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थियों को इस अति महत्वपूर्ण नई शिक्षा नीति 2020 की जानकारी होनी चाहिए। उन्होंने बताया कि इसके लिए वह नियमित रूप से इस विषय के बड़े-बड़े विद्वानों से व्याख्यान आयोजित करवाएंगे। इस तरह के व्याख्यान हजारीबाग व्याख्यान माला के नाम से जाना जाएगा।

कुलपति ने बताया कि यह स्वतंत्र भारत की तीसरी शिक्षा नीति है। दूसरी शिक्षा नीति 1986 में लाई गई थी। तीसरी के आने में 34 वर्षों का विलंब हुआ। उन्होंने बताया कि सभी विकसित देशों में आमतौर पर 20 वर्षों के बाद शिक्षा नीति लाई जाती है।

उन्होंने बताया कि यह शिक्षा नीति दरअसल शिक्षा पर भारत सरकार की दृष्टि है। यह भारत को महान राष्ट्र के रूप में पुनर्स्थापित करने में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार की नीति है।

कुलपति ने भारत का अपेक्षा अनुरूप विकास नहीं होने के पीछे का मूल कारण को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि भारत के स्वतंत्रता सेनानियों की जो स्वतंत्र भारत की दृष्टि थी उसे 1947 के बाद की शिक्षा नीति में सम्मिलित नहीं किया। नई शिक्षा नीति 2020 में इन बिंदुओं को शामिल किया गया है।

इस संबंध में कुछ उदाहरण देते हुए प्रो चंद्र भूषण शर्मा ने बताया कि अब भारत में प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जा रही है। लगभग 75 भारतीय भाषाओं में यह कार्य प्रारंभ हो चुका है। इससे क्षिजण में भी कमी दिख रही है।

एक और उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि इस शिक्षा नीति के माध्यम से सभी विद्यार्थियों को अवसर की समानता की गारंटी दी गई है। यह शिक्षा नीति एक साथ छात्र-केंद्रीक तथा शिक्षक-केंद्रीक है।

उच्च शिक्षा पर बात करते हुए उन्होंने बताया की एक विश्वविद्यालय के अंतर्गत कई महाविद्यालयों के संबद्धन की व्यवस्था को अब बदलने की बात कही गई है। सभी महाविद्यालय स्वायत्त इकाई होंगे।

उन्होंने बताया कि सरकारी विद्यालयों में जो शिक्षकों की कमी है उसका एक कारण है गलत पदस्थापन एवं स्थानांतरण नीति। शोध में पाया गया है कि कई महिला शिक्षिकाओं ने परिवार से दूर पदस्थापित किए जाने पर नौकरी छोड़ दी। नई शिक्षा नीति इस समस्या को भी सुधारा है।

प्रो चंद्र भूषण शर्मा ने विद्यालयों में 10 दिन बैग रहित शिक्षा, रुचि के अनुसार शिक्षा ग्रहण करना, उच्च शिक्षा में अपनी आवश्यकता के अनुसार विषयों का चयन करना जैसे कई क्रांतिकारी बिंदु की चर्चा की। उन्होंने इशारा किया कि अब तक की स्वतंत्र भारत की शिक्षा नीति पर मैकॉले की शिक्षा नीति का प्रभाव प्रतिबिंबित होता रहा। यह दुर्भाग्यपूर्ण है। नई शिक्षा नीति 2020 द्वारा निर्मित युवा नौकरी की तलाश नहीं करेगा बल्कि खुद रोजगार सृजन करेगा।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के पदाधिकारी, मुख्यालय में कार्यरत शिक्षक एवं शोधार्थी उपस्थित थे।

श्रीनिवास सर्वमंगलम सोसाइटी एवं मारवाड़ी युवा मंच द्वारा अग्रसेन भवन में निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का हुआ आयोजन

- बुनियादी उपचार जरूरतमंदों को निशुल्क उपलब्ध कराना एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाना मुख्य उद्देश्य है: डॉ प्रवीण श्रीनिवास

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। श्रीनिवास सर्वमंगलम सोसाइटी एवं मारवाड़ी युवा मंच के संयुक्त तत्वावधान में शहर स्थित अग्रसेन भवन में सोमवार को निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन हुआ। हजारीबाग कॉलेज ऑफ डेंटल साइसेंस एंड होस्पिटल, संत कोलम्बस मिशन होस्पिटल एवं श्रीनिवास डायग्नोस्टिक के संयुक्त रूप से मुफ्त स्वास्थ्य शिविर लगाया गया। मारवाड़ी युवा मंच के पदाधिकारियों एवं सदस्यों द्वारा श्रीनिवास सर्वमंगलम सोसाइटी के अध्यक्ष डॉ प्रवीण श्रीनिवास को स्मृति चिन्ह् भेंटकर स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। मुफ्त स्वास्थ्य शिविर में सामान्य स्वास्थ्य, दांत, नेत्र, सुगर, क्लोस्ट्रोल एवं रक्त का जांच जरूरतमंदों को मुफ्त प्रदान की गई। कई जरूरतमंद मरीजों ने निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का लाभ उठाया। 40 से अधिक लोगों का निशुल्क जांच हुई। मारवाड़ी युवा मंच के पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने शिविर के आयोजन में अपना सराहनीय योगदान दिया। मौके पर श्रीनिवास सर्वमंगलम सोसाइटी के अध्यक्ष डॉ प्रवीण श्रीनिवास ने कहा कि बुनियादी उपचार जरूरतमंदों को निशुल्क उपलब्ध कराना एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाना मुख्य उद्देश्य है। शिविर में डॉ शैली, दीपशिखा, शांति, हर्षिता एवं पीआरओ राज कुमार दास ने अपना योगदान दिया। मौके पर मारवाड़ी युवा मंच के पदाधिकारी एंव सदस्य कई संख्या में उपस्थित रहे।

हुरहुरु विद्यालय पुनः खोलने की पहल तेज

- मुन्ना सिंह ने किया विद्यालय का निरीक्षण, उपायुक्त से मिलकर छात्रों के भविष्य को लेकर रखी बात
- हमारी प्राथमिकता बच्चों का भविष्य है: मुन्ना सिंह

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। शिक्षा को ज़मीन पर मजबूत करने की दिशा में पूर्व सदर विधानसभा प्रत्याशी एवं कांग्रेस नगर प्रभारी मुन्ना सिंह ने एक महत्वपूर्ण पहल की है। सोमवार को उन्होंने नगर निगम क्षेत्र के हुरहुरु स्थित राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय का निरीक्षण किया और तत्पश्चात उपायुक्त हजारीबाग से मुलाकात कर विद्यालय को पुनः चालू करने की मांग रखी। निरीक्षण के दौरान उन्होंने विद्यालय परिसर की स्थिति देखी और स्थानीय अभिभावकों से संवाद कर बच्चों की समस्याओं को गंभीरता से सुना। उन्होंने बताया कि विद्यालय के बंद हो जाने के कारण अब छात्रों को कई किलोमीटर दूर पढ़ने जाना पड़ रहा है, जिससे गरीब तबके के बच्चों को शिक्षा तक पहुंचने में दिक्कतें आ रही हैं। मुन्ना ने उपायुक्त महोदय के समक्ष न केवल समस्या रखी, बल्कि संभावित समाधान भी प्रस्तुत किए। उन्होंने सुझाव दिया कि विद्यालय को पुनः चालू किया जाए या क्षेत्रीय बच्चों के लिए निःशुल्क परिवहन, अस्थायी शिक्षक व्यवस्था और शिक्षा की पहुंच को आसान बनाने के लिए ठोस उपाय किए जाएँ। जबकि उपायुक्त महोदय ने मामले को गंभीरता से लेते हुए उचित कार्रवाई का आश्वासन दिया। इससे अभिभावकों और स्थानीय समुदाय में आशा का संचार हुआ है कि बच्चों की शिक्षा बाधित नहीं होगी और उन्हें जल्द ही स्थानीय स्तर पर ही विद्यालय की सुविधा मिल सकेगी। सिंह ने इस दौरान कहा, हमारी प्राथमिकता बच्चों का भविष्य है। शिक्षा का अधिकार सिर्फ़ कानून नहीं, एक सामाजिक संकल्प होना चाहिए। उन्होंने यह भी जोड़ा कि यदि प्रशासन ठोस और सकारात्मक कदम उठाता है, तो यह पूरे क्षेत्र के लिए एक मिसाल बन सकता है।

हजारीबाग श्मशान काली मंदिर में अंबुबाची महोत्सव की भव्य तैयारी, 22 जून से शुरू हुआ विशेष साधना पर्व

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। हजारीबाग के ऐतिहासिक श्मशान काली मंदिर में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी अंबुबाची महोत्सव की तैयारियाँ पूरे धार्मिक उल्लास और भक्ति भाव से की जा रही हैं। मंदिर के पुजारी बिट्टू बाबा ने जानकारी देते हुए बताया की यह पाँच दिवसीय अनुष्ठान 22 जून से आरंभ होकर 26 जून तक चलेगा। इस अवसर पर हज़ारों श्रद्धालु और साधक माँ के दर्शनों और अनुष्ठानों में भाग लेने के लिए यहाँ पहुँचने की संभावना है।

अंबुबाची महोत्सव को माँ काली की तपस्या, सृजन और उर्जस्विता से जोड़ा जाता है। यह पर्व विशेष रूप से तांत्रिक परंपरा से जुड़ा हुआ है और झारखंड में इसे सबसे प्रमुख रूप से हजारीबाग के श्मशान काली मंदिर में मनाया जाता है। पुजारी बिट्टू बाबा ने बताया कि अंबुबाची के चार दिनों तक मंदिर के गर्भगृह में माँ की प्रतिमा को स्पर्श करना वर्जित रहता है, क्योंकि इसे देवी की प्रसूता अवस्था माना जाता है। इस अवधि में मंदिर में गहन साधना, मौन, ध्यान और भक्ति का वातावरण बना रहता है। पाँचवें दिन, अर्थात 26 जून को, माँ का विशेष शुद्धिकरण अनुष्ठान किया जाएगा और फिर महा प्रसाद का वितरण किया जाएगा। उसी दिन से मंदिर के पट भक्तों के लिए पुनः खुल जाएंगे। इस अवसर पर विशेष पूजा-अर्चना, भजन-कीर्तन, रात्रिकालीन साधना एवं तांत्रिक अनुष्ठानों का आयोजन किया जाएगा, जिसमें दूर-दराज़ से साधक और श्रद्धालु भाग लेंगे। मंदिर समिति द्वारा भक्तों के लिए समुचित व्यवस्था की गई है। मंदिर परिसर को भव्य रूप से सजाया गया है। साफ-सफाई, पेयजल, सुरक्षा व्यवस्था के साथ ही महिला श्रद्धालुओं के लिए विशेष सुविधाएँ सुनिश्चित की गई हैं। स्थानीय प्रशासन के सहयोग से सुरक्षा की कड़ी व्यवस्था की गई है तथा स्वयंसेवकों की टीम को तैनात किया गया है जो हर स्तर पर सहयोग के लिए तत्पर रहेंगे। पुजारी बिट्टू बाबा ने सभी श्रद्धालुओं से अपील की है कि वे इस महोत्सव में श्रद्धा, संयम और धार्मिक मर्यादा के साथ भाग लें। उन्होंने कहा कि माँ काली की यह भूमि साधना की दृष्टि से जाग्रत है, जहाँ भक्तों की प्रार्थनाएँ कभी निष्फल नहीं जातीं। इस महोत्सव के माध्यम से भक्तों को आत्मिक शांति, माँ की कृपा और साधना की शक्ति प्राप्त होती है। इसके लिए अध्यक्ष मनोज गुप्ता, सचिव राजेश गोप, चंद्रिका साव, मंदिर पुजारी बिट्टू बाबा सहित अन्य लोग लगे हुए है।

उपायुक्त के निर्देश पर हजारीबाग जिले के सभी प्रखंडों के पीडीएस दुकानों का औचक निरीक्षण, गड़बड़ी पर होगी कड़ी कार्रवाई

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। पीडीएस (जन वितरण प्रणाली) दुकानों में पारदर्शिता और सुचारु संचालन सुनिश्चित करने हेतु उपायुक्त श्री शशि प्रकाश सिंह के निर्देश पर हजारीबाग जिले के सभी प्रखंडों में व्यापक औचक निरीक्षण अभियान चलाया गया। इस अभियान में संबंधित प्रखंड के प्रखंड विकास पदाधिकारी (BDO) एवं अंचलाधिकारी (CO) की संयुक्त जांच टीम बनाकर जांच अभियान चलाया।

निरीक्षण के दौरान टीमों ने पीडीएस दुकानों पर खाद्यान्न के स्टॉक, वितरण पंजिका, लाभुकों को समय पर खाद्यान्न वितरण, दुकान की स्वच्छता,वजन मशीन की स्थिति एवं दुकानदार की उपस्थिति जैसे विभिन्न महत्वपूर्ण पहलुओं की गहनता से जांच की जिसकी जांच रिपोर्ट उपायुक्त को सौंपी जाएगी।

उपायुक्त ने स्पष्ट निर्देश दिया है कि यदि किसी भी पीडीएस डीलर द्वारा अनियमितता, कालाबाजारी या लाभुकों से अनुचित व्यवहार की शिकायत अथवा पुष्टि होती है, तो संबंधित व्यक्ति के विरुद्ध तत्काल विभागीय एवं विधिसम्मत कार्रवाई की जाएगी।

जिला स्तर पर विभिन्न प्रखंडों के लिए नामित वरीय पदाधिकारियों द्वारा झारखंड राज्य खाद्य निगम के गोदामों का भी निरीक्षण किया जा रहा है।

इस कार्रवाई का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि गरीब एवं जरूरतमंद लाभुकों को समय पर एवं सही मात्रा में सरकारी खाद्यान्न उपलब्ध हो, तथा वितरण व्यवस्था में किसी भी प्रकार की भ्रष्टाचार या लापरवाही को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

उपायुक्त ने कहा कि इस तरह की औचक जांच आगे भी नियमित रूप से जारी रहेगी, ताकि जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ वास्तविक पात्र लाभुकों तक निर्बाध रूप से पहुँच सके।

संक्षिप्त समाचार

बंधन बैंक तोपचांची शाखा द्वारा असहायों को नगद राशि सहित 20 महिलाओं को अन्य सामग्री दी गई

- तोपचांची जैसे सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में विधवाओं निसहाय लोगों को सामग्री देना काफी सराहनीय कार्य है: आनंद कुमार

गोमो। बंधन बैंक तोपचांची शाखा द्वारा सोमवार को विधवा निःसहाय विकलांग एवं अन्य महिलाओं को जीविकोपार्जन के लिए प्रशिक्षण के साथ रुची के अनुसार व्यवसाय करने का प्रोत्साहन के रूप में सामग्री दिया गया। जिसमें सभी महिलाओं को आठ आठ हजार रुपए 20 महिलाओं को सामग्री के साथ दिया गया। साथ ही मनिहारी के समान राशन और सिलाई मशीन भी दी गई। इसकी जानकारी देते हुए प्रखंड प्रमुख आनंद कुमार ने कहा कि बंधन बैंक के द्वारा किए गए कार्य काफी सराहनीय है। इससे महिलाएं आत्म निर्भर बनेगी। तोपचांची जैसे सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में विधवाओं एवं निसहाय लोगों को सामग्री देना काफी सराहनीय कार्य है। इसके लिए मैं बंधन बैंक के पदाधिकारियों को दिल से धन्यवाद देता हूं की बैंक इसी तरह से गरीब असहायों की मदद करते रहें।

ओपन शूटिंग चैंपियनशिप प्रतियोगिता में राजशेखर मंडल ने गोमो धनबाद का किया नाम रौशन

गोमो। तोपचांची प्रखंड अंतर्गत खेसमी पंचायत के राजशेखर मंडल ने रांची के खेलगांव में चार दिवसीय ओपन शूटिंग चैंपियनशिप प्रतियोगिता टेन एक्स 10X राइफल क्लब द्वारा खेलगांव रांची में आयोजित 50 मीटर फायर पिस्टल में सिल्वर मेडल प्राप्त कर गोमो सहित पूरे प्रखंड का नाम रौशन किया है। चार दिवसीय शूटिंग चैंपियनशिप प्रतियोगिता 19 जून से 22 जून 2025 तक चला। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में झारखंड स्टेट राइफल एसोसिएशन के प्रेसिडेंट दिवाकर सिंह, देवघर राइफल एसोसिएशन सेक्रेटरी वृद्धि सिंह, रांची डिस्ट्रिक्ट राइफल एसोसिएशन के प्रेसिडेंट विनय कुमार आदि मौजूद थे।

प्रधानमंत्री आवास योजना के लाभुकों का मुखिया व हल्का कर्मचारी ने किया निरीक्षण

बालूमाथ। बालूमाथ दिन सोमवार को बालूमाथ प्रखंड अंतर्गत बालूमाथ पंचायत में प्रधानमंत्री आवास योजना (PMAY) के अंतर्गत चयनित लाभुकों का डोर-टू-डोर सर्वे एवं निरीक्षण कार्य शुरू हुआ। पंचायत के मुखिया नरेश लोहरा एवं बालूमाथ हल्का कर्मचारी बीरेंद्र टोप्पो ने संयुक्त रूप से यह निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने लाभुकों के घर-घर जाकर आवास निर्माण की प्रगति,गुणवत्ता एवं योजनाओं के क्रियान्वयन की स्थिति का जायजा लिया। साथ ही पात्र लाभुकों से बातचीत कर उन्हें योजना की शेष किश्त जल्द उपलब्ध करवाने का भरोसा दिलाया। मौके पर शिवनाथ ठाकुर, अशफाक आलम,सोनू खान,मो0 अलीम सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे। ग्रामीणों ने भी अपने-अपने सुझाव और समस्याएं मुखिया के समक्ष रखीं,जिन पर शीघ्र कार्रवाई का आश्वासन दिया गया। मुखिया नरेश लोहरा ने बताया कि सरकार की मंशा है कि हर गरीब को पक्का मकान मिले और सभी योजनाओं का लाभ पारदर्शी तरीके से पहुंचे। इस दिशा में पंचायत स्तर पर नियमित निरीक्षण और निगरानी की जा रही है। ग्रामीणों ने निरीक्षण दल के इस पहल की सराहना की और कहा कि इससे योजनाओं के सही कार्यान्वयन में मदद मिलेगी।

आम उत्सव सह बागवानी मेला का आयोजन

संवाददाता-अंगद कुमार सिंह
चान्हो। प्रखंड परिसर में सोमवार को आम उत्सव सह बागवानी मेला का आयोजन किया गया. इसमें प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न आम बागवानी के लाभुकों ने दशहरी, मालदा, सिंदूरी, लंगड़ा, आम्रपाली सहित अन्य किस्मों के आमों की प्रदर्शनी लगायी. बागवानी मेला का शुभारंभ प्रखंड प्रमुख होलिका देवी, बीडीओ अरुण कुमार ने संयुक्त रूप से किया. बीडीओ पारितोष प्रियदर्शी ने कहा कि सरकार द्वारा संचालित मनरेगा योजनाओं में आम बागवानी का लाभ लाभुकों को दिया जा रहा है. योजना का उद्देश्य लाभुकों को आत्मनिर्भर बनाना है. प्रमुख होलिका देवी ने कहा कि आम बागवानी की सही देखभाल करने पर तीन वर्ष में अच्छी आमदनी का स्त्रोत बन जाता है. प्रदर्शनी में विभिन्न पंचायत के लाभुको के बागान में फले आमों का प्रजाति आकर्षण का केंद्र रहा. मौके पर बीपीओ गुंजन कुमार, सहायक अभियंता रोहित कुमार, कनीय अभियंता राजीव कुमार, विवेक कुमार, रोजगार सेवक सहित कई जनप्रतिनिधि मौजूद थे.

अंतर्राष्ट्रीय विधवा दिवस पर पवन-पूजा की शादी बनी मिसाल, विधवा विवाह को सामाजिक सम्मान दिलाने की पहल

- विधवा महिलाओं को सामाजिक रूप से जागरूक और सशक्त करने की दिशा में पहल ट्रस्ट है प्रयासरतः अविनाश देव

पलामू। पलामू जिला के पोलपोल निवासी पवन कुमार ने समाज के सामने एक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया है। अंतर्राष्ट्रीय विधवा दिवस (23 जून 2025) के अवसर पर आयोजित एक कार्यक्रम में पवन ने गढ़वा जिले के सोनेहारा गांव की रहने वाली विधवा पूजा देवी से विवाह कर सामाजिक सोच को नई दिशा दी है।
पूजा देवी के पति का निधन वर्ष 2020 में हो गया था। 2018 में विवाह और 2019 में मां बनने के बाद 2020 में पति के निधन ने उनके जीवन को पूरी तरह बदल दिया था, वहीं पवन कुमार अविवाहित हैं और एक माइक्रोफाइनेंस कंपनी में कार्यरत हैं। उन्होंने बीए तक की शिक्षा प्राप्त की है। इस विवाह से दोनों ने यह सिद्ध किया है कि सच्चे रिश्ते समाज की रूढ़ियों से ऊपर होते हैं। यह विवाह पलामू में पहल ट्रस्ट द्वारा आयोजित कार्यक्रम के दौरान संपन्न हुआ, जिसमें प्रशिक्षु आईएएस हिमांशु, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी नीता चौहान, संत मरियम विद्यालय के चेयरमैन, झारखंड सरकार के माटी कला बोर्ड के निवर्तमान सदस्य सह पहल ट्रस्ट के प्रतिनिधि अविनाश देव समेत कई गणमान्य लोग उपस्थित थे। जिला समाज कल्याण विभाग द्वारा विधवा विवाह पर दो लाख रुपये की प्रोत्साहन राशि भी दी जाती है। नीता चौहान ने बताया कि जिले में वर्ष 2025 के लिए पांच विधवा विवाह का लक्ष्य रखा गया है।
कार्यक्रम में उपस्थित कई विधवा महिलाओं ने अपने जीवन के संघर्ष साझा किए। चैनपुर प्रखंड के सेमरटांड़ की एक महिला ने कहा कि पति की मृत्यु के बाद समाज उन्हें दोषी ठहराता है, बेटों से वंचित कर देता है और चरित्र पर सवाल उठाता है। उनके पास केवल बेटियाँ हैं और कोई मदद के लिए आगे नहीं आता। संत मरियम विद्यालय के चेयरमैन सह झारखंड सरकार के माटी कला बोर्ड के निवर्तमान सदस्य अविनाश देव ने कहा कि ट्रस्ट विधवा महिलाओं को सामाजिक रूप से जागरूक और सशक्त करने की दिशा में पहल कर रहा है। उन्होंने कहा कि विधवा विवाह को सामाजिक स्वीकृति दिलाने के लिए ऐसे आयोजन अत्यंत आवश्यक हैं। जो भी व्यक्ति विधवा विवाह करना चाहता है, उसे सरकार की योजनाओं के तहत हरसंभव सहायता दी जाएगी।
पवन और पूजा की शादी न केवल एक वैवाहिक संबंध है, बल्कि यह समाज में गहरी पैठी कुरीतियों के खिलाफ उठाया गया एक साहसी कदम भी है, जो दूसरों को भी प्रेरित करेगा। इस मौके पर क्षेत्र की सैकड़ों विधवा महिलाओं को सम्मानित किया गया।

सेक्रेड हार्ट स्कूल में ओलंपिक दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

आदिवासी एक्सप्रेस
कोडरमा। झुमरी तिलैया स्थित सेक्रेड हार्ट स्कूल में अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक दिवस बड़े ही उत्साह और जोश के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन कर छात्रों को ओलंपिक मूल्यों, उत्कृष्टता और सम्मान से अवगत कराया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत कक्षा 5वीं से 9वीं तक के छात्रों के लिए निबंध लेखन प्रतियोगिता तथा कक्षा 3 से 8 तक के छात्रों के लिए पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता आयोजित की गई। वहीं कक्षा 10वीं के छात्रों में खुशी कुमारी और वैष्णवी शिवप्रिया ने ओलंपिक दिवस पर एक प्रेरणादायक भाषण प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने भारतीय ओलंपिक पदक विजेताओं की उपलब्धियों और उनके योगदान पर प्रकाश डाला। पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता (कनिष्ठ वर्गः कक्षा 3 से 8) के विजेताओ में प्रथम स्थान मानवी कुमारी, द्वितीय स्थान आकर्ष कुमार तथा तृतीय स्थान रूही झा वहीँ निबंध लेखन प्रतियोगिता (वरिष्ठ वर्गः कक्षा 9 से 12) में विजेताओ में प्रथम स्थान प्रीतम अवध्या, द्वितीय स्थान शुभम कुमार सिंह तथा तृतीय स्थान मंजीत कुमार एवं (मध्य वर्गः कक्षा 5 से 7) के निबंध लेखन प्रतियोगिता अंग्रेजी माध्यम में प्रथम स्थान प्रत्युषा शर्मा, द्वितीय स्थान अवंतिका तथा हिंदी माध्यम में प्रथम स्थान नितिका कुमारी, द्वितीय स्थान साक्षी रजक को विजेता घोषित किया गया।
इस अवसर पर प्राचार्य प्रमोद शर्मा ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि विश्व ओलंपिक दिवस केवल खेलों का उत्सव नहीं है, यह एकता, संकल्प और वैश्विक सौहार्द का प्रतीक है। मुझे गर्व है कि हमारे छात्र इस दिवस को पूरी निष्ठा और रचनात्मकता के साथ मना रहे हैं। हमें जीवन के हर क्षेत्र में ओलंपिक मूल्यों को अपनाने का संकल्प लेना चाहिए–चाहे वह शिक्षा हो, खेल हो या हमारा आचरण।
इन सभी कार्यक्रमों का आयोजन उप-प्राचार्य प्रवीन कुमार की देखरेख में हुआ। समन्वयक के रूप में शगुफ़्ता प्रवीण एवं अशुतोष गौतम तथा शिक्षक सतीश कुमार, अभिलाषा सिंह, मनोज पांडेय, कुंदन राणा, कुंतल जेटवा, अनुष्का शर्मा आदि की सक्रिय सहभागिता रही। यह आयोजन छात्रों के लिए न केवल प्रेरणादायक रहा, बल्कि उन्हें खेल और शारीरिक फिटनेस के महत्व को समझने और आत्मविकास की दिशा में प्रेरित करने का अवसर भी प्रदान किया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर साईं इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल में योग दिवस का किया गया आयोजन

आदिवासी एक्सप्रेस / संतोष कुमार दास
इटखोरी (चतरा)। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर साई इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल में योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घघाटन विद्यालय प्राचार्य आर.वी. प्रसाद ने किया।कार्यक्रम का संचालन विद्यालय के योग शिक्षक सोनू कुमार ने किया। इस कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं को कई प्रकार का योग प्रक्रियाओं को करवाते हुए उनके महत्व और लाभों को बताया। छात्र-छात्राओं ने योग शिक्षक के निर्देशन में योग करने में आनंद का अनुभव किया। वर्ष की थीम एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग है। कार्यक्रम के मौके पर विद्यालय के सभी शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित थीं।मौके पर विद्यालय के प्राचार्य आर.वी. प्रसाद ने कहा उत्सव दैनिक जीवन में योग के महत्व, इसके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य लाभों और ध्यान, भावनात्मक संतुलन और आंतरिक शांति को बढ़ावा देने में इसकी भूमिका पर कक्षा में चिंतन और चर्चाओं तक विस्तारित हुआ। विद्यालय परिवार के साथ-साथ छात्र-छात्राओं ने भी शपथ लिया कि हम अपने जीवन को निरोग रखने के लिए योग को अपनाएंगे साथ ही समाज के लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे।

प्रखंड स्तर पर आयुष स्वास्थ्य शिविर का आयोजन, लोगों की उमड़ी भीड़

बीपी और सुगर जांच कर मरीजों को दी गई दवाएं

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता
छतरपुर, पलामू। छतरपुर प्रखंड परिसर में जिला आयुष समिति द्वार दो दिवसीय प्रखंड स्तरीय स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों की भागीदारी देखने को मिली। शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि बीडीओ आशीष कुमार साहू, अनुमंडलीय चिकित्सा प्रभारी, आयुष ज़िला अधिकारी, अनुमंडलीय निगरानी समिति सदस्य अरविन्द गुप्ता चुनमून ने संयुक्त रूप से किया। बीडीओ ने कहा कि आयुष चिकित्सा पद्धति के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाना एक सराहनीय पहल है। इस प्रकार के शिविरों से आम जनता को बड़ी राहत मिलती है।अन्य अतिथियों ने भी शिविर को सम्बोधित किया। शिविर में मुख्य रूप से ऑस्टियोआर्थराइटिस एवं मस्कुलोस्केलेटल विकारों की जांच और होम्योपैथिक पद्धति से मुफ्त इलाज की सुविधा प्रदान की गई। बीससूत्री प्रखंड अध्यक्ष गोपाल प्रसाद सिंह ने कहा कि ÷गांवों में स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी के कारण इस तरह के शिविर अत्यंत लाभकारी हैं। हम चाहते हैं कि ऐसे शिविरों का आयोजन बार-बार हो।÷ अनुमंडलीय अस्पताल के चिकित्सा प्रभारी डॉ. राजेश अग्रवाल ने बताया कि शिविर में गठिया, जोड़ों का दर्द, कमरदर्द, घुटनों की समस्या जैसी बीमारियों की जांच कर मरीजों को दवा दी गई और जीवनशैली में बदलाव तथा नियमित योग के महत्व की जानकारी दी गई। जिला आयुष चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. रामनारायण कर्क ने बताया कि आयुष विभाग ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयासरत है। शिविर में अनुभवी डॉक्टरों की टीम ने मरीजों की जांच की और आवश्यक परामर्श दिया।

महिला ने भैसुर पर मार - पीट एवं गाली - गलौज का लगाई आरोप

आदिवासी एक्सप्रेस
सतगावां कोडरमा। सतगावां थाना क्षेत्र के ईटाय पंचायत अंतर्गत योगीडीह वेलाताड़ निवासी रीता देवी पति सरवन रविदास अपने भैसुर पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि सोमवार दिनांक 22 जून 2025 सुबह 8 बजे लगभग उन्होंने मेरे साथ मार - पीट एवं गंदी - गंदी गाली - गलौज किया है। गीता देवी के अनुसार उसके 5 वर्ष के बेटा को उठा कर जमीन पर पटक दिया उसी को लेकर कहा - सुनी हो रहा था इतने में भैसुर प्रदीप रविदास मारने लगा मेरे ब्लाउज फाड़ दिया एवं छाती पर चढ़ कर बुल गया इसके अलावा मारने वाले में उसकी पत्नी कालो देवी, बेटी आरती कुमारी, सोनाली कुमारी, चांदनी कुमारी एवं बेटा मनीष कुमार यह सभीलोग मिलकर मेरे माथा का बाल पकड़ कर पटक दिया और इंट से कान के पास मारकर घायल कर दिया मैं बेहोश हो गई थी। आसपास के लोगों ने मुझे होश में लाया एवं बचाया मेरा पति दूसरे राज्य में रह कर मजदूरी करते हैं , मैं मजदूरी करके अपने बच्चों को पालन पोषण करती हूं । भैसुर प्रदीप रविदास कई बार मेरे साथ मार - पीट किया है और कहता है कि तुम सभी परिवार को जान से मार देने का धमकी बराबर दिया करता है और कहता है कि कोई थाना- पुलिस कुछ नहीं कर पाएगा मेरा। जब भी लड़ाई झगड़ा करता है तो फरसा निकाल कर धुनता है इस कांड से मै और मेरे बच्चे बहुत डरे - सहमे हुए रहते है। कभी भी बड़ा कांड कर सकता है पीड़ित महिला थाना में आवेदन देकर इंसाफ की गुहार लगाई।

लंबे समय से फरार आरोपी के घर पुलिस ने की कुर्की-जब्ती

- दरवाजा, खाट, बर्तन सहित अन्य जरूरी सामान जब्त

आदिवासी एक्सप्रेस / संतोष कुमार दास
हंटरगंज (चतरा)। हत्या के आरोप में फरार एक आरोपित के घर हंटरगंज थाना की पुलिस द्वारा कुर्की-जब्ती की कार्रवाई की गई है। यह कार्रवाई थाना क्षेत्र के औरू पंचायत अन्तर्गत काशीकेवाल गांव निवासी फिरोज मियां का पुत्र मिस्टर मियां के घर में की गई। इस दौरान पुलिस बलों ने आरोपी के घर से दरवाजा, कुर्सी, खाट, बर्तन सहित अन्य ज़रूरी सामग्रियां जब्त कर थाना ले गई। जानकारी के अनुसार मिस्टर मियां पर केस नंबर 66/21 कांड संख्या 364A,302,201,120B मामले में नामजद आरोपी बनाया गया था जिसमें वह बीते तीन वर्षों से फरार चल रहे थे। मामले में आरोपित के विरुद्ध कोर्ट से कुर्की वारंट निर्गत किया गया जिसमें पुलिस ने यह कार्रवाई की हंटरगंज थाना सब इंस्पेक्टर दिलीप यादव ने बताया कि फरार अभियुक्त के घर काशीकेवल मकान में कुर्की की कार्रवाई की गई। इस दौरान कई जरुरी एवं अन्य सामग्रियों को जब्त किया गया है। सब इंस्पेक्टर ने बताया कि इसके बावजूद अभियुक्त ने आत्मसमर्पण नहीं किया तो ठोस कार्रवाई की जाएगी। मौके पर थाना प्रभारी प्रभात कुमार,प्रखण्ड विकास पदाधिकारी निखिल गौरव कमान कच्छप, आदि जिला बल के जवान शामिल थे।

13 वर्षों से फरार तीन लाल वारंटी गिरफ्तार

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता
छतरपुर, पलामू। पुलिस अधीक्षक पलामू के निर्देश पर जिले में फरार चल रहे वारंटियों की गिरफ्तारी के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में छतरपुर थाना क्षेत्र से 13 वर्षों से फरार तीन लाल वारंटियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है। गिरफ्तार किए गए आरोपियों में मुखदेव यादव के पुत्र सुदामा यादव, लालजीत यादव के पुत्र कैलाश यादव और जनेश्वर यादव शामिल हैं। तीनों का संबंध ग्राम मनहू,थाना छतरपुर, जिला पलामू से है। यह कार्रवाई छतरपुर पुलिस की छापामारी टीम द्वारा की गई। इसकी जानकारी छतरपुर थाना द्वारा प्रेस विज्ञप्ति जारी कर दिया गया।

कई बार नौडीहा ब्लॉक के चक्कर काटने के बावजूद भी नहीं मिला आबुआ आवास

- गरीब असहाय जरूरतमंद योग लाभकों को अब तक नहीं मिला आवास
- प्रखंड प्रमुख के निरीक्षण के क्रम में आवास योजना का हुआ बड़ा खुलासा

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता
नौडीहा बाजार, पलामू। जिले के नौडीहा बाजार प्रखंड के पंचायत चराई 2 अंतर्गत ग्राम कोरामि के, 56 वर्षीय लक्ष्मीनिया देवी पति शंभू राम टूटे-फूटे कचिया मकान एवं तालपत्री लगाकर रहने पर विवश है संभु राम उन्होंने कहा कि बरसात के मौसम में कब घर गिर जाएगा जिसका कोई गारंटी नहीं है संभु राम ने नौडीहा ब्लॉक के कई बार आबुआ आवास योजना के लाभ लेने के लिए लिखित आवेदन दिया लेकिन अब तक गरीब, असहाय, जरूरतमंद एवं योग्य लाभुक लक्ष्मीनिया देवी को आवास योजना का लाभ नहीं दिया गया। शंभू राम ने बताया कि स्थानीय जनप्रतिनिधि से लेकर कई बार ब्लॉक के चक्कर काट चुके हैं लेकिन कोई सुनने को तैयार नहीं है, संभु राम का चार लड़की है जिसमें दो लड़की का शादी कर चुके हैं यह मामला तब खुलशा हुआ जब नौडीहा प्रखंड प्रमुख रेशमी कुमारी ने क्षेत्र निरीक्षण के क्रम में आवास योजना के जाँच की तो पता चला की बड़े पैमाने पर गड़बड़ी का मामला सामने आया .. प्रखंड प्रमुख रेशमी कुमारी ने कहा कि गरीब, असहाय, जरूरतमंद योग्य लाभकों को अब तक आवास योजना का लाभ नहीं मिलना दुर्भाग्य की बात है केंद्र सरकार से लेकर राज्य सरकार तक गरीब आसहाय लोगों के हित में कई जरूरतमंद आवास योजना चलाई जा रही है लेकिन आज भी धरातल पर उतरा नहीं गया है इसे साफ दिखता है की कई लाभ से गरीब परिवार वंचित हैं प्रमुख रेशमी कुमारी ने परिजनों के आश्वासन देते हुए कहा कि मै कोशिश करूंगी बहुत जल्द आवास योजना दिलाने का काम करूंगी... इस सभी मामलों को लेकर जब टेलीफोन पर 11:04 बजे प्रखंड विकास पदाधिकारी से संपर्क करने का कोशिश की तो संपर्क नहीं हो पाया। तब नौडीहा-बाजार ब्लॉक आवास कोऑर्डिनेटर नीतीश कुमार खत्री से टेलीफोन पर संपर्क की तो उन्होंने बताया कि जिला के द्वारा नौडीहा बाजार ब्लॉक में SC कोटा से 175 तक आबुआ आवास टारगेट दिया गया था जो की लक्ष्मीनिया देवी पति शंभू राम को 311 रेंक पर आवास योजना में नाम है इसलिए लक्ष्मीनिया देवी की आबुआ आवास का लाभ नहीं मिल पाया है।

संक्षिप्त समाचार

जिला एवं लिट्टीपाड़ा प्रखंड में आयोजित आयुष जांच शिविर में 94 लोगों का स्वास्थ्य जांच किया गया

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़

पाकुड़। लिट्टीपाड़ा प्रखंड के गोंडा, पाकुड़िया प्रखंड के मोगलाबांध एवं महेशपुर प्रखंड के महेशपुर में आयुष विभाग की ओर से सोमवार को आयुष कैंप लगाकर कुल 94 लोगों का स्वास्थ्य जांच कर आवश्यक दवा दिया गया। डॉ प्रेम प्रकाश, डॉ संतोष कुमार यादव एवं डॉ राजेश यादव ने बताया की इस कैंप में आज रक्तचाप, मधुमेह, जॉइंट पेन, गठिया, बच्चों से संबंधित आदि रोगों का जांच निःशुल्क किया गया। साथ ही सभी को मुफ्त दवा भी दी गई। वहीं शिविर में आने वाले मरीजों को शुगर, ब्लड प्रेशर का भी जांच की गई।

मदरसा छात्रों के लिए एक दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यशाला का हुआ आयोजन

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़

पाकुड। धरती आबा जनभागीदारी अभियान अंतर्गत प्रोजेक्ट परख 2.0 के तत्वावधान में मदरसा छात्रों का एक दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यशाला का आयोजन रविन्द्र भवन टाउन हॉल में आयोजित किया गया। उपायुक्त मनीष कुमार ने कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा विद्यालयों में तभी संभव हो सकता है जब शिक्षक बच्चों के प्रति शिक्षा के दायित्व को अच्छी तरह समझें। शिक्षकों को अपने कार्य कौशल में बदलाव लाना होगा। एक शिक्षक तभी आदर्श शिक्षक बन सकते हैं जब वे शिक्षा के प्रति सतत अध्ययनशील रहते हों। उपायुक्त ने कार्यशाला में छात्रों को शिक्षा करियर और भविष्य के बारे में मार्गदर्शन किया। 18 वर्ष से नीचे कोई बच्ची का विवाह नहीं करें।उपायुक्त ने बच्चों को बाईक न चलाने हेतु प्रेरित किया। प्रत्येक माह 20 तारीख को तिथि भोज का आयोजन किया जाता है। अगले माह से 6 तारीख को स्पोर्ट डे के रूप में मनाया जाएगा। साथ ही उपायुक्त ने बच्चों को प्रेरणादायक वीडियो दिखाकर बच्चों का हौसला अफजाई किया।

उप विकास आयुक्त महेश कुमार संथालिया ने कहा कि उपायुक्त महोदय जिले को शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ाने को लेकर लगातार प्रयासरत हैं। शिक्षा ही एकमात्र ऐसा साधन है जो किसी भी व्यक्ति को सफल बना सकता है। इस तरह के कार्यशाला होने से शिक्षकों की ज्ञानवर्धन होगा और छात्रों के समग्र विकास होगा।

मौके पर जिला शिक्षा पदाधिकारी सुश्री अनीता पुरती, एपीओ, मदरसा के शिक्षक एवं छात्र- छात्राएं उपस्थित रहे।

जिला पंचायत राज पदाधिकारी प्रीतिलता मुर्मू की अध्यक्षता में सोमवार को पाकुड़िया प्रखंड सभागार में पंचायती राज विभाग के कार्यों की समीक्षा बैठक की

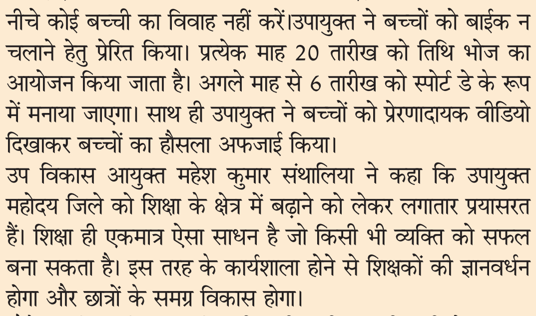

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़

पाकुड़- बैठक में जिला पंचायत राज पदाधिकारी ने धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान, नशा मुक्ति अभियान, 15वें वित्त आयोग अंतर्गत व्यय राशि, पंचायत सचिवालय सुदृढ़ीकरण योजना का उपयोगिता प्रमाण पत्र, आदर्श पंचायत सचिवालय, बायोमैट्रिक उपस्थिति, जलमीनार, चापाकल की मरम्मती, टैंकर क्रय एवं संचालन की स्थिति, विद्यालय, आगंबाड़ी केंद्रों में हैंडवाश यूनिट का निर्माण, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, क्रियाशील शौचालय की उपलब्धता, विद्यालय, आगंबाड़ी केंद्रों में वाटर फिल्टर का अधिष्ठापन, ज्ञान केंद्र का संचालन एवं रॉयल्टी डीएमएफटी लेबर सेस की समीक्षा कर पदाधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिया। बैठक में प्रखंड विकास पदाधिकारी सोमनाथ बनर्जी, प्रभारी प्रखंड पंचायत राज पदाधिकारी त्रिदीप शील, प्रखंड समन्वयक सायेम अख्तर, सहायक अभियंता, सभी कनीय अभियंता, पंचायत सचिव के अलावे अन्य मौजूद थे।

धरती आबा जनभागीदारी अभियान के तहत एवं विश्व ओलंपिक दिवस पर जिला स्तरीय स्टेडियम में कार्यक्रम का हुआ आयोजन

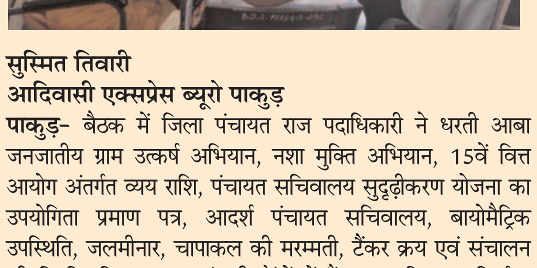

सुस्मित तिवारी आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो

पाकुड़। धरती आबा जनभागीदारी अभियान के तहत एवं विश्व ओलंपिक दिवस के अवसर पर जिला खेल कार्यालय पाकुड़ की ओर से बैंक कॉलोनी स्थित जिला स्तरीय स्टेडियम में कार्यक्रम आयोजित की गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उपायुक्त मनीष कुमार ने सभी खिलाड़ियों को विश्व ओलम्पिक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा कि ओलंपिक से बड़ा दुनिया में कोई इवेंट नहीं है। विभिन्न खेलों में देश का प्रतिनिधित्व करने वाले खिलाड़ियों ने देश को गौरवान्वित किया है। उन्होंने जिले के खिलाड़ियों का भी हौसला बढ़ाते हुए उन्हें सीख दी एवं धैर्य एवं अनुशासन के साथ खेल के प्रति समर्पित होते हुए मंजिल की ओर बढ़ने की बात कही।

मौके पर उप विकास आयुक्त महेश कुमार संथालिया, मुख्यालय डीएसपी जितेन्द्र कुमार समेत अन्य उपस्थित रहे।

समाहरणालय सभागार में समन्वय समिति की बैठक हुई आयोजित

ललित कुमार पाल की रिर्पोट

दुमका/समाहरणालय सभागार में उपायुक्त अभिजीत सिन्हा की अध्यक्षता में जिला समन्वय समिति की बैठक आयोजित की गयी।बैठक में उपायुक्त ने विभागवार समीक्षा की एवं योजनाओं के अद्यतन स्थिति की जानकारी प्राप्त करते हुए आवश्यक निदेश दिया। आपूर्ति विभाग की समीक्षा करते हुए उपायुक्त ने कहा कि राशन का वितरण निर्धारित मात्रा में लाभुकों के बीच किया जाय।राशन का उठाव एवं वितरण ससमय हो,इसे सुनिश्चित करें।कहा प्रखंड विकास पदाधिकारी, अंचल अधिकारी एवं एमओ पीडीएस दुकानों का निरीक्षण करें एवं राशन वितरण की जांच करें।इस दौरान उन्होंने ई-केवाईसी के संबंध में जानकारी प्राप्त की एवं आवश्यक निदेश दिया।

अबुआ आवास योजना की समीक्षा करते हुए उन्होंने आवास के निर्माण कार्य मे तेजी लाने का निदेश दिया साथ योजना के तहत दी जाने वाली राशि के किश्तों का भुगतान ससमय करने का निदेश दिया।कहा कि सभी प्रखंड प्राथमिकता के आधार पर आवास के निर्माण कार्य को पूर्ण कराएं।इस दौरान उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना(ग्रामीण) एवं पीएम जनमन के तहत किये जा रहे कार्यो की समीक्षा करते हुए सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी को आवश्यक निदेश दिया है।

कूप निर्माण कार्य की समीक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि कुआँ का निर्माण निर्धारित मापदंड के अनुरूप हो इसे सुनिश्चित करें।निर्माण के बाद कुआँ धसना नहीं चाहिए इसे सुनिश्चित करें।कहा कि हर प्रखंड में औसतन 100 एकड़ में स्ट्रॉबेरी की खेती की जाय।जहाँ कुआं का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है खेती के लिए वैसे स्थानों का चयन करें।

इस दौरान उपायुक्त ने पशुधन विकास योजना,पशुपालन एवं गव्य विकास की समीक्षा करते हुए लाभुकों का चयन करते हुए योजनाओं से आच्छादित करने का निदेश दिया।कहा कि विभाग द्वारा दिये गए लक्ष्य के अनुरूप कार्य करें साथ ही प्राप्त लक्ष्य को निर्धारित समयावधि में पूर्ण करें।कहा कि वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जिला स्तरीय टीम द्वारा योजना का लाभ लाभुकों को मिल रहा है अथवा नहीं इसकी जांच की जाएगी।

जेएसएलपीएस के कार्य की समीक्षा करते हुए उपायुक्त अभिजीत सिन्हा ने प्रत्येक टोला में दीदी की दुकान खोलने का निदेश दिया।कहा कि दीदी की दुकान हेतु लाभुकों का चयन करते हुए दुकान खोलने का कार्य किया जाय।उन्होंने दीदी का ढाबा हेतु लाभुकों का चयन करने का निदेश दिया।इस दौरान डोकरा आर्ट के संबंध में जानकारी प्राप्त करते हुए आवश्यक निदेश भी दिया।

उधोग विभाग की समीक्षा करते हुए पीएम विश्वकर्मा योजना से योग्य लाभुकों को जोड़ने का निदेश दिया। कहा कि वैसे प्रखंड जहां पीएम विश्वकर्मा योजना से संबंधित आवेदन लंबित उक्त आवेदनों की जांच करते हुए नियमानुसार आवश्यक कार्रवाई की जाय।

उपायुक्त ने कहा कि पंचायत ज्ञान केंद्र का निर्माण पंचायतों में किया गया है।यह भवन शोभा की वस्तु नहीं बने इसका ध्यान रखा जाय।उन्होंने जिला शिक्षा अधीक्षक को निदेश दिया कि सभी विद्यालयों को पत्र लिखकर इस भवन का उपयोग सुनिश्चित कराएं।

उन्होंने कहा कि किसी भी परिस्थिति में पंचायत भवन बंद नहीं रहे,इसका ध्यान रखा जाय।पंचायत भवन बंद रहने की स्थिति में सभी संबंधित के विरुद्ध नियमानुसार आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।कहा कि 15वीं वित्त आयोग की राशि से खराब चापानलों की मरम्मती की जाय।अगर इसके बावजूद खराब चापानल से संबंधित शिकायत प्राप्त होती है तो संबंधित पंचायत सचिव के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई की जायेगी।

बैठक में उपायुक्त ने समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित सावित्री बाई फूले किशोरी समृद्धि योजना सहित अन्य कल्याणकारी योजनाओं की समीक्षा करते हुए निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप कार्य करने का निदेश दिया।

उपायुक्त ने कहा कि किसी भी आंगनबाड़ी केंद्रों में चापानल खराब नहीं रहे इसे सुनिश्चित करें। बैठक में जानकारी दी गयी कि 38 विद्यालय में पुरूष शौचालय नहीं है।54 विद्यालय में पानी की सुविधा नहीं है।79 विद्यालय में चापानल (अन्य स्रोत) खराब है।निदेश दिया कि विकास मद से उक्त कार्य को करा लें।वैसे कार्य जो आपके द्वार नहीं किया जा सकता है उसकी सूची बीडीओ को उपलब्ध करा दें।बैठक में जानकारी दी गयी कि 10 विद्यालयों में विधुत की व्यवस्था नहीं है।

उपायुक्त ने सभी प्रखंड विकास पदाधिकारी को निदेश दिया कि अपने क्षेत्र अंतर्गत पीएचसी, सीएचसी का निरीक्षण करें एवं मरीजों को दी जा रही सुविधाओं, व्यवस्थाओं का अवलोकन करें।इस दौरान गोपीकांदर प्रखंड में जल्द से जल्द ममता वाहन उपलब्ध कराने का निदेश संबंधित अधिकारी को दिया।

कल्याण विभाग की समीक्षा करते हुए उन्होंने साईकल वितरण कार्य मे तेजी लाने का निदेश दिया। जानकारी दी गयी कि रामगढ़ प्रखंड में 261 साईकल का वितरण लंबित है।उपायुक्त निदेश दिया कि 261 साईकल का वितरण जल्द से जल्द करते हुए कार्यालय को सूचित किया जाय।

उपायुक्त ने कहा कि सभी विभाग आपस मे समन्वय बनाकर कार्य करें ताकि योजनाओं को योग्य एवं जरूरतमंद लाभुको तक ससमय पहुँचाया जा सके।कहा कि योजनाओं के क्रियान्वयन में देरी नहीं हो,सभी योजनाएं ससमय लाभुकों तक पहुँचायी जाय।

बैठक में वन प्रमंडल पदाधिकारी, अनुमंडल पदाधिकारी, सभी विभागों के वरीय पदाधिकारी उपस्थित थे।

पर्यावरण संरक्षण से होगी जीवन का रक्षाः सांसद

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़

सांसद, विधायक, उपायुक्त, डीएफओ एवं डीडीसी ने किया पौधारोपण, समस्त जिलावासियों से पौधारोपण करने की अपील की

उपायुक्त ने उपस्थितजन को नशा न करने की शपथ दिलाते हुए जिला पाकुड़ को नशा मुक्त बनाने का आह्वान किया

वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग की ओर से महेशपुर प्रखंड के जब्दी खरियोपाड़ा में 76 वां वनमहोत्सव पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर किया गया।

माननीय सांसद विजय कुमार हांसदा ने कहा कि वन महोत्सव हर साल मनाते आ रहे हैं। इस बार भी 76 वां वन महोत्सव मनाया जा रहा हैं। पेड़ लगाने से क्या फायदे मिलते हैं पहले इसकी जानकारी होना चाहिए। एक पेड़ कटेगा तो दस पेड़ लगाने का काम किया जा रहा है। प्राकृतिक से छेड़छाड़ करने से आज बहुत सारी समस्या हो रही है। लोग जिस तरह अन्य त्योहार मनाते है उसी तरह वन महोत्सव को भी मनाना चाहिए। आजकल लोगों को शुद्ध ऑक्सीजन नहीं मिल पा रहा है। सिर्फ सरकारी भूमि में नहीं बल्कि अपने अपने जमीन पर भी पेड़ लगाएं।

माननीय विधायक प्रोफेसर स्टीफन मरांडी ने कहा कि क्षेत्र के जंगल को सुरक्षित रखें। पेड़ लगाएं, काटे नहीं। एक-एक पेड़ घर के सदस्यों के तरह है। सुरक्षा और रक्षा करना हम सभी का दायित्व ही नहीं कर्तव्य है। पर्यावरण का संरक्षित रहना नितांत आवश्यक है, हम सबका कर्तव्य है।

इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उपायुक्त मनीष कुमार ने बताया कि एक पेड़ मां के नाम अभियान एवं प्रोजेक्ट प्रकृति के तहत पाकुड़ जिले में अब तक पाकुड़ जिले में 37 हजार से अधिक पौधे प्रोजेक्ट प्राकृति के तहत लगाये जा चुके हैं। इस मामले में पाकुड़ जिला राज्य में प्रथम स्थान पर है। उपायुक्त ने कहा कि प्रोजेक्ट प्राकृति के तहत पूरे जिले में 3 महीने के अंदर 1 लाख पौधे लगाए जाएंगे। उपायुक्त श्री मनीष कुमार ने समस्त जिलेवासियों से पर्यावरण संरक्षण के लिए सभी को कम से कम दो पौधा लगाने हेतु अपील किया। पर्यावरण के बिना मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। उन्होंने कहा कि हमें वायु, जल समेत अन्य चीजें पर्यावरण से ही प्राप्त होती है। हमारा भी कर्तव्य बनता है कि हम भी पर्यावरण के संरक्षण में अपना योगदान दें। उन्होंने कहा कि हरियाली से ही हमारे जीवन में खुशहाली होगी।

डीएफओ सौरभ चन्द्रा ने कहा कि पर्यावरण से ही जीवन है।पौधारोपण करने के बाद पौधा की देखभाल करने से ही पर्यावरण का उद्देश्य पूर्ण होगा। उन्होंने बताया कि इस वर्ष पूरे जिले में 1 लाख 12 हजार पौधे लगाए जाएंगे।

माननीय मंत्री, माननीय विधायक, उपायुक्त, डीएफओ एवं डीडीसी ने किया पौधारोपण

वन महोत्सव कार्यक्रम में माननीय सांसद, माननीय विधायक, उपायुक्त, डीएफओ एवं डीडीसी के द्वारा पौधारोपण किया गया एवं जिलावासियों से पर्यावरण संरक्षण को लेकर पौधारोपण करने की अपील की गई।

विभिन्न लाभुकों के बीच परिसम्पतियों का किया गया वितरण

इसके अलावे कार्यक्रम के दौरान माननीय सांसद, माननीय विधायक, उपायुक्त, डीएफओ ने लाभुकों के बीच विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के लाभ से लाभुकों को लाभान्वित किया। आज के कार्यक्रम में अबुआ आवास योजना का गृह प्रवेश, उन्नति का पहिया (साईकिल), सवजन पेंशन योजना, मक्का वितरण, मुख्यमंत्री पशुधन योजना, शिक्षा विभा से बैग, कांपी, वन विभाग द्वारा रेस्क्यू कीट, मत्स्य विभाग द्वारा नेट का वितरण, सखी समूह के दीदियों के बीच 10 लाख का बैंक लिंकेज का स्वीकृती पत्र का वितरण, दीदी बाड़ी योजना अंतर्गत तीन दीदियों के बीच स्वीकृती पत्र आदि का वितरण किया गया।

मौके पर सांसद प्रतिनिधि, जेएमएम जिला अध्यक्ष, विधायक प्रतिनिधि, जिला परिषद, सदस्य, मुखिया, पंचायत समिति सदस्य सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं जिला स्तरीय पदाधिकारी एवं प्रखंड स्तरीय पदाधिकारी उपस्थित रहे।

15 साल से पानी को तरस रहे पाकुड़ रेलवे क्वार्टर के कर्मचारी, अब नगर परिषद से लगाई आस

● नगर परिषद कार्यालय में हुई बैठक, शहरी जलापूर्ति योजना से शोधित जल देने पर हुई चर्चा

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़

पाकुड़। पाकुड़ शहर में जल संकट की समस्या कोई नई नहीं है, लेकिन पाकुड़ रेलवे के कर्मचारी तो बीते डेढ़ दशक से बूंद-बूंद पानी को तरस रहे हैं। रेलवे की 170 क्वार्टरों में रह रहे करीब 1250 कर्मचारियों को अब तक नियमित और शुद्ध पेयजल की सुविधा नहीं मिल पाई है। इस समस्या को लेकर अब रेलवे ने नगर परिषद से गुहार लगाई है।

गुरुवार को नगर परिषद कार्यालय में प्रशासक अमरेंद्र कुमार चौधरी की अध्यक्षता में एक अहम बैठक हुई। बैठक में पूर्व रेलवे रामपुरहाट के वरिष्ठ अनुभाग अभियंता (कार्य) मुकेश कुमार,पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल के सहायक अभियंता अभिजीत किशोर,कनिय अभियंता दिनेश मंडल, ईस्टर्न जोनल रेलवे पैसेंजर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष हिसाबी राय और प्रधान सहायक देवाशीष बर्मन मौजूद रहे।

2013 में बनी थी सहमति,जमीन नहीं मिलने से फंस गया था मामला

सूत्रों के अनुसार, वर्ष 2013 में रेलवे और जिला प्रशासन के बीच शहरी जलापूर्ति योजना के तहत रेलवे को प्रतिदिन दो लाख लीटर शोधित जल देने पर सहमति बनी थी।जलमीनार, वितरण पाइप और जल पीलर निर्माण की योजना भी बनी थी,लेकिन रेलवे की ओर से आवश्यक जमीन नहीं मिलने के कारण योजना अधर में रह गई।

बोरिंग भी फेल, सिर्फ 3 जगह ही मिला पानी

रेलवे ने स्वयं पेयजल व्यवस्था सुधारने के लिए अब तक कुल दस डीप बोरिंग करवाए,लेकिन सिर्फ तीन बोरिंग से ही सीमित मात्रा में पानी मिल पाया। ऐसे में समस्या जस की तस बनी हुई है।

अब डीआरएम हावड़ा ने दिखाई सक्रियता, उम्मीद जगी

पूर्व रेलवे हावड़ा के मंडल रेल प्रबंधक संजीव कुमार के निर्देश पर अब एक बार फिर से प्रयास तेज किए गए हैं। नगर परिषद में हुई बैठक में प्रशासक अमरेंद्र कुमार चौधरी ने कहा कि रेलवे को शहरी जलापूर्ति योजना से जोड़ने के लिए उपायुक्त को मंडल से पत्र भेजकर रेलवे की जमीन पर बनने वाले पानी टंकी निर्माण हेतु अनापत्ति प्रमाण पत्र (NOC) जारी कराने के बाद ही आगे की प्रक्रिया शुरू की जाएगी।

जलमीनार निर्माण, वितरण पाइप बिछाने और पीलर लगाने की योजना को आगे बढ़ाने के लिए अब प्रशासन और रेलवे के बीच समन्वय बनाने की जरूरत बताई गई है।

कर्मचारियों में जगी राहत की उम्मीद

बैठक के बाद कर्मचारियों में एक बार फिर आशा जगी है कि अब शायद वर्षों पुरानी जल संकट की समस्या का समाधान हो सके। यदि यह योजना जमीन पर उतरती है तो 1250 से अधिक लोगों को शुद्ध पेयजल की सुविधा मिल सकेगी।

अनुमंडल पदाधिकारी व मुखिया व बीपीओ ने पीएम जनमन व धारती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष शिविर का किया गया उद्घाटन

आदिवासी एक्सप्रेस प्रतिनिधि

लिट्टीपाड़ा (पाकुड़)। लिट्टीपाड़ा प्रखंड के ग्राम पंचायत सचिवालय लिट्टीपाड़ा मे ग्राम कुमारभाजा, धूंधा पहाड़ी, हेठबंधा और लिट्टीपाड़ा के लिए पीएम- जनमन और धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत विशेष शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर का विधिवत उद्घाटन अनुमंडल पदाधिकारी साइमन मरांडी, मुखिया शिव टुडू, प्रखंड पंचायत राज पदाधिकारी कमल पहाड़िया और प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी मानिक दास द्वारा द्वीप प्रज्वलित कर किया।

इस शिविर में विभिन्न विभागों द्वारा लगाये गये स्टॉल के माध्यम से लोगों को योजनाओं की जानकारी दी गई और उनका आवेदन लिया गया।

शिविर में आधार कार्ड, राशन कार्ड, आयुष्मान कार्ड, जाति प्रमाण पत्र, स्थानीय प्रमाण पत्र, किसान क्रेडिट कार्ड, पीएम किसान योजना, जन-धन खाता, सुकन्या योजना, विधवा पेंशन, विकलांग पेंशन, सिकल सेल, मनरेगा सहित कई योजनाओं से संबंधित स्टॉल लगाए गए।

वहीं कुछ ग्रामीणों के आवेदनों को तत्काल ही मौके पर लाभ देते हुये 13 लाभुकों को मनरेगा जॉब कार्ड, राशन कार्ड और जाति -निवासी प्रमाण पत्र का वितरण अनुमंडल पदाधिकारी द्वारा किया गया। इस पी.एम- जनमन एवं धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत लाभ वितरण शिविर में ग्रामीणों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

इस मौके पर अनुमंडल पदाधिकारी साइमन मरांडी ने कहा कि केंद्र और सरकार का उद्देश्य है कि दूर-दराज के आदिवासी समुदाय को बुनियादी सुविधाएं सहज रूप से उपलब्ध हो और सरकारी लाभो का पूर्ण पहुँच सुनिश्चित करके आदिवासी समुदाय को सशक्त बनाना ही सरकार का उद्देश्य है। उन्होंने ग्रामीणों को इन योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की।

शिविर में मुख्य रूप से प्रखंड कल्याण /कृषि पदाधिकारी के. सी. दास, प्रखंड कार्यक्रम प्रबंधक (जे.एस.एल.पी. एस) के जन्मजय बाउरी, पंचायत सचिव कुंदन कुमार, रोजगार सेवक वसीम अंसारी, मिथिलेश सिंह सहित कई पदाधिकारी गण कर्मी और ग्रामीण लाभुक उपस्थित थे।

रामगढ़ में पांच पंचायतों में मनरेगा के तहत वित्तीय वर्ष 2023/ 24एंव 2024/25 योजनाओं का सामाजिक अंकेक्षण सह पंचायत स्तरीय जनसुनवाई आयोजित

रामगढ़/रामगढ़

रामगढ़ प्रखंड में महुबन्ना, धोबा, लखनपुर ,लतबेरवा, डांडो समेत पाच पंचायतो में सोमवार को मनरेगा अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2022-23 और 23 24 मनरेगा योजना की सामाजिक अंकेक्षण सह पंचायत स्तरीय जनसुनवाई पंचायत स्तरीय गठित जूरी सदस्यों की उपस्थिति में कार्यक्रम आयोजित किया गया। स्टेट सोशल आडिट टीम द्वारा विगत 5 दिनों से पंचायत में 2023 24 और 24 25 योजनाओं की भौतिक जांच कर ग्राम सभा आयोजित किया गया था ।वही महुबना पंचायत में जूयुरी सदस्यों में पंचायत सचिव विनोद राम पंचायत समिति सदस्य मेरी नीला हेंब्रम ग्राम प्रधान का 1 मनरेगा मजदूर शामिल था। सोशल आडिट टीम लीडर प्रमोद मांझी ने बताया कि महुबना पंचायत में वर्ष 2023-24 और 24 25 में कुल 441 मनरेगा योजनाओं का सोशल ऑडिट किया गया जिसमें कुल राशि 5 करोड़ 81 लाख 33180 रुपया खर्च किया गया। वही कुल 441 योजनाओं में 106 योजना पूर्ण बाकी 335 योजना ओंगोइंग बताया गया वहीं टीम लीडर जुयुरी के समझ कई मुद्दे रखे जिसमें पंचायत कटहलडीह में वर्ष 2024-25 में इत्यादेवी के बागवानी मिशनयोजना में मास्टर रोल में छेड़छाड़ का मामला पाया गया जिसमें बताया गया कि मजदूरों की हाजिरी भी काट दिया गया है जिससे यह प्रतीत होता है कि मजदूरों का भुगतान लंबित है वही खेरवानी गांव में सीताराम दास के बिरसा कुप में सूचना पट्ट नहीं मिलने का मामला सामने आया ।वही सौशल आडिट टीम द्वारा दर्जनों मुद्दे जुयूरी के समक्ष रखा गया। तथा योजनाओं का निष्पादन किया गया।मौके पर सोशल आडिट टीम लीडर प्रमोद भंडारी बीआरपी में लखाई पहाड़िया राजेश हेंब्रम सोनाली मंडल रंजू देवी के अलावा सैकड़ो की संख्या में लोग मौजूद थे।

संविधान विरोधी है अमित शाह का अंग्रेज़ी पर हमला

>> **विचार**

> "मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने भी कभी अंग्रेज़ी की औपचारिक शिक्षा नहीं ली थी, फिर भी उन्होंने इस भाषा के महत्व को पूरी तरह समझा। उन्होंने लिखाः "चाहे अंग्रेज़ी भाषा हमारे जीवन में जैसे भी आई हो, यह तथ्य है कि इसने पिछले डेढ़ सौ वर्षों से हमारे मानसिक और शैक्षिक दृष्टिकोण को प्रभावित किया है। उन्होंने माना कि अंग्रेज़ी से कुछ नुक़सान हुए, लेकिन उसके लाभ भी गिनाएः अंग्रेज़ी ने देश को एकजुट करने में बड़ी भूमिका निभाई। यह वह काम कर गई जो कभी मुग़ल दौर में फ़ारसी ने किया था। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि अंग्रेज़ी हमेशा प्रमुख भाषा नहीं रह सकती और भारतीय भाषाओं को उनका उचित स्थान मिलना चाहिए -लेकिन सोच-समझ कर।अमित शाह की टिप्पणी इस सोच-समझ से कोसों दूर है

एस एन साहू

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की अंग्रेजी के खिलाफ विवादित टिप्पणी से देश में तीखी प्रतिक्रिया हो रही है। उनकी टिप्पणी भारत की भाषाई विविधता को कमजोर करती है और संविधान का उल्लंघन करती है। गृह मंत्री अमित शाह का ये कहना कि "हमारी जिंदगी में वो दिन आएगा जब अंग्रेज़ी बोलने वाले शर्मिंदा महसूस करेंगे... सिर्फ महात्मा गांधी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर और मौलाना आज़ाद जैसे स्वतंत्रता संग्राम के महान नेताओं की विरासत का अपमान नहीं है, बल्कि संविधान का भी खुला उल्लंघन है, जिसमें भारतीय भाषाओं और अंग्रेज़ी - दोनों के प्रयोग की स्पष्ट व्यवस्था दी गई है। यह टिप्पणी उन्होंने संविधान के 75वें वर्ष पर की, जिससे इस मौके की गरिमा को ठेस पहुंची। शाह की यह बात, जो नफ़रत फैलाने वाले बयान की सरहद को छूती है, भारत के उस विचार को कमज़ोर करती है जो भाषाई विविधता और सांस्कृतिक बहुलता में निहित है। उन्होंने कहा कि हमारे देश की भाषाएं हमारी संस्कृति के गहने हैं और इनके बिना हम "भारतीय" नहीं कहला सकते। उन्होंने यह भी कहा कि हमारे देश, उसकी संस्कृति, इतिहास और धर्म को विदेशी भाषाओं में नहीं समझा जा सकता। यह बयान इस सच्चाई को नज़रअंदाज़ करता है कि अंग्रेज़ी जैसी विदेशी भाषाओं ने भारतीय संस्कृति की गहराई को दुनिया तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

गांधी और अंग्रेज़ी में गीता : महात्मा गांधी ने भगवद गीता मूल संस्कृत में नहीं पढ़ी थी। पहली बार उन्होंने इसे लंदन में 'The Song Celestial' नाम की अंग्रेज़ी अनुवाद में पढ़ा, जिसे एडविन अनोल्ड ने लिखा था। इस अनुवाद का गांधी पर इतना गहरा आध्यात्मिक प्रभाव पड़ा कि यह उनके जीवन और विचारों को पूरी तरह बदलने वाला अनुभव बन गया - वही विचार जो आगे जाकर स्वतंत्रता संग्राम की नींव बने। सिर्फ़ इसलिए कि वह गीता अंग्रेज़ी में थी, उसका महत्व कम नहीं हो गया। गांधी ने भारतीय भाषाओं की वकालत की, पर साथ ही वे अंग्रेज़ी में भी उत्कृष्टता से लिखते और बोलते थे। 26 जनवरी 1921 को 'यंग इंडिया' में उन्होंने लिखा "मैं चाहता हूं कि हमारे नौजवान लड़के-लड़कियां, जिनमें साहित्यिक रुचि है, वे अंग्रेज़ी या अन्य विदेशी भाषाएं जितनी चाहें, सीखें, और फिर उस ज्ञान का लाभ भारत और दुनिया को दें, जैसे बोस, रे या ठाकुर ने किया। लेकिन मैं नहीं चाहता कि कोई भी भारतीय अपनी मातृभाषा को भूले, नज़रअंदाज़ करे या उससे शर्मिंदा हो। गांधी का यह नज़रिया संकीर्ण राष्ट्रवाद या भाषायी श्रेष्ठता पर नहीं, बल्कि एक समावेशी और वैश्विक सोच पर आधारित था।

ठाकुर और अंग्रेज़ी : रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कभी औपचारिक रूप से अंग्रेज़ी नहीं पढ़ी थी, लेकिन उन्होंने अंग्रेज़ी में निबंध उतनी ही उत्कृष्टता से लिखे जितनी बांग्ला में कविताएं, नाटक और अन्य रचनाएं। साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित पुस्तक English Writings of Tagore उनकी अंग्रेज़ी लेखनी की गहराई और सौंदर्य को दर्शाती है। आज भी उन्हें बांग्ला साहित्य के लिए याद किया जाता है, लेकिन उनकी रचनाएं देश-विदेश में कई भाषाओं में पढ़ी और सराही जाती हैं।

मौलाना आज़ाद और अंग्रेज़ी : मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने भी कभी अंग्रेज़ी की औपचारिक शिक्षा नहीं ली थी, फिर भी उन्होंने इस भाषा के महत्व को पूरी तरह समझा। उन्होंने लिखाः "चाहे अंग्रेज़ी भाषा हमारे जीवन में जैसे भी आई हो, यह तथ्य है कि इसने पिछले डेढ़ सौ वर्षों से हमारे मानसिक और शैक्षिक दृष्टिकोण को प्रभावित किया है। उन्होंने माना कि अंग्रेज़ी से कुछ नुक़सान हुए, लेकिन उसके लाभ भी गिनाएः अंग्रेज़ी ने देश को एकजुट करने में बड़ी भूमिका निभाई। यह वह काम कर गई जो कभी मुग़ल दौर में फ़ारसी ने किया था। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि अंग्रेज़ी हमेशा प्रमुख भाषा नहीं रह सकती और भारतीय भाषाओं को उनका उचित स्थान मिलना चाहिए झ लेकिन "सोच-समझ कर"।

संविधान का उल्लंघन : अमित शाह की टिप्पणी इस "सोच-समझ" से कोसों दूर है और सीधे संविधान के खिलाफ़ है। अनुच्छेद 120 के अनुसार सांसद हिंदी, अंग्रेज़ी या अपनी मातृभाषा में बोल सकते हैं। राज्यों की विधानसभाओं में भी अंग्रेज़ी में बोलने की अनुमति है। अनुच्छेद 348 कहता है कि उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में अंग्रेज़ी का प्रयोग किया जा सकता है, और सभी विधेयकों और अधिनियमों के आधिकारिक दस्तावेज़ अंग्रेज़ी में होंगे। यहां तक कि संविधान संशोधनों के अनुवाद की भी व्यवस्था है झ जो मूल रूप से अंग्रेज़ी में लिखे जाते हैं। 2024 के लोकसभा चुनाव के दौरान, जब विपक्ष ने संविधान को बचाने की बात की, तब शाह ने धर्मनिरपेक्षता की बात की और कहा कि यह शब्द संविधान की प्रस्तावना से नहीं हटेगा। अब जब उन्होंने अंग्रेज़ी की आलोचना की है, तो क्या वे संविधान से अंग्रेज़ी के हर ज़िक्रको हटाने का साहस दिखाएंगे?

भारत की असली ताक़त विविधता : शाह को "एक राष्ट्र, एक संस्कृति" की पुरानी सोच से आगे बढ़ना चाहिए। भारत की असली पहचान उसकी विविधता में है - और इसमें भाषाई विविधता भी शामिल है। भारतीय भाषाएं, अंग्रेज़ी और अन्य विदेशी भाषाएं - सभी ने मिलकर भारत की सभ्यतागत विरासत को समृद्ध किया है।

(एस. एन. साहू भारत के राष्ट्रपति के. आर. नारायणन के विशेष कार्य अधिकारी रहे हैं।)

संपादकीय

भारत की भूमिका संदिग्ध

डोनाल्ड ट्रंप जैसे नेताओं के हाथ में सत्ता आ जाने का कितना खतरनाक अंजाम होता है, इसका उदाहरण रविवार को फिर से दुनिया ने देख लिया। इजरायल और ईऱान के बीच पिछले 10 दिनों से चल रहे युद्ध में अमेरिका भी कूद पड़ा। ईरान के फोडी, नतांज और एस्पहान इन तीन परमाणु संयंत्रों पर अमेरिकी बमवर्षक विमानों ने बम गिराए और वापस लौट गए। इसके बाद अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने व्हाइट हाउस से राष्ट्र को संबोधित करते हुए इस अभियान को एक 'शानदार सफलता' बताया। साथ ही उम्मीद जताई कि उनका यह क़दम एक स्थायी शांति का रास्ता खोलेगा, जिसमें ईरान के पास परमाणु शक्ति बनने की संभावना नहीं रहेगी।

अभी गुरुवार तक ट्रंप कह रहे थे कि वो दो हफ्ते तक विचार करेंगे, इसके बाद कोई फैसला लेंगे। इससे पहले कनाडा से लौट कर ट्रंप ने ईरान को बिना शर्त समर्पण करने कहा था। ट्रंप को लगा होगा कि ऐसी घुड़की काम कर जाएगी, लेकिन ईरान की तरफ से सुप्रीम नेता अयातुल्लाह अली खामनेई ने भी बता दिया कि ईरान सरेंडर करने वाली कौम नहीं है। खामनेई ने यह भी कहा कि मुझे मारकर भी अमेरिका को कुछ हासिल नहीं होगा, क्योंकि ये युद्ध ईरान की सेना, उसके युवा लड़ रहे हैं। खामनेई को ऐसा वक्तव्य शायद इसलिए देना पड़ा क्योंकि इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने खुलेआम उन्हें मारने की धमकी दी। दुनिया में बहुत से बड़े युद्ध हुए हैं, लेकिन किसी देश के नेता ने दुश्मन देश के नेता की हत्या की धमकी दी हो, इसके उदाहरण कम हैं। युद्ध में एक देश, दूसरे देश को मात देने की बात करता है, गुंडों की तरह हत्या की नहीं। मगर अमेरिका और इजरायल ये दोनों इस समय पूरे दुनिया में अपनी गुंडागर्दी चलाते दिख रहे हैं और इनकी वजह से फिर विश्व युद्ध का खतरा खड़ा हो गया है। विडंबना ये है कि ट्रंप और नेतन्याहू कहते हैं कि शक्ति से ही शांति आएगी। यानी अब विश्वशांति की परिभाषा भी इनके हिसाब से लिखी जाए, ऐसा माहौल बनाया जा रहा है। इसके बाद अगर ट्रंप को नोबेल शांति पुरस्कार मिल भी जाए, तो क्या आश्चर्य। जब शांति के तकाजे बदल रहे हैं तो फिर गुंडों को ही रक्षक और शांतिदूत माना जाएगा ।दुख की बात ये है कि इस पूरे प्रकरण में भारत की भूमिका दुनिया की निगाह में संदिग्ध हो रही है।

नारी जब सिंहनी बनीः गोंडवाना की अमर प्रहरी रानी दुर्गावती

प्रो. आरके जैन

भारतीय इतिहास की वीरगाथाओं में कुछ नाम ऐसे हैं, जो समय की धूल में कभी धूमिल नहीं होते। वे न केवल अपने युग की प्रतीक होती हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनकर अमर हो जाती हैं। ऐसी ही एक नाम है रानी दुर्गावती-एक ऐसी वीरांगना, जिन्होंने अपने साहस, स्वाभिमान और बलिदान से भारत की मिट्टी को गौरवान्वित किया। उनकी गाथा केवल युद्ध और विजय की कहानी नहीं, बल्कि एक नारी के अटल संकल्प, नेतृत्व और मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम की अमर दास्तान है। रानी दुर्गावती ने यह सिद्ध किया कि जब बात सम्मान और स्वतंत्रता की हो, तो नारी शक्ति किसी भी चुनौती से कम नहीं। उनकी वीरता का आलम यह था कि मुग़ल साम्राज्य जैसी विशाल शक्ति भी उनके सामने ठिठक गई। 1524 में चंदेल वंश के गौरवशाली कालिंजर किले में जन्मीं दुर्गावती बचपन से ही असाधारण थीं। उनके पिता, राजा कीरत राय, ने उन्हें केवल एक राजकुमारी के रूप में नहीं, बल्कि एक योद्धा के रूप में तैयार किया। उस युग में, जब अधिकांश स्त्रियाँ महलों की चारदीवारी तक सीमित थीं, दुर्गावती ने तलवारबाज़ी, तीरंदाज़ी, घुड़सवारी और युद्धनीति में महारत हासिल की। उनकी शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं थी; वे रणभूमि की चुनौतियों को समझने वाली कुशल रणनीतिकार थीं। उनके हृदय में देश और धर्म के लिए कुछ कर गुजरने की ललक थी, जो उनके हर निर्णय में झलकती थी।

उनका विवाह गोंडवाना के शासक दलपत शाह से हुआ, जो चंदेल और गोंड संस्कृतियों का अनूठा संगम था। यह विवाह केवल दो व्यक्तियों का मिलन नहीं, बल्कि दो शक्तिशाली परंपराओं का एकीकरण था। किंतु नियति ने उनके जीवन में एक कठिन मोड़ ला दिया। विवाह के कुछ वर्ष बाद ही दलपत शाह का असामयिक निधन हो गया। उस समय उनका पुत्र वीर नारायण अभी बालक था। सामान्य स्त्री के लिए यह स्थिति टूटने का कारण बनती, पर दुर्गावती ने इसे अवसर में बदला। उन्होंने गोंडवाना की बागडोर अपने हाथों में ली और एक कुशल शासिका के रूप में अपनी पहचान बनाई। रानी दुर्गावती का शासनकाल, जो लगभग 16 वर्षों तक रहा, न केवल गोंडवाना के इतिहास में स्वर्णिम काल था, बल्कि यह एक आदर्श प्रशासन का उदाहरण भी था। उन्होंने कृषि और जल प्रबंधन को बढ़ावा दिया,

सड़कों का निर्माण करवाया, और न्याय व्यवस्था को इतना सुदृढ़ किया कि प्रजा उन्हें माता के समान पूजने लगी। उनकी प्रजा के प्रति संवेदनशीलता और निष्पक्षता ने उन्हें एक लोकप्रिय शासिका बनाया। वे केवल राजमहल में बैठकर शासन नहीं करती थीं; वे युद्ध के मैदान में भी उतनी ही प्रखर थीं। उनकी सेना में सैनिकों का मनोबल उनकी उपस्थिति मात्र से दोगुना हो जाता था। लेकिन उस युग में स्वतंत्र रियासतों का अस्तित्व बनाए रखना आसान नहीं था। मुग़ल सम्राट अकबर की साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाएँ गोंडवाना की ओर बढ़ रही थीं। 1564 में अकबर ने अपने सेनापति आसफ खाँ को गोंडवाना पर आक्रमण करने का आदेश दिया। यह वह क्षण था, जब रानी दुर्गावती के साहस और नेतृत्व की सच्ची परीक्षा हुई। उन्होंने आत्मसमर्पण का रास्ता चुनने के बजाय युद्ध का बिगुल बजा दिया। उनकी सेना संख्या में मुग़ल सेना से बहुत कम थी, पर रानी की रणनीति और सैनिकों का जोश इस कमी को पूरा कर रहा था। नरई नाले के किनारे हुए युद्ध में रानी ने स्वयं सेना का नेतृत्व किया। घोड़े पर सवार, धनुष-बाण से सुसज्जित, वे किसी देवी की तरह रणभूमि में उतरीं। उनके प्रहारों ने मुग़ल सेना को हतप्रभ कर दिया। पहले दिन का युद्ध रानी के पक्ष में रहा, पर मुग़ल सेना की विशाल संख्या और निरंतर हमले ने स्थिति को जटिल बना दिया। दूसरे दिन, जब युद्ध अपने चरम पर था, रानी का घोड़ा घायल हो गया। उनके शरीर पर तीरों के घाव थे, और तरकश खाली हो चुका था। फिर भी, उनकी आँखों में हार का कोई भाव नहीं था। जब उन्हें आभास हुआ कि अब जीत संभव नहीं और मुग़ल सेना उन्हें बंदी बना सकती है, तो रानी ने अपमानजनक पराजय को स्वीकार करने के बजाय आत्मबलिदान का मार्ग चुना। 24 जून 1564 को, उन्होंने अपनी कटार से स्वयं को समाप्त कर लिया, पर अपने स्वाभिमान और मातृभूमि के सम्मान को अक्षुण्ण रखा। यह बलिदान केवल एक जीवन का अंत नहीं था; यह एक ऐसी ज्वाला थी, जो आज भी भारत के कोने-कोने में प्रज्वलित है। रानी दुर्गावती की गाथा केवल गोंडवाना तक सीमित नहीं है। वे उस नारी शक्ति की प्रतीक हैं, जो समय की हर चुनौती को ललकार सकती है। उनका जीवन हमें सिखाता है कि साहस और स्वाभिमान की कोई लिंग सीमा नहीं होती। उन्होंने यह दिखाया कि एक स्त्री न केवल घर की नींव संभाल सकती है, बल्कि युद्ध के मैदान में भी तूफान ला सकती है। उनकी स्मृति आज भी मध्यप्रदेश में जीवित है। जबलपुर का रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, उनके नाम पर बने स्मारक, और हर वर्ष 24 जून को मनाया जाने वाला बलिदान दिवस उनकी अमरता का प्रमाण हैं। रानी दुर्गावती का जीवन एक ऐसी कहानी है, जो हर भारतीय के हृदय में गर्व और प्रेरणा का संचार करती है। वे केवल एक रानी नहीं थीं; वे एक विचार थीं, एक संकल्प थीं, और एक ऐसी शक्ति थीं, जो अपने बलिदान से भी अमर हो गईं। आज जब हम उनकी गाथा को याद करते हैं, तो वह हमें सिखाती है कि चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी विपरीत हों, आत्मसम्मान और देशप्रेम के लिए लड़ना ही सच्चा जीवन है। रानी दुर्गावती का नाम लेते ही हमारा सिर गर्व से ऊँचा हो जाता है, और हमारा हृदय कह उठता है-यह है भारत की वह वीरांगना, जिसने मृत्यु को भी अपने सामने झुका दिया। वे थीं, हैं, और हमेशा रहेंगी-भारत की अमर ज्वाला, रानी दुर्गावती

आधुनिकता की अंधी दौड़ में पारंपरिक रीति-रिवाज व लोक संस्कृति पीछे छूट गयी

विजय गर्ग

हमारे गांव बदल रहे हैं। यह बदलाव कई स्तरों पर देखा जा सकता है। सड़क और रेलमार्गों से जुड़ जाने पर गांवों में न सिर्फ संपर्क बेहतर हुआ, बल्कि जीवनशैली और ग्रामीण परिवेश भी बदला है। गांवों में बिजली आई, जो अपने साथ रोशनी तो लाई ही, टीवी जैसे उपकरणों का माध्यम भी बनी। सड़क और बिजली ने गांवों को शहरों के समांतर खड़ा होकर बराबरी की ओर बढ़ने की कोशिश में बड़ी भूमिका निभाई। अब गांव वैसे नहीं रहे, जैसे तीन-चार दशक पहले थे। यकीनन, इस बदलाव को सकारात्मक और विकासोन्मुख कहा जाना चाहिए। गांवों के लोगों को भी साधन संपन्न जीवन जीने का उतना ही अधिकार है, जितना शहर के लोगों का, लेकिन बदलाव हमेशा अपने साथ कुछ अवांछित संदर्भ भी लाता है। ये संदर्भ कई बार सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन के कारक बन जाते हैं और हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत से दूर ले जाते हैं। गांवों में बिजली आई, तो रोशनी के साथ दुष्प्रभाव भी लाई, जिसके अंधेरे में गांवों की लोक संस्कृति लुप्त होने लगी। बिजली ने गांवों के लोगों की जीवनशैली ही नहीं बदली, बल्कि उनकी सोच में भी बदलाव ला दिया। टीवी ने ग्रामीण जीवन की खिड़की शहर और बड़े नगरों की तरफ खोल दी। रही-सही कसर मोबाइल और इंटरनेट ने पूरी कर दी। ग्रामीण जीवन इससे काफी प्रभावित हुआ। आधुनिकता की होड़ में लोग अपने पारंपरिक रीति- रिवाजों से दूर होते गए। पर्व-त्योहारों लेकर मांगलिक कार्यक्रमों में भी आधुनिकता इस कदर हावी हो गई कि लोग अपनी परंपराओं को बीते जमाने की बात समझने लगे। एक समय गांवों में हर छोटे-बड़े पर्वों से लेकर विभिन्न मौसमों के भी गीत गाए जाते थे। लोग मौसम को सिर्फ आबो-हवा में परिवर्तन की वजह से ही नहीं, बल्कि मन-मस्तिष्क से भी महसूस करते थे। लोकगीत- संगीत लोगों को पारंपरिक सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने का काम करते हैं। लेकिन बदलते समय ने सब कुछ बदल दिया। अब फाग, चैती, बैसाखी, कजरी, बारहमासा और झूला गीत सुनाई नहीं पड़ते। नई पीढ़ी इनकी मिठास से वंचित हो रही है। यही नहीं, गांवों में विभिन्न पर्व-त्योहारों और खास अवसरों पर आयोजित होने वाले लोक नाटक भी आधुनिकता की भेंट चढ़ गए। लोक नाटकों का स्थान आर्केस्ट्रा ने ले लिया। लोक नाटक सिर्फ मनोरंजन के साधन नहीं होते थे, बल्कि सामाजिक समरसता में भी इनकी बड़ी भूमिका होती थी। नाटक का मंच सामाजिक सद्भाव का मंच होता था। आधुनिकता की अंधी दौड़ में लोग आज बहुत आगे निकल गए और पारंपरिक रीति-रिवाज व लोक संस्कृति पीछे छूट गई। गांवों की पाठशाला में बहुत पहले चकचंदा होता था। हालांकि, उस समय और आज के शिक्षा व्यवसाय में आमूल परिवर्तन हो चुका है। तब ज्यादातर स्कूल सरकारी नहीं थे और पाठशाला के गुरुजी को जीविकोपार्जन के लिए उनके शिष्यों से मिलने वाली गुरु दक्षिणा पर ही आश्रित रहना पड़ता था। भाद्रपद चतुर्थी से शुरू होकर दस दिनों तक चकचंदा गांवों में एक उत्सव के रूप में मनाया जाता था, जिसमें विद्यार्थी घर-घर जाकर गणेश वंदना गाते थे और चकचंदा मांगते थे। यह चंदा गुरुजी को आदर के साथ दे दिया जाता था। इससे गुरु का जीविकोपार्जन होता था। चकचंदा को सिर्फ गुरुजी की दक्षिणा के लिए मांगे जाने वाले लोक और पारंपरिक पर्व के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि यह पूरे गांव को समन्वित कर एकता के सूत्र में जोड़ता था। यह सही है कि आज गांवों में सरकारी स्कूल हैं और शिक्षक सरकारी मुलाजिम। कोचिंग संस्थान और निजी स्कूल भी खुल गए हैं। निजी शिक्षण संस्थानों को चकचंदा की राशि नहीं, बल्कि भारी-भरकम ट्यूशन शुल्क चाहिए। इसी तरह भाई-बहनों के अटूट प्रेम का एक पर्व है, सामा- चकेवा। महिलाएं इस पर्व में पारंपरिक मैथिली परिधान पहन कर 'सामा चकेवा' नृत्य करती हैं। इसी तरह विदापद नाच और जितिया नाच जैसे पारंपरिक उत्सव अब अपने अंतिम दिन गिन रहे हैं। ढोलक की जोरदार थाप के साथ वीर रस से सराबोर आल्हा गायन भी अब पुराने जमाने की बात हो गई है। रामलीला भी अब अतीत के अंधेरे में गुम होती जा रही है। कुछ दशक पहले तक गांवों में हर वर्ष नियमित रूप से रामलीला मंडली आती थी और दो-तीन हफ्ते तक लोग इसका लुत्फ उठाते थे। मगर, टीवी और ओटीटी की चकाचौंध के आगे गांवों की रामलीला अब लोगों को उबाऊलगने लगी है। इसी तरह, गांवों का विरहा और कठपुतली नाच भी अब बीते जमाने की बात हो गई। आज पीछे मुड़ कर देखने से यह सहज अहसास होता है कि आधुनिकता की दौड़ में हम अपने रीति-रिवाजों और लोक परंपराओं से इतना दूर हो गए हैं कि अब लौट कर उन्हें अपनाना आसान नहीं है। पर जिन लोक परंपराओं में सांसें बाकी हैं, उन्हें नया जीवन देने की कोशिश अवश्य की जानी चाहिए। क्योंकि, जब लोक संस्कृति है, तभी लोक जीवन में राग-रंग और उमंग रहती है।

(विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब)

स्वामित्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक व संपादक **सरोज चौधरी** द्वारा ई-37, अशोक विहार रांची से प्रकाशित तथा भास्कर प्रिटिंग प्रेस लालगुटवा रांची से मुद्रित, **संस्थापक संपादक : स्व. राधाकृष्ण चौधरी, प्रबंध संपादक अरूण कुमार चौधरी * फोन :** 9471170557/08084674042, **ई-मेल :** aadivashiexpress@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

टेन की चपेट में आने से एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल, रेफर

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam

साहिबगंज। सकरीगली एक नंबर प्लेटफॉर्म के रेलवे लाइन में सोमवार को किसी टेन की चपेट में आने से एक व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया है। सूचना मिलने पर साहिबगंज आरपीएफ जवानों घायल युवक घटनास्थल पर पहुंचकर 108 एंबुलेंस से घायल को इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया है। बताया जा रहा है कि घायल कोटालपोखर के रहने वाला बच्चु मिंज है. साहिबगंज गैस गोदाम अपने ससुराल आया हुआ था. परिजनों ने बताया कि रविवार को घायल को सदर अस्पताल में भर्ती कराया था उनका तबीयत बिगड़ जाने से उनका हालत खराब हो गया था जहां रविवार के 9:00 बजे रात में डॉक्टर से डिस्चार्ज कराकर घर वापस लेकर चले गए थे. और सोमवार को सूचना मिली कि किसी ट्रेन की चपेट में आने से हाथ पांव कट गया है और घायल हो गया परिजनों ने आगे बताया कि इसका कुछ दिमागी हालत ठीक नहीं रहता है.वहीं घायल की हालत काफी गंभीर है। इधर डॉक्टर ने बताया कि स्थिति ठीक नहीं है। इसका इसका इलाज संभव नहीं है। बेहतर इलाज के लिए हायर सेंटर रेफर किया गया है। वहीं रेलपुलिस मामले की जांच में जुटी है।

आम्रपाली- चंद्रगुप्त क्षेत्र द्वारा निबंध एवं सुरक्षा स्लोगन लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता- अबुल कलाम

आम्रपाली- चंद्रगुप्त क्षेत्र के महाप्रबंधक अमरेश कुमार सिंह के कुशल मार्गदर्शन में, सुरक्षा विभाग द्वारा एस.एस. हाई स्कूल में विद्यार्थियों के बीच कोयला खदान में सुरक्षा विषय पर निबंध एवं सुरक्षा स्लोगन लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को खनन क्षेत्र में सुरक्षा के महत्व से अवगत कराना और उनमें सुरक्षा के प्रति जागरुकता पैदा करना था। छात्रों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया और रचनात्मक तरीके से अपने विचार प्रस्तुत किए। इसके अतिरिक्त क्षेत्र में रहने वाले ग्रामीणों को सुरक्षा के प्रति जागरूक करने हेतु एक सुरक्षा रथ चलाया जा रहा है, जो खदान के आसपास के गांवों में जाकर सुरक्षा संबंधी जानकारी प्रदान कर रहा है। यह रथ सुरक्षा गीतों ओर संदेशों के माध्यम से ग्रामीण समुदाय को सुरक्षा उपायों के बारे में जागरूक कर रहा है। इस सुरक्षा रथ को महाप्रबंधक अमरेश कुमार सिंह द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया था। यह पहल न केवल कमचारियों बल्कि आस पास के समुदायों को भी सुरक्षा के महत्व से जोड़ने का एक सराहनीय प्रयास है।

हुसैनाबाद के जिप सदस्य राजू मेहता ने राइफ़ल शूटिंग चैंपियनशिप में दो रजत पदक जीता

आदिवासी एक्सप्रेस/ लालू कुमार यादव

हुसैनाबाद, पलामू। जिला के हुसैनाबाद उत्तरी क्षेत्र के जिप सदस्य राजू कुमार मेहता ने रांची में आयोजित ओपन इंटर क्लब शूटिंग चैंपियनशिप में दो रजत पदक जीतकर क्षेत्र का नाम रोशन किया है। उन्होंने 10 मीटर एयर राइफल ओपन साइट मेन में 305 स्कोर और 50 मीटर. 22 राइफल ओपन साइड मेन में 77 स्कोर हासिल कर यह उपलब्धि हासिल की। श्री मेहता को जेएसआरए के प्रेसिडेंट दिवाकर सिंह ने पदक देकर जीत की बधाई दी, यह स्टेट लेवल चैंपियनशिप अयोजिय की गई थी। राजू मेहता की इस उपलब्धि से न केवल हुसैनाबाद का नाम रोशन हुआ है, बल्कि अन्य खिलाड़ियों को भी अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए प्रेरित किया है। मौके पर श्री मेहता ने कहा कि सीखने व सिखाने की कोई उम्र या पद दायित्व नही होता हैं। मुझे राइफ़ल शूटिंग के शौक बचपन से था मैं क्षेत्र के युवाओ को खेल व अन्य प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रेरित करता हूं ताकि हमारा हुसैनाबाद भी अन्य शहरों के तरह हर क्षेत्र के खेल खिलाड़ी तीरंदाजी, निशाने बाजी में आगे निकले उन्होंने कहा आपने राजनीति कैरियर के साथ साथ निजी जिंदगी में भी ऐसे प्रतियोगिता में भाग लेने व प्रतियोगिता में शामिल होने वालों को मैं अपने तरफ से प्रेरित करूंगा।

आम की बागवानी लाभप्रदः संजीत यादव

- जमुआ में आम बागवानी महोत्सव का आयोजन

जमुआ, प्रतिनिधि। सोमवार को प्रखंड परिसर जमुआ में आम बागवानी महोत्सव का आयोजन किया गया। उक्त आयोजन में आम बगान लगाने के लिए लोगों को प्रेरित किया गया। इस मौके पर बड़ी संख्या में महिला कृषकों और महिला समूह की महिलाओं का जुटान हुआ। कृषकों को संबोधित करते हुए प्रखंड प्रमुख प्रतिनिधि संजीत यादव ने कहा कि आम फलों का राजा है। इसकी खेती काफी लाभ दायक है। कहा खेतों में आम की फसल लगाने से किसानों को आर्थिक लाभ मिलता है। धान की फसलों से ज्यादा फायदा आम के बागान से है। कार्यक्रम में बीडीओ अमल जी ने कहा कि आम लगाने से पर्यावरण के संरक्षण के साथ साथ आर्थिक समृद्धि किसानों को आएगी। कार्यक्रम में उप प्रमुख रब्बुल हसन रब्बानी, प्रखंड बीस सूत्री अध्यक्ष मो जुनैद अलम, पंसस मो बेलाल सहित कई लोग थे।

संगठन सशक्तिकरण को लेकर में विधायक निसात आलम की अध्यक्षता में कांग्रेस की अहम बैठक आयोजित

संविधान बचाओ रैली व हूल दिवस को सफल बनाने की रणनीति तैयार

अजय कुमार कुशवाहा
आदिवासी एक्सप्रेस जिला ब्यूरो

बरहरवा (साहिबगंज)। कांग्रेस पार्टी के संगठनात्मक मजबूती और आगामी कार्यक्रमों को सफल बनाने को लेकर सोमवार को एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। यह बैठक पाकुड़ विधानसभा की विधायक एवं साहिबगंज जिला कांग्रेस की सह प्रभारी श्रीमती निसात आलम की अध्यक्षता में उनके इस्लामपुर स्थित आवास पर हुई। बैठक में साहिबगंज जिला अध्यक्ष, सभी प्रखंड अध्यक्ष, मंडल अध्यक्ष, प्रखंड पर्यवेक्षक सहित

पार्टी के वरिष्ठ पदाधिकारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

बैठक में मुख्य रूप से ग्राम पंचायत/वार्ड स्तर से लेकर जिला स्तर तक संगठन के विस्तार और मजबूती पर गहन चर्चा की गई। साथ ही 28 जून 2025 को पाकुड़ में आयोजित होने वाली संविधान बचाओ रैली और 30 जून 2025 को मनाए जाने वाले हूल दिवस के अवसर पर कांग्रेस पार्टी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों को सफल बनाने की विस्तृत रणनीति तय की गई।

विधायक निसात आलम ने कहा कि संविधान बचाओ रैली और हूल दिवस झारखंड की अस्मिता, आदिवासी पहचान और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के प्रतीक हैं। उन्होंने बताया कि इन कार्यक्रमों में प्रदेश कांग्रेस प्रभारी श्री के. राजू, प्रदेश अध्यक्ष श्री केशव महतो कमलेश, सहित कांग्रेस के मंत्री, विधायक और कई वरिष्ठ पदाधिकारीगण विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। उन्होंने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि वे इन कार्यक्रमों में अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित करें और घर-घर जाकर जनता को कांग्रेस की विचारधारा और संविधान की रक्षा के प्रति पार्टी की प्रतिबद्धता से अवगत कराएं।

इस अवसर पर जिला अध्यक्ष एवं विधायक प्रतिनिधि बरकत खान, वरिष्ठ कांग्रेसी गुलाब रब्बानी, कमल आर्य, प्रखंड अध्यक्ष रंजीत टुडू, नेहाल अख्तर, परवेज आलम, हीरालाल साहा, मोहम्मद सद्दाम हुसैन, मनोज घोष, कलीमुद्दीन, ऐखलाक नदीम, राजेश कुमार सिंह, वसीम औरंगज़ेब, मो. रिजवान, सतीश, बास्की यादव, मो. शहीद अनवर, मो. खलीक, मो. मुखलेसुर रहमान, बदरुद्दीन, भोलानाथ महतो, ऐनुल हक अंसारी, सकील मैनुउल हक, विकास सिंह, अकरम राजा, तैमूरी अंसारी, अनीता साहा, दिल अफरोज सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता व पदाधिकारी मौजूद रहे।

बैठक का उद्देश्य पार्टी संगठन को जमीनी स्तर पर मजबूत करना, कार्यकर्ताओं के बीच संवाद को सशक्त बनाना और आगामी कार्यक्रमों को जनआंदोलन का रूप देना था।

उत्क्रमित उच्च विद्यालय मिर्जापुर बंगला को +2 बनाने की मांग- एनएसयूआई

अजय कुमार कुशवाहा
आदिवासी एक्सप्रेस जिला ब्यूरो

आज दिनांक 23 जून 2025 को एनएसयूआई प्रतिनिधि मंडल ने पाकुड़ विधानसभा के स्थानीय विधायिका निसात अलम के निजी आवास में मुलाकात कर बरहरवा प्रखंड मिर्जापुर पंचायत अंतर्गत उत्क्रमित उच्च विद्यालय मिर्जापुर बंगला को प्लस टू विद्यालय बनाने को लेकर मांग पत्र सोपा। मांग पत्र में बताया गया कि आपको ज्ञात होगा कि राज्यपाल महोदय के आदेश अनुसार अंगीभूत महाविद्यालय में इंटर की नामांकन को स्थगित कर दी गई है। जिससे हजारों विद्यार्थियों की पढ़ाई में बाधा उत्पन्न हो सकती है। क्योंकि पर्याप्त प्लस टू विद्यालय नहीं है। हमारी आपसे मांग है कि उत्क्रमित उच्च विद्यालय मिर्जापुर बंगला

(UDISE- 20090803701) को +2 विद्यालय बनाने की पहल की जाए। क्योंकि मिर्जापुर पंचायत, बरारी पंचायत, कालू पंचायत, रूपसपुर पंचायत क्षेत्र के विद्यार्थियों को राधानगर विद्यालय या बरहरवा विद्यालय में इंटर की पढ़ाई के लिए जाना पड़ता है जिससे अभिभावक पर आर्थिक बोझ एवं विद्यार्थियों की यातायात परेशानियां बढ़ती है। +2 की माँग पिछले कुछ सालों से स्कूल प्रशासन एवं स्कूल कमेटी द्वारा तथा क्षेत्र वासियों द्वारा की जा रही है। एनएसयूआई आपसे अनुरोध करती है कि उपरोक्त बिंदु पर यथाशीघ्र पहल की जाए एवं शिक्षा को एक नई दिशा की ओर ले जाया जाए। जिससे विद्यार्थी बिना किसी रुकावट के अपनी आगे की पढ़ाई को जारी रखा सके। एनएसयूआई छात्र नेता सोयेब अख्तर ने बताया कि यह एक ग्रामीण क्षेत्र है एवं इस इलाके में प्लस टू विद्यालय नहीं होने के कारण कई छात्र घर की स्थिति अर्थात आर्थिक स्थिति के कारण इंटरमीडिएट की पढ़ाई पूरी नहीं कर पाते हैं। अगर नजदीक में विद्यालय होंगे तो उन्हें समय की बचत होगी। खासकर लड़कियों के लिए ज्यादा समस्याएं हो रही है प्लस टू विद्यालय दूर होने के कारण अभिभावक असुरक्षित महसूस करते हैं। जिससे छात्रों की शैक्षणिक बाधा उत्पन्न हो जाती है।

मौके पर एनएसयूआई प्रदेश सोशल मीडिया अध्यक्ष थॉमस रॉबर्ट, एनएसयूआई सदस्य मोहताजुल हक, वसीम अकरम, समीउल्लाह शेख, आदि उपस्थित थे।

लिट्टीपाड़ा प्रखंड के विभिन्न सचिवालय में पीएम जनमन और धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत विशेष शिविर आयोजित हुआ

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो

लिट्टीपाड़ा (पाकुड़)। लिट्टीपाड़ा प्रखंड के ग्राम पंचायत सचिवालय लिट्टीपाड़ा मे ग्राम कुमारभाजा, धूंधा पहाड़ी, हेठबंधा और लिट्टीपाड़ा के लिए पीएम- जनमन और धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत विशेष शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर का विधिवत उद्घाटन अनुमंडल पदाधिकारी साइमन मरांडी, मुखिया शिव टुडू, प्रखंड पंचायत राज पदाधिकारी कमल पहाड़िया और प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी मानिक दास द्वारा द्वीप प्रज्वलित कर किया।

इस शिविर में विभिन्न विभागों द्वारा लगाये गये स्टॉल के माध्यम से लोगों को योजनाओं की जानकारी दी गई

और उनका आवेदन लिया गया।

शिविर में आधार कार्ड, राशन कार्ड, आयुष्मान कार्ड, जाति प्रमाण पत्र, स्थानीय प्रमाण पत्र, किसान क्रेडिट कार्ड, पीएम किसान योजना, जन-धन खाता, सुकन्या योजना, विधवा पेंशन, विकलांग पेंशन, सिकल सेल, मनरेगा सहित कई योजनाओं से संबंधित स्टॉल लगाए गए। वहीं कुछ ग्रामीणों के आवेदनों को तत्काल ही मौके पर लाभ देते हुये 13 लाभुकों को मनरेगा जॉब कार्ड, राशन कार्ड और जाति -निवासी प्रमाण पत्र का वितरण अनुमंडल पदाधिकारी द्वारा किया गया। इस पी.एम- जनमन एवं धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान के तहत लाभ वितरण शिविर में ग्रामीणों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

इस मौके पर अनुमंडल पदाधिकारी साइमन मरांडी ने कहा कि केंद्र और सरकार का उद्देश्य है कि दूर-दराज के आदिवासी समुदाय को बुनियादी सुविधाएं सहज रूप से उपलब्ध हो और सरकारी लाभो का पूर्ण पहुँच सुनिश्चित करके आदिवासी समुदाय को सशक्त बनाना ही सरकार का उद्देश्य है। उन्होंने ग्रामीणों को इन योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की।

शिविर में मुख्य रूप से प्रखंड कल्याण /क़ृषि पदाधिकारी के. सी. दास, प्रखंड कार्यक्रम प्रबंधक (जे.एस.एल.पी. एस) के जन्मजय बाउरी, पंचायत सचिव कुंदन कुमार, रोजगार सेवक वसीम अंसारी, मिथिलेश सिंह सहित कई पदाधिकारी गण कर्मी और ग्रामीण लाभुक उपस्थित थे।

मंईयां सम्मान योजना पर गुस्से में जयराम! 2500 की खैरात नहीं 25000 की नौकरी दे सरकार

संवाददाता द्वारा

रांची। झारखंड में मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना की चर्चा हर तरफ है. सरकार इस योजना को बेटियों के सम्मान से जुड़ा बताती है तो दूसरी ओर विपक्षी दल योजना पर ही सवाल उठा रही है. अब डुमरी विधायक जयराम महतो ने तो कड़े तेवर में हेमंत सरकार पर सवाल उठा दिया है.और इसे नौकरी से जोड़ दिया है. ऐसे में साफ है कि झारखंड में घमासान मचने वाला है. विभाग सभी को पैसा देने का दावा कर रहा है तो दूसरी ओर मंईयां सड़क पर परेशान घूम रही है.

इसी बीच अब जयराम महतो ने

अपने सोशल साइट एक्स पर पोस्ट कर मंईयां योजना पर सवाल उठाया है. सीधे लिखा है कि 2500 की खैरात नहीं 25 हजार की नौकरी चाहिए. सरकार महिलाओं को गुमराह करने का काम कर रही है. आखिर कब तक ऐसे ही अपने वादे से सरकार मुकरती रहेगी. रोजगार के नाम पर कुछ नहीं किया जा रहा है. इस सरकार के खिलाफ अब आवाज उठाने का समय है. गुमराह कर बड़ा खेल चल रहा है.

अगर देखें तो देश की सबसे बड़ी योजना की शुरुआत हेमंत सरकार ने किया. इसमें शरूआत में 56 लाख 61 हजार लोगों को लाभ दिया गया. बाद में इस योजना से कई लोगों बाहर किया गया. क्योंकि कई अपात्र लोग इस योजना से जुड़ गए थे. जिन्हें सत्यापन के बाद योजना से बाहर कर दिया गया. अब सभी को योजना की किस्त खाते में भेजी जा रही है. हालांकि अभी भी लाखों में ऐसी लाभूक है. जिन्हे योजना के किस्त का इंतजार है. कब उन्हें पैसा भेजा जाएगा. बीते चार जून को योजना की लाभूक को 9वीं किस्त विभाग ने भेज दिया. अब इंतजार 10 वीं किस्त का किया जा रहा है.

श्रवण के प्रत्येक सोमवारी को संस्था करेंगी भक्तों के बीच नि:शुल्क पूजन समाग्री का वितरण

- शहर के अन्नपूर्णा कॉलोनी में संस्था की बैठक हुई संपन्न
- पूजन सामग्री को लेकर मंदिरों में शिविर लगाए जाने पर चर्चा

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो

पाकुड़। शहर के अन्नपूर्णा कॉलोनी स्थित हनुमान मंदिर परिसर में सत्य सनातन संस्था की बैठक रविवार की शाम को संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता संस्था के अध्यक्ष रंजीत कुमार चौबे ने किया। बैठक में पवित्र श्रवण माह के अवसर पर मंदिरों में शिविर लगाकर पूजन सामग्री वितरण व रथ यात्रा को सफल बनाए जाने पर चर्चा की गई। अध्यक्ष रंजीत कुमार चौबे ने कहा कि पवित्र श्रावण माह के प्रत्येक सोमवरी को संस्था की ओर से सेवा शिविर लगा कर निशुल्क पूजन सामग्री वितरण किया जाएगा। भगतपाड़ा शिव मंदिर में जिला अध्यक्ष हर्ष भगत, सत्यम भगत, विशाल भगत , रवि भगत, रतन साहा, कुड़ापाड़ा स्थित बाबा नागेश्वर नाथ मंदिर में संस्था के उपाध्यक्ष गौतम कुमार ,मिंटू गिरी, दूधनाथ मंदिर में पुरोहित रोहित दास, रेलवे कॉलोनी स्थित शिव मंदिर में अमित साहा, सानू रजक को निःशुल्क पूजन सामग्री वितरण के लिए जिम्मेवारी दी गई। शिविर में सुबह 7 बजे से 11 बजे तक भक्तों के बीच निशुल्क बेलपत्र, कच्चा दूध, गंगा जल एवं पुष्प का वितरण किया जाएगा। मंगलवार की संध्या को हनुमान मंदिर में संस्था की ओर से हनुमान चालिसा का आयोजन किया जाएग। इसके अलावे आगामी 27 जून को निकलने वाले रथ यात्रा को सफल बनाने के लिए संस्था के सदस्य सक्रिय रहेंगे। मेले में सुरक्षा व्यवस्था को बढाये जाने को लेकर एसपी को आवेदन सौंपा जाएगा। मौके पर संस्था के सचिव चंदन प्रकाश, उपाध्यक्ष गौतम कुमार, कोषाध्यक्ष अमर ठाकुर, जिला अध्यक्ष - हर्ष भगत, संदीप त्रिवेदी, मिंटू गिरी, रतन साहा, राकेश सिंह, राकेश मुलायम सिंह, रोहित दास ,चंदन रक्षित, संतोष टेबरीवाल, अक्षय चौरसिया, मास्टर विजय , शुभम गुप्ता, वरीय सदस्य-कालीचरण घोष सहित अन्य उपस्थित थे।

पति ने पत्नी को मारपीट कर किया घायल, पुलिस जांच में

आदिवासी एक्सप्रेस W . Alam

साहिबगंज। गंगा थाना क्षेत्र अंतर्गत रामपुर दियरा गांव में रविवार की रात पति के द्वारा पत्नी को प्रताड़ित कर व मारपीट कर किया घायल.जहाँ घायल महिला ने इलाज के लिए आई सदर अस्पताल बताया जा रहा है कि रामपुर दियारा गांव निवासी नकुल सिंह के 25 वर्षीय पत्नी रिंकी देवी को शराब के नशे में आकर मारपीट कर घायल कर दिया घायल रिंकी देवी कि मा सुलेखा देवी ने आरोप लगाते हुए बताई की हमारी बेटी रिंकी देवी के पति नकुल सिंह कहता है कि हम तुम्हारी बेटी को नहीं रखेंगे हम दूसरे शादी करेंगे इस बात पर पत्नी के साथ विवाद होने पर पत्नी को लाठी डंडा से आए दिन मारपीट करता है जहां रविवार की रात भी मारपीट कर घायल कर दिया, घायल महिला ने गंगा थाना पहुंचकर मामले को दर्ज कराया गंगा थाना पुलिस के द्वारा इलाज के लिए सदर अस्पताल भेजा घायल महिला का इलाज सदर में डॉक्टर के देखरेख में किया गया. पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुटी है।

DMFT मद से संचालित योजनाओं की समीक्षा बैठक संपन्न- उपायुक्त हेमंत सती ने दिए कार्यों में गति लाने एवं पारदर्शिता बरतने के निर्देश

अजय कुमार कुशवाहा
आदिवासी एक्सप्रेस जिला ब्यूरो

साहिबगंज जिला खनिज फाउंडेशन ट्रस्ट (DMFT) मद से संचालित विभिन्न योजनाओं की समीक्षा को लेकर आज उपायुक्त हेमंत सती की अध्यक्षता में कार्यालय प्रकोष्ठ में समीक्षा बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में पुलिस अधीक्षक अमित कुमार सिंह, उप विकास आयुक्त सतीश चंद्रा, अपर समाहर्ता गौतम भगत, सिविल सर्जन डॉ. प्रवीण कुमार संथालिया, जिला पंचायती राज पदाधिकारी अनिल कुमार, जिला शिक्षा अधीक्षक कुमार हर्ष, नगर

प्रशासक अभिषेक कुमार सिंह, कार्यपालक अभियंता समेत अन्य वरीय पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

बैठक के दौरान उपायुक्त ने विगत बैठक में दिए गए निर्देशों के अनुपालन की समीक्षा की और अब तक की प्रगति की जानकारी ली। उन्होंने संबंधित अधिकारियों से योजनाओं की अद्यतन स्थिति, व्यय की प्रगति, निर्माणाधीन कार्यों की स्थिति एवं लाभार्थियों को मिलने वाले लाभ पर विस्तृत रिपोर्ट प्राप्त की। उपायुक्त ने कहा कि DMFT मद से संचालित योजनाओं का उद्देश्य खनन प्रभावित क्षेत्रों में जीवन स्तर को सुधारना है, इसलिए प्रत्येक योजना की गुणवत्ता और पारदर्शिता पर विशेष ध्यान दिया जाए।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिया कि जिन योजनाओं की स्वीकृति मिल चुकी है, उनका कार्य प्रारंभ करते हुए समयबद्ध ढंग से पूरा किया जाए। साथ ही जिन योजनाओं में किसी प्रकार की अड़चन आ रही है, उसकी स्पष्ट रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए ताकि समय रहते समाधान किया जा सके।

बैठक के दौरान जिला खनिज फाउंडेशन ट्रस्ट, साहेबगंज की प्रबंधकीय समिति की बैठक भी आयोजित की गई, जिसमें कई महत्वपूर्ण प्रस्तावों को स्वीकृति दी गई। इनमें शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, संपर्क पथ, स्वच्छता एवं आजीविका संवर्द्धन से संबंधित योजनाएं प्रमुख थीं। समिति ने जनहित को ध्यान में रखते हुए योजनाओं के शीघ्र क्रियान्वयन हेतु कार्यपालक एजेंसियों को जिम्मेदारी सौंपी।

पुलिस अधीक्षक श्री अमित कुमार सिंह ने खनन प्रभावित क्षेत्रों में कानून व्यवस्था एवं जन सुरक्षा के दृष्टिकोण से आवश्यक सुझाव दिए। उन्होंने कहा कि DMFT योजनाओं से स्थानीय युवाओं को जोड़कर उन्हें सकारात्मक दिशा देने की आवश्यकता है।

उपायुक्त श्री हेमंत सती ने बैठक के सभी पदाधिकारियों को निर्देशित किया कि योजनाओं के क्रियान्वयन में किसी भी प्रकार की लापरवाही या विलंब को गंभीरता से लिया जाएगा। उन्होंने लाभुकों तक योजनाओं का सीधा और वास्तविक लाभ पहुँचाने की बात कही और कार्यों की नियमित मॉनिटरिंग सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

मारवाड़ी युवा मंच द्वारा रक्तदान एवं स्वास्थ्य शिविर का आयोजन, 23 यूनिट रक्त संग्रह किया गया

● **रक्तदान जीवनदान है, यह मानवता की सबसे बड़ी सेवा है : अनिकेत जैन**

● **युवाओं की भागीदारी से ही समाज में बदलाव संभव है: लखन खण्डेलवाल**

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। मारवाड़ी युवा मंच हजारीबाग शाखा द्वारा सोमवार को अग्रसेन भवन के सभागार में एक दिवसीय रक्तदान एवं स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। समाज सेवा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को निभाते हुए मंच द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया और सेवाभाव का परिचय दिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन श्रीनिवास हॉस्पिटल के सेक्रेटरी प्रवीण श्रीनिवास एवं वरिष्ठ समाजसेवी नीरज अग्रवाल ने संयुक्त रूप से किया। मंच के पदाधिकारियों एवं सदस्यों की उपस्थिति में कार्यक्रम का शुभारंभ उत्साहपूर्ण माहौल में हुआ। कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु मारवाड़ी युवा मंच के द्वारा संयोजक बनाया गया था जिसमें कोषाध्यक्ष बादल गोयल, विनीत मुनका शामिल थे. स्वास्थ्य शिविर में शहरवासियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। बीपी, शुगर, नेत्र एवं डेंटल जांच की मुफ्त सुविधा उपलब्ध कराई गई, जिसमें 50 से भी अधिक लोगों ने अपना स्वास्थ्य परीक्षण कराया। इस शिविर की व्यवस्था श्रीनिवास हॉस्पिटल द्वारा की गई थी, जबकि नेत्र जांच में टाइटन आई प्लस का तकनीकी सहयोग प्राप्त हुआ। रक्तदान शिविर में कुल 23 स्वैच्छिक रक्तदाताओं ने हिस्सा लिया, जिन्होंने मानवता की सेवा में योगदान देते हुए प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया। रक्तदाताओं में

बिपाशा अग्रवाल, राहुल कुमार, शुभम अग्रवाल, मोहित शर्मा, अमन कुमार अग्रवाल, पीयूष खंडेलवाल, शुभम मुनका, आदर्श अग्रवाल, हरि प्रकाश बूबना, अंकित कुमार, दीपक कुमार खंडेलवाल, रूपेश कुमार, सज्जन अग्रवाल, अनुभव कुमार, रवि यादव, नितिन खंडेलवाल, आदित्य खंडेलवाल, अभिषेक गोकोलका, कृष अग्रवाल, चेतन पोद्दार, प्रतीक, सुमित खंडेलवाल एवं संबित खंडेलवाल शामिल है. रक्त संग्रहण की व्यवस्था शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज ऑफ अस्पताल के सहयोग से की गई थी। सभी रक्तदाताओं को मंच की ओर से प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के सफल आयोजन के उपरांत मंच के अध्यक्ष अनिकेत जैन ने कहा कि रक्तदान जीवनदान है और ऐसे सेवा कार्यों से समाज में जागरूकता एवं सकारात्मक सोच को बढ़ावा मिलता है। उन्होंने कहा कि मारवाड़ी युवा मंच निरंतर समाज सेवा के कार्यों में संलग्न रहेगा और भविष्य में भी इस प्रकार के आयोजन करता रहेगा। मंच के सचिव लखन खंडेलवाल ने कहा कि युवाओं की भागीदारी ही किसी भी सामाजिक पहल को सफल बनाती है और हजारीबाग के युवाओं ने यह साबित कर दिया की वे समाज के प्रति सजग और संवेदनशील हैं। उन्होंने सभी रक्तदाताओं, चिकित्सकों, तकनीकी स्टाफ एवं सहयोगी संस्थाओं का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के सफल संचालन में मंच के सभी सदस्यों की सराहनीय भूमिका रही। कार्यक्रम को सफल बनाने में अध्यक्ष अनिकेत जैन,सचिव लखन खण्डेलवाल, कोषाध्यक्ष बादल गोयल, पूर्व अध्यक्ष सीए विनीत अग्रवाल, पूर्व सचिव पीयूष खंडेलवाल,विनीत मुनका,दीपक कुमार खंडेलवाल उर्फ मोनू,आदित्य खंडेलवाल एवं निर्मल जैन सहित कई लोगों ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना सहयोग किया।

गिरिडीह उपायुक्त ने स्वास्थ्य विभाग के अंतर्गत प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन (पीएम अभीम) और 15वें वित्त आयोग से संबंधित कार्यों की समीक्षा की, दिए जरूरी दिशा-निर्देश

● **स्वास्थ्य विभाग के अंतर्गत विभिन्न सीएचसी-एचएससी निर्माण कार्य के प्रगति की समीक्षा कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए**

● **स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर बनाना जिला प्रशासन की प्राथमिकता है, इस कार्य में किसी भी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं की जायेगी: उपायुक्त रामनिवास यादव**

● **स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधारात्मक प्रयास किए जाएंगे, जिससे आमजनों को सुगमता पूर्वक स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ मिल सकें: उपायुक्त रामनिवास यादव**

गिरिडीह, प्रतिनिधि। समाहरणालय सभागार में जिला उपायुक्त रामनिवास यादव की अध्यक्षता में स्वास्थ्य विभाग के अंतर्गत प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन (पीएम अभीम), हॉस्पिटल मैनेजमेंट, 15वें वित्त आयोग के सफल क्रियान्वयन व संचालन को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक संपन्न हुई। उपायुक्त ने स्वास्थ्य विभाग में उपलब्ध संसाधनों का बेहतर उपयोग करने और सेवा की गुणवत्ता में सुधार लाने पर जोर दिया। साथ ही उपायुक्त ने सभी स्वास्थ्य कर्मियों को सजग और संवेदनशील होकर कार्य करने और अधिक से अधिक लोगों तक योजनाओं का लाभ पहुंचाने पर बल दिया। बैठक में, पीएम-अभिम योजना और 15वें वित्त आयोग के तहत जारी कार्यों की समीक्षा भी की गई, जिसमें स्वास्थ्य विभाग के अंतर्गत विभिन्न सीएचसी-एचएससी निर्माण कार्य के

प्रगति की समीक्षा कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। इसके अलावा स्वास्थ्य विभाग के (पीएम अभीम) योजनान्तर्गत निर्माणाधीन स्वास्थ्य केन्द्र भवन निर्माण की समीक्षा के क्रम में कार्य एजेन्सी कार्यपालक अभियंता एन0आर0ई0पी0 / विशेष प्रमंडल/ भवन प्रमंडल को निदेशित किया गया कि कार्यों में तेजी लाया जाय। सिविल सर्जन को निदेशित किया गया कि जिन केन्द्रों के लिए भूमि उपलब्ध कराने में समस्या हो रही है, उनमें संबंधित अंचल अधिकारी एवं अनुमण्डल पदाधिकारी से समन्वय स्थापित करते हुए भूमि उपलब्ध कराया जाय। साथ ही उन्होंने कहा कि जिन यूनिट्स का निर्माण कार्य अपूर्ण है उन्हें जल्द पूरा करायें तथा जिनमें निर्माण कार्य पूर्ण हो गया है उसे योजनाबद्ध रूप से संचालन करें ताकि आम नागरिकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा मिले। उपायुक्त ने सभी कार्यकारी एजेंसियों को योजनाओं को प्राक्कलन के अनुसार समयबद्ध रूप से पूर्ण करने का निर्देश दिया। साथ ही उपायुक्त ने सभी सम्बंधित पदाधिकारियों को योजनाओं की गुणवत्ता पर ध्यान देने की बात कहीं। इसके अलावा उपायुक्त ने सिकल सेल रोग की रोकथाम और प्रबंधन के लिए चल रहे कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने सभी विभागों को समन्वय में काम करने का निर्देश दिया और स्कूलों, ग्रामीण क्षेत्रों और आंगनवाड़ी केंद्रों में स्क्रीनिंग अभियान चलाने का भी निर्देश दिया। उपायुक्त ने कहा कि सभी अस्पतालों में डॉक्टर की नियमित उपस्थिति होनी चाहिए, ताकि स्वास्थ्य सेवाएं प्रभावित न हो। उन्होंने कहा कि जिले में स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर बनाना जिला प्रशासन की प्राथमिकता है। ताकि यहां के मरीजों को स्वास्थ्य सुविधाएं सुगम रूप से मिलें। उन्होंने सभी संबंधित अधिकारियों को सख्त निर्देश दिया कि इस कार्य में किसी भी प्रकार की कोताही या लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इसके अलावा उपायुक्त ने कहा कि कोई बच्चा न छुटे, इसलिए नियमित टीकाकरण जरूरी है, साथ ही हरेक। बच्चे का वजन मापी भी कराएं। इसके साथ ही सभी अस्पतालों/नर्सिंग होम में संस्थागत प्रसव के निर्धारित लक्ष्य को शत-प्रतिशत पूरा करें। बैठक में वर्ल्ड हेल्थ आर्गेनाईजेशन के चिकित्सक डॉ अमित कुमार तिवारी के द्वारा प्रजेंटेशन के माध्यम से सभी अधिकारियों को जानकारी उपलब्ध कराई गई। उन्होंने कहा कि सिकल सेल रोग एक आनुवंशिक रक्त विकार है जो लाल रक्त कोशिकाओं को प्रभावित करता है। यह रोग गंभीर दर्द, संक्रमण और अंगों को नुकसान पहुंचा सकता है। सिकल सेल रोग के बारे में जागरूकता बढ़ाकर और समय पर स्क्रीनिंग और उपचार प्रदान करके, इस बीमारी को नियंत्रित किया जा सकता है। इसके अलावा उन्होंने नेशनल टीबी, ई संजीवनी पोर्टल, एनीमिया मुक्त भारत, टीबी मुक्त पंचायत, निश्चय मित्र, एएनसी रजिस्ट्रेशन, इंस्टीट्यूशनल डिलीवरी, टीकाकरण आदि के बारे पीपीटी के जरिए विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई। बैठक में उप विकास आयुक्त, सिविल सर्जन, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी, जिला शिक्षा अधीक्षक, कार्यपालक अभियंता, भवन प्रमंडल, ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, एन.आर.ई.पी, सभी एमओआईसी, डॉ अमित तिवारी, एसएमओ, डब्लूएचओ, डीपीएम, एनएचएम आदि संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

आजसू पार्टी ‘नौकरी दो सरकार’ अभियान की करेगी शुरुआतः संजय मेहता

गिरिडीह, प्रतिनिधि। आजसू पार्टी सरकार नौकरी दो अभियान की शुरुआत करेगी। आजसू पार्टी के वरीय नेता संजय मेहता ने प्रेस कांफ्रेंस में मीडिया को संबोधित करते हुए बताया की पार्टी ‘नौकरी दो सरकार’ अभियान की शुरुआता करेगी। इसके तहत सरकार से हम नौकरी का हिसाब लेंगे। सरकार ने निजी क्षेत्र में 75 प्रतिशत आरक्षण का विधेयक लाया था। उसका अनुपालन क्यों नहीं हुआ, सरकार ने आउटसोर्सिंग क्षेत्र में भी 75 प्रतिशत आरक्षण का विधेयक लाया है उसका अनुपालन क्यों नहीं हो रहा है। सरकार स्थानीय को निजी क्षेत्र में नौकरी की बात कहती है। लेकिन राज्य की स्थानीय नीति कहाँ है। सरकार कानून बनाकर ख़ुद ही अपने लोगों से कोर्ट जाकर कानूनों में पेंच फँसाती है और हक़ देने के समय बहानेबाजी करती है। सरकार की बहानेबाजी अब नहीं चलेगी। आजसू अब नौकरी का हिसाब माँगेगी। सरकार ने कितनी नौकरी दी है उसका आँकड़ा सरकार जारी करे। यह आँकड़ा आम जनमानस को भी जानने का अधिकार है।

हर कंपनी, आयोग से लेंगे हिसाब, दिया जाएगा ज्ञापन

संजय मेहता ने बताया की आजसू पार्टी सभी निजी कंपनियों, खनन क्षेत्र की कंपनियों से

स्थानीय को नौकरी देने का हिसाब और आँकड़ा माँगेगी। साथ ही झारखंड सरकार के परीक्षा आयोगों से भी पार्टी सवाल पूछेगी। सरकार नौकरी के नाम पर युवाओं को ठग रही है। हम नौजवानों के सपने को मरने नहीं देंगे और मुखरता से नौजवानों के सवालों को जनता के बीच रखेंगे। आउटसोर्सिंग कंपनियों के माध्यम से आरक्षण को मारा जा रहा है। ठेकादारी प्रथा के कारण शोषण बढ़ा है। संविदाकर्मियों का स्थायीकरण का मामला सरकार लटका कर रखना चाहती है। राज्य के अंदर श्रम कानूनों का पालन नहीं हो रहा है। मजदूरों का शोषण और पलायन बढ़ा है। राज्य के 2 करोड़ से ज़्यादा आबादी के युवा आज रोजगार के नाम पर ठगे जा रहे हैं। आजसू पार्टी ने बलिदान दिवस के आयोजन के बाद अपने सभी कार्यकर्ताओं, पंचायत कमिटी के सदस्यों, प्रखंड कमिटी के सदस्यों, सभी जिला अध्यक्षों, केंद्रीय कमिटी के सदस्यों, एक-एक कार्यकर्ताओं, मीडिया के साथियों का आभार प्रकट किया। पार्टी के मुख्य प्रवक्ता देवशरण भगत ने पार्टी मुख्यालय में आयोजित प्रेस कांफ्रेंस में आजसू पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष सुदेश महतो और पार्टी की तरफ़ से सभी कार्यकर्ताओं एवं सहयोगियों के मेहनत की सराहना की। इस दौरान उन्होंने कहा पार्टी ने बलिदान दिवस के माध्यम से झारखंड के मसलों पर अपने विचारों को रखा है। झारखंड में स्थानीयता, नियोजन, पुनर्वास, नियुक्ति, परीक्षा, परिणाम, नियुक्ति कैलेंडर, ओबीसी आरक्षण, निजी क्षेत्र में आरक्षण, आउटसोर्सिंग में आरक्षण, आउटसोर्सिंग नियुक्ति से सरकारी नियुक्तियों का मारा जाना, पेसा क़ानून, सरना धर्म कोड, जमीन अधिग्रहण, मुआवजा, सीएनटी, एसपीटी, नौकर शाही का निचला स्तर, करप्शन, कंपनियों की मनमानी, झारखंड आंदोलनकारियों के बीच पहचान का संकट, क़ानून व्यवस्था की चिंताजनक स्थिति, मइयाँ सम्मान योजना को बिना स्पष्ट क़ानून और विधिक प्रक्रिया के लागू किए जाने के मसले को पार्टी ने प्रमुखता से उठाया है। इन सवालों पर पार्टी मुखरता से संघर्ष करेगी। वर्तमान सरकार जनमुद्दों का समाधान नहीं कर पायी है। राज्य में लगातार हत्या और गोलीबारी की घटनाओं से आम जनमानस में भय व्यापत हुआ है। स्थानीयता और नियोजन का मसला लटका पड़ा है। ऐसे में आजसू आम जनमानस की आवाज बनकर संघर्ष को तेज करेगी। सरकार मइयां सम्मान योजना के साढ़े पाँच लाख लाभुकों का नाम काट दी है। यदि वे योग्य नहीं थे तो सरकार ने किस आधार उनका चयन किया था। यदि यह प्रशासनिक भूल थी तो इसके लिए किस नौकरशाह को सजा दी गई। सरकार ने मईयाँ सम्मान योजना के चयन और नाम हटाने का कोई आधार नहीं बताया है। इसकी कोई स्पष्ट पॉलिसी नहीं है। आजसू पार्टी सभी माँ बहनों के सम्मान में खड़ी है। लेकिन किसी का योग्य लाभुक के तौर पर चयन करना और फिर उनका नाम हटा देना यह मइया का अपमान है।

30 जून हूल दिवस, 08 अगस्त निर्मल महतो शहादत दिवस, 09 अगस्त विश्व आदिवासी दिवस को होंगे कार्यक्रम

आजसू पार्टी 30 जून को हूल दिवस, 08 अगस्त को निर्मल महतो शहादत दिवस, 09 अगस्त को विश्व आदिवासी दिवस के दिन कार्यक्रम आयोजित करेगी। यह आयोजन कोल्हान, संथाल और उत्तरी छोटानागपुर में होगा। पार्टी के नेताओं ने कहा की बलिदान दिवस के माध्यम से राज्य के कोने कोने से आए युवाओं ने एक नई क्रांति का बिगुल फूँका है। नौजवानों की पीड़ा का हम प्रतिनिधित्व करेंगे। इस दौरान झारखंड आंदोलनकारी राजेंद्र मेहता, ज्ञान सिन्हा उपस्थित रहे। पार्टी में नए जुड़े ऋतुराज शाहदेव का स्वागत किया गया।

नगर भवन में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं अभियान के तहत बाल सुरक्षा तंत्र को सुदृढ़ करने के लिए किशोर न्याय (बालकों की देखरेख एवं संरक्षण) अधिनियम, 2015 के तहत् बाल संरक्षण के विभिन्न मुद्दों (बाल विवाह, बाल व्यापार, बाल मजदूरी, पॉस्को एवं इंडिविजुअल ग्रुप फोस्टर केयर, आफ्टर केयर पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

गिरिडीह, प्रतिनिधि। नगर भवन गिरिडीह में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं अभियान के तहत बाल सुरक्षा तंत्र को सुदृढ़ करने के लिए किशोर न्याय (बालकों की देखरेख एवं संरक्षण) अधिनियम, 2015 के तहत् बाल संरक्षण के विभिन्न मुद्दों (बाल विवाह, बाल व्यापार, बाल मजदूरी, पॉक्सो एवं इंडिविजुअल ग्रुप फोस्टर केयर आफ्टर केयर पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ मुख्य अतिथि के रूप में शामिल जिला उपायुक्त रामनिवास यादव के द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य किशोर न्याय (बालकों की देखरेख एवं संरक्षण) अधिनियम, 2015 के प्रावधानों के अनुसार, बाल संरक्षण के विभिन्न पहलुओं पर जागरूकता बढ़ाने और संबंधित अधिकारियों को सशक्त बनाना है। प्रशिक्षण में बाल विवाह के हानिकारक प्रभावों और इससे संबंधित कानूनी प्रावधानों पर प्रकाश डाला गया। इस दौरान बाल व्यापार के खतरे, इसके कारणों, और पीड़ितों की सुरक्षा के उपायों, बाल मजदूरी के खिलाफ कानूनी प्रावधानों, बाल श्रमिकों की सुरक्षा, और पुनर्वास के तरीकों, यौन शोषण से बच्चों को बचाने के लिए कानूनी प्रावधानों, बाल-अनुकूल प्रक्रियाओं, और बाल संरक्षण में अधिकारियों की भूमिका

पर चर्चा की गई। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक, उप विकास आयुक्त, सभी अनुमंडल पदाधिकारी, गिरिडीह जिला समेत समाज कल्याण और बाल संरक्षण इकाई के पदाधिकारी व अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे। मौके पर उपायुक्त रामनिवास यादव ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि बाल सुरक्षा तंत्र को सुदृढ़ करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। किशोर न्याय (बालकों की देखरेख और संरक्षण) अधिनियम, 2015 के प्रावधानों के अनुसार, बाल संरक्षण के विभिन्न पहलुओं पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया है। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम, बाल विवाह, बाल व्यापार, बाल मजदूरी, यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण पॉस्को, व्यक्तिगत और सामूहिक फोस्टर केयर, और आफ्टर केयर जैसी महत्वपूर्ण बाल संरक्षण संबंधी समस्याओं पर केंद्रित है। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य, बाल संरक्षण से जुड़े अधिकारियों और कर्मचारियों को बाल संरक्षण के विभिन्न मुद्दों पर अद्यतित ज्ञान और कौशल प्रदान करना है, ताकि वे बच्चों के अधिकारों की बेहतर ढंग से रक्षा कर सकें। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम, किशोर न्याय अधिनियम, 2015 के तहत, बच्चों के सर्वोत्तम हित को सुनिश्चित करने के लिए, बाल-अनुकूल प्रक्रियाओं को बढ़ावा देने में भी मदद करेगा।

बाल संरक्षण समिति एवं बाल कल्याण समिति को बेहतर समन्वय स्थापित करते हुए निम्नलिखित निर्देशों का अनुपालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं

1. पंचायत क्षेत्र में बच्चों के लिए सुरक्षित सार्वजनिक स्थान और बच्चों के अनुकूल वातावरण सुनिश्चित करना। 2. महिलाओं और बच्चों से संबंधित योजनाएँ ग्राम पंचायत विकास योजना में शामिल करने के लिए ग्राम पंचायतों की आवश्यक सुझाव एवं सलाह देना। 3. पंचायत क्षेत्र में बच्चों के लिए कल्याण एवं संरक्षण संबंधी योजनाओं और कार्यक्रमों के कार्यान्वयन का निरीक्षण और मूल्यांकन। 4. पंचायत क्षेत्र में विकट एवं कठिन परिस्थितियों में रहने वाले विशेष आवश्यकता वाले सभी बच्चों, अनाथों, आवारा बच्चों आदि का सर्वेक्षण और उचित कार्रवाई सुनिश्चित करना ताकि कोई भी बच्चा छूट न जाये। 5. पंचायत क्षेत्र में अनियंचित, स्कूल छोड़ने पाले, तस्करी के शिकार, प्रवासी, भिखारी और अनाथ बच्चों की स्थिति पर चर्चा करना और उनके कल्याण के लिए उचित कार्रवाई करना। 6. पंचायत क्षेत्र में बाल अधिकारों को बढ़ावा देने और बाल संरक्षण सुनिश्चित करने के लिए विशेष जागरूकता अभियान चलाना। 7. किशोर न्याय अधिनियम/नियमों के तहत डीसीपीयू, सीवब्ल्यूसी, जेजेबी और एसजेपीयू को उनकी भूमिका निभाने में सहायता करना। 8. पंचायत क्षेत्र में किशोर न्याय और बाल संरक्षण के लिए वालंटरिज्म को बढ़ावा देना। मौके पर पुलिस अधीक्षक डॉ बिमल कुमार भी मौजूद थे।

संक्षिप्त समाचार

महाप्रबंधक द्वारा सेन्ट्रल सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल, पटना में डायलिसिस यूनिट का शुभारंभ

संवाददाता द्वारा

हाजीपुर। आज दिनांक 23.06.2025 को महाप्रबंधक श्री छत्रसाल सिंह द्वारा सेन्ट्रल सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल, पटना के डायलिसिस यूनिट में एक नवीन डायलिसिस मशीन का शुभारंभ किया गया। इस नवीन डायलिसिस मशीन के चालू होने से और अधिक किडनी रोग पीड़ित मरीजों को डायलिसिस की सुविधा प्राप्त हो सकेगी। इससे प्रतिदिन पहले से ज्यादा किडनी के मरीज लाभान्वित हो सकेंगे। इस अवसर पर डा. कौशल कुमार, अपर मुख्य चिकित्सा निदेशक/नेफ्रो के द्वारा किडनी रोग मरीजों के बारे में जानकारी दी गई और उनके इलाज में डायलिसिस विधि से उनकी स्वास्थ्य में सुधार के बारे में भी अवगत कराया गया । इस अवसर पर प्रधान मुख्य चिकित्सा निदेशक डॉ. यू.के.पेरूमाल, चिकित्सा निदेशक, सेन्ट्रल सुपर स्पेशियलियटी हॉस्पिटल डॉ. सुबोध कुमार मिश्रा, मंडल रेल प्रबंधक, दानापुर श्री जयंत कुमार चौधरी एवं सभी प्रमुख विभागाध्यक्ष एवं अस्पताल के अन्य चिकित्सकगण उपस्थित थे।

चांदन मार्ग पर बने गड्ढे दुर्घटना को दे रहे आमंत्रण

सं सू पंकज कुमार ठाकुर।

चांदन (बांका) एक और जहां विश्व प्रसिद्ध श्रावणी के शुभारंभ होते ही पक्की सड़कों से होकर कावंरिया वाहनों का लंबा काफिला शुरू हो जाएगा। वहीं दूसरी और चांदन कटोरिया मुख्य सड़क के एसबीआई बैंक चांदन और तिवारी चौक के बीच सड़क पर बने गड्ढे व जल जमाव की समस्या उत्पन्न हो गई है। सड़क पर बने गड्ढे में जल जमाव होने से दुर्घटना को खुला आमंत्रण दे रहा है। सालों से यहां जर्जर हालत में सड़क रहने के कारण मामूली वर्षा से सड़क पर जल जमाव की समस्या उत्पन्न हो जाती है। सड़क पर बने गड्ढे में फंसकर की छोटी-बड़ी दुर्घटना कई बार हो चुकी है। बाबजूद जिम्मेदार मौन धारण कर बैठे हुए हैं। श्रावणी मेला शुरू होने से पहले भी प्रतिदिन सैकड़ों छोटी -बड़ी वाहन इसी सड़क से गुजरती है। बावजूद इसके अबतक इस समस्या का निदान नहीं हुआ है। स्थानीय लोगों व वाहन चालकों ने जिला प्रशासन से जनहित से जुड़ी इस समस्या का शीघ्र निदान कराने की मांग की है।

सोशल एंड मोटिवेशनल ट्रस्ट के तत्वावधान में योग शिविर का आयोजन

संवाददाता श्रीकान्त यादव

दिल्ली स्थित अखिल भारतीय स्वयंसेवी संस्था सोशल एंड मोटिवेशनल ट्रस्ट की अंगीभूत इकाई सोशल एंड मोटिवेशनल रिक्रिएशन क्लब के तत्वावधान में दिनांक 21 जून 2025 को ग्रेटर नोएडा वेस्ट में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में महिलाओं और पुरुषों ने भाग लिया। इस अवसर पर संस्था की राष्ट्रीय अध्यक्षा ममता सिंह ने शिविर में उपस्थित लोगों को संबोधित किया और स्वस्थ जीवन के लिए योग और व्यायाम की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। ममता सिंह के द्वारा एक टीम का गठन किया गया है और प्रति दिन सुबह योग सिखाया जाता है, जिसमें बहुत सारे लोग नियमित रुप से शामिल होकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं। यह कार्यक्रम बहुत दिनों से सफलता पूर्वक चल रहा है। इस अवसर पर संस्था के संस्थापक रवीन्द्र नाथ सिंह एवं रिक्रिएशन क्लब के कई सदस्य उपस्थित थे जिनमें संस्था के नोएडा इकाई अध्यक्ष पी के श्रीवास्तव, दिल्ली इकाई अध्यक्ष राजीव मिश्रा, मोहन श्रीवास्तव, एस के साह, अनुपमा श्रीवास्तव, अरुणा साह, सीमा मिश्रा एवं अन्य गणमान्य लोग मुख्य रुप से शामिल थे।

सोशल एंड मोटिवेशनल ट्रस्ट साहित्य,कला, संस्कृति एवं समाज सेवा के क्षेत्र में अग्रणी संस्था है और समाज के बहुमुखी विकास में इस संस्था का सक्रिय योगदान है।

मैन ऑफ़ टाइम ने किया अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर योग दर्शन

सम्पूर्ण ब्रह्मांड एक लय में योगमय है.. - कवि संदीप कपूर वक़्तनाम

- **अंतर्राष्ट्रीय सदभावना मंच पर सांस्कृतिक-आध्यात्मिक कार्यक्रम.. सेमिनार-कवि सम्मेलन-सम्मान समारोह**
- **अमृत योग रत्न-2025 से कलाकार-साहित्यकार-पत्रकार और समाजसेवी हुए सम्मानित**

संवाददाता श्रीकान्त यादव

समय-ईश्वर-ब्रह्मांड, महायोग ज्ञान है।
इसमें आत्म-उत्थान, सबका
कल्याण है।।

- कवि संदीप कपूर वक़्तनाम

मैन ऑफ़ टाइम-विश्व सुरक्षा अभियान..अंतर्राष्ट्रीय सदभावना मंच के तत्वावधान में 142 वॉ आयोजन ~ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह-2025 सांस्कृतिक-आध्यात्मिक कार्यक्रम ~ योग दर्शन ~ सेमिनार-कवि सम्मेलन और सम्मान समारोह संस्थापक-अध्यक्ष कवि संदीप कपूर वक़्तनाम की अध्यक्षता में किया गया। प्रेरणा-शक्ति अध्यापिका मंजु कपूर को स्मरण कर उन्होंने 21 जून शाम 07 बजे अंतर्राष्ट्रीय पटल गूगल मीट पर जय भारत- जय जगत उदघोष.. गुरु वंदना और योग-गीत से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया-

योग्य बनकर योग करें और बनें युग का आधार।
अटके-भटके हुए जनों का मिलकर करें उद्धार।
योगी वीर बनें - कर्मयोगी।। और दुनिया में हों खुशियॉं कहीं भी ना ग़म...वसुधैव कुटुम्बकम- वन्दे मातरम÷ गाकर सभी को आध्यात्मिक आनन्द में सराबोर कर दिया। वैदिक मंत्रोच्चार चिन्मय वर्मा और अनुकल्प वर्मा ने किया।

कार्यक्रम में विशेष शुभाकांक्षी अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यूयॉर्क अमेरिका से डॉ0 विजय कुमार मेहता, दिग्दर्शक साहित्यकार कवि वरुण कुमार राय, उदघाटनकर्ता विवेकानंद केंद्र कन्या कुमारी के प्रकल्प संगठक हिन्दी प्रकाशन विभाग जोधपुर राजस्थान से शिवपूजन सिंह, मुख्य अतिथि विवेकानंद केंद्र कन्या कुमारी के प्रांत अमृत परिवार सह साहित्य सेवा प्रमुख बिहार-झारखण्ड डॉ0 विजय कुमार वर्मा, अति विशिष्ट अतिथि रेल मंत्रालय भारत सरकार एडीआरएम मालदा शिवकुमार प्रसाद, डॉ0 नरेंद्र मल्होत्रा आगरा, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद बांका जिला प्रमुख प्रदीप कुमार झा, विशिष्ट अतिथि सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार दूरदर्शन केन्द्र पटना के कार्यक्रम अधिशासी कौशल किशोर मिश्रा, ऑल इंडिया रेडियो आकाशवाणी कोलकाता से ई0 हरेंद्र बहादुर श्रीवास्तव, राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र के वरिष्ठ पत्रकार श्रीकान्त यादव, महासचिव समाजसेवी संध्या कपूर, संरक्षक वरिष्ठ अधिवक्ता शैलेन्द्र नाथ कपूर, अध्यापक ब्रजेश कु0 प्रसाद गौरव, ई0अजीत कुमार सिंह, कार्यक्रम निर्देशक डॉ0 कृष्णा सिंह और राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रोफेसर डॉ0 तृप्ति कुमारी तान्या ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस-2025 पर सभी को शुभकामनाएं दी।

योग दर्शन पर सेमिनार में कवि संदीप कपूर वक़्तनाम ने कहा कि सम्पूर्ण ब्रह्मांड एक लय में योगमय है, किन्तु इस शाश्वत-सत्य गूढ़-ज्ञान से विमुख अंधकार और अहंकार में लोग अपनों से दूर हैं..वर्तमान संक्रमण-काल में मानव को मानव से जोड़ना सबसे बड़ा योग है। सेमिनार में आगत विद्वानों ने भी अपने विचार व्यक्त किया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह-2025 में कवि सुनील कुमार, शिक्षक ब्रजेश कु0 प्रसाद गौरव, कवि वरुण कुमार राय, डॉ0 कृष्णा सिंह, प्रो0डॉ0 तृप्ति कुमारी तान्या, स्वागताध्यक्ष कवि हृदय नारायण सिंह, कार्यक्रम अधिकारी कवि शम्भु शरण शरणागत ने कवि सम्मेलन में अपने शानदार गीत-कविता से लोगों को आनंदित और प्रेरित किया।

विश्वांगी कपूर, चिन्मय वर्मा, अनुकल्प वर्मा ने चित्र-कला, गायन और क्विज़ (प्रश्नोत्तरी में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। सम्मान समारोह में कलाकार-प्रबुद्ध कवि-साहित्यकार-पत्रकार और समाजसेवी बंधुओं को उत्कृष्ट योगदान के लिए अमृत योग रत्न-2025 प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। डॉ0 कृष्णा सिंह द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही कार्यक्रम का समापन हुआ।

जलवायु परिवर्तन के संकट को देखते हुए पर्यावरणीय लागतों पर भी ध्यान दें लेखाकार: मुर्मु

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने जलवायु परिवर्तन के संकटों के मद्देनजर लेखाकारों से पर्यावरणीय लागतों को ध्यान में रखने पर जोर देते हुए कहा है कि उनकी जिम्मेदारियां वित्तीय लेखांकन से कहीं आगे हैं। श्रीमती मुर्मु ने सोमवार को यहां भारतीय लागत लेखाकार संस्थान (आईसीएमएआई) के राष्ट्रीय छात्र दीक्षांत समारोह में कहा कि दुनिया जलवायु परिवर्तन के संकट का सामना कर रही है और सतत विकास अब एक नारा नहीं है यह एक जरूरत बन गई है। उन्होंने कहा कि बदली हुई परिस्थितियों में लेखाकारों की भूमिका और जिम्मेदारी भी बदल गयी है। उन्होंने कहा,÷ वह समय बीत चुका है जब कॉर्पोरेट संगठन केवल लाभ के उद्देश्य से काम करते थे। अब उन्हें पर्यावरणीय लागतों को ध्यान में रखना होगा। और यहीं पर सीएमए अपने कौशल के साथ ग्रह के भविष्य में एक बड़ा बदलाव ला सकते हैं। राष्ट्रपति ने छात्रों को यह ध्यान रखने की सलाह दी कि उनकी ज़िम्मेदारियाँ वित्तीय लेखांकन से कहीं आगे तक फैली हुई हैं।

उन्होंने कहा कि लागत लेखाकार के रूप में वह 2047 तक देश के विकास में योगदान देने के लिए अद्वितीय स्थिति में हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि आईसीएमएआई द्वारा दी जाने वाली शिक्षा उन्हें न केवल सफल पेशेवर बनने में सक्षम बनाएगी, बल्कि राष्ट्र-निर्माता भी बनाएगी।

राष्ट्रपति ने लेखाकारों के महत्व का उल्लेख करते हुए कहा कि लेखांकन और जवाबदेही गहराई से जुड़े हुए हैं। उन्होंने कहा, हम जवाबदेही को महत्व देते हैं, इसलिए हम लेखांकन को विशेष महत्व देते हैं।÷ राष्ट्रपति ने कहा कि भारतीय लागत लेखाकार संस्थान आधुनिक समय में इस समृद्ध विरासत को आगे बढ़ा रहा है। देश में लागत और प्रबंधन लेखाकारों के पेशे के नियमन तथा विकास के लिए आईसीएमएआई की स्थापना 1944 में की गई थी। यह संस्थान स्वतंत्रता के बाद भारत के आर्थिक परिवर्तन की गाथा का गवाह होने के साथ साथ भारतीय अर्थव्यवस्था को दुनिया की सबसे मजबूत अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। श्रीमती मुर्मु ने कहा कि आईसीएमएआई देश की प्रगति में भागीदार रहा है क्योंकि यह नीति निर्माताओं, केंद्र और राज्य सरकारों के साथ-साथ विभिन्न संगठनों को लागत-कुशल रणनीतियां, प्रणालियां और मैनुअल विकसित करने में मूल्यवान सहायता प्रदान करता है।

पर्यवेक्षक नियुक्ति के लिए प्रदेशाध्यक्ष रामकेश मीना को पुनः लिखा पत्र

- **सीकर जिला इकाई के चुनाव में देरी से मीना समाज में भारी आक्रोशशीघ्र चुनाव करवाने की मांग**

फूल शंकर डामोर उदयपुर

सीकर। सोमवार को राजस्थान आदिवासी मीना सेवा संघ सीकर की कार्यवाहक जिलाध्यक्ष सीमा मीना ने जिलाध्यक्ष, जिला-महामंत्री व जिला-कोषाध्यक्ष के चुनाव के लिए प्रदेशाध्यक्ष रामकेश मीना को दुबारा पत्र लिखकर चुनाव अधिकारी एवं पर्यवेक्षक नियुक्त करने का निवेदन किया है। पत्र के अनुसार वर्ष 2022 में सीकर जिला इकाई के वर्तमान विधानसम्मत निर्वाचित पदाधिकारियों ने प्रदेशाध्यक्ष को सूचित करते हुए चुनाव समिति गठित करके 18 मई से 2 जून 2025 तक अपने अधीनस्थ सभी तहसील इकाइयों का नियमानुसार चुनाव सम्पन्न कराकर 5 जून को पत्र के साथ विस्तृत चुनाव रिपोर्ट प्रदेशाध्यक्ष रामकेश मीना तथा प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष कैलाश मीना खारड़ा को प्रस्तुत करके जिला इकाई के पदाधिकारियों का चुनाव प्रदेशकार्यकारिणी के पर्यवेक्षण में कराने का निवेदन किया था। पत्र का अभी तक सकारात्मक जवाब नहीं मिलने के कारण ज़िले के मीना समाज में आक्रोश व्याप्त है तथा लोग बड़ी संख्या में नाराजगी जताने के लिए प्रदेशाध्यक्ष के जयपुर निवास पर कूच करने को तैयार है।

जिला महामंत्री बाबूलाल काँवट ने बताया कि यधपि सीकर जिला इकाई के वर्तमान निर्वाचित पदाधिकारियों का विधानसम्मत 3 वर्ष का कार्यकाल जुलाई 2025 तक है तथापि वे पदों से चिपके रहने की बजाय दूसरों को अवसर प्रदान करने की भावना के साथ समय रहते चुनाव प्रक्रिया शुरू कर दिया। इस संबंध में 6 जून को सीकर जिले के प्रतिनिधिमंडल ने प्रदेशाध्यक्ष तथा प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष से मुलाकात के दौरान पत्र के साथ सीकर जिले के हजारों सदस्यों की सदस्यता शुल्क की निर्धारित 36% राशी भी जमा करने के प्रस्तुत करते हुए चुनाव अधिकारी व पर्यवेक्षक नियुक्त करने का निवेदन किया था, लेकिन प्रदेशाध्यक्ष ने निवेदन को टालते हुए जल्द ही मुलाकात और समाधान का आश्वासन दिया था। जिला महामंत्री ने आगे बताया कि संगठन के विधान के अनुसार पदाधिकारियों का निर्वाचन होता है और मनोनीत करने का कोई प्रावधान नहीं है जबकि प्रदेशाध्यक्ष रामकेश मीना सीकर में जिलाकार्यकारिणी के निर्वाचित एवं वैधानिक पदाधिकारियों के अस्तित्व में होने के बावजूद सांठगांठ से वीरेन्द्र मीना को मनोनीत करके सीकर जिला मीना समाज पर विधान विरुद्ध थोंपना चाहते है। उन्होंने आगे कहा कि रामकेश मीना सामाजिक संगठन में प्रदेशाध्यक्ष होने के साथ ही गंगापुर से विधायक तथा उपनेता प्रतिपक्ष भी है। अतः उनको इस तरह के विधान विरुद्ध कृत्य में लिप्त होने की बजाय पदों की गरिमा और नैतिकता बनाये रखना चाहिए।

फूल शंकर डामोर उदयपुर श्यामा प्रसाद मुखर्जी जनसंघ के संस्थापक भाजपा नेताओं ने संगोष्ठी का किया आयोजन

जनसंघ के संस्थापक डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी की पुण्य तिथि (बलिदान दिवस) पर भाजपा ओगणा मंडल के कार्यकर्ताओं ने मानस माता मंदिर परिसर ओगणा में संगोष्ठी का आयोजन कर तस्वीर पर पुष्प अर्पित किए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं वक्ता नीलम राजपुरोहित ने देश की एकता और अखंडता की रक्षा करने वाले डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन परिचय देते हुए कार्यकर्ताओं को संबोधित किया कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मंडल अध्यक्ष तख्त सिंह सोलंकी ने कार्यकर्ताओं को संगठित रहकर आपसी मनमुटाव भुलाकर संगठन को मजबूत करने का आह्वान किया। मंडल प्रतिनिधि मदनलाल शर्मा, वरिष्ठ कार्यकर्ता सुंदरलाल जावरिया,वर्दीशंकर पालीवाल, किशनलाल सोनी,उपाध्यक्ष तोलाराम मेघवाल,भावना पंडा,पूर्व महामंत्री मांगीलाल पटेल,जीवाराम परमार,सरपंच बाबूलाल गरासिया,आदि ने कार्यकर्ताओं को संबोधित किया।कार्यक्रम का संचालन महामंत्री लक्ष्मीलाल सेन ने किया। धन्यवाद महामंत्री दिनेश गरासिया ने दिया। इस दौरान वरिष्ठ कार्यकर्ता गेहरीलाल बापना, साकरचंद पुर्बीया, सूजानमल बापना, देवी सिंह भूरा, वगतराम लोहार,मोहनलाल प्रजापत अटाटिया,पन्नालाल पटेल मानपुर,ओबीसी मोर्चा मंडल अध्यक्ष महावीर पुर्बीया,उपाध्यक्ष भारत सिंह,शांतिलाल गरासिया, एसटी मोर्चा मंडल महामंत्री पिंटूलाल वडेरा,सरपंच रामलाल नेताजी का बारा,बूथ अध्यक्ष सुंदरलाल लोहार ओगणा,करण सिंह अटाटिया, सोहनलाल बांसड़िया, ताजुराम वडेरा राणपुर,सोहनलाल डूंगरी कांडली,हीरालाल अंगारी उपरेटा,नगराज गरासिया गेजवी,अर्जुनलाल गरासिया धरावाण, खातुदास उपला आमडा आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

गुजरात-पंजाब में 'आप' की जीत से केजरीवाल गदगद, कहा- जनता ने भाजपा और कांग्रेस को नकारा

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा चुनाव में भाजपा के हाथों करारी हार झेलने के बाद आम आदमी पार्टी (आप) ने भाजपा के गढ़ गुजरात में विसावदर विधानसभा सीट पर जीत हासिल की है। इस सीट पर हुए उपचुनाव में आम आदमी पार्टी के उम्मीदवाद गोपाल इटालिया जीत गए हैं। वहीं, पंजाब के लुधियाना वेस्ट सीट से आम आदमी पार्टी के उम्मीदवार संजीव अरोड़ा ने जीत हासिल की है। इन दोनों सीट पर मिली जीत से आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल गदगद हैं। उन्होंने कहा कि इन दोनों सीट पर जनता ने भाजपा और कांग्रेस को नकार दिया है।

केजरीवाल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट किया। पोस्ट में उन्होंने लिखा, ÷गुजरात की विसावदर और पंजाब की लुधियाना पश्चिम सीटों पर आम आदमी पार्टी की शानदार जीत पर आप सबको बहुत बहुत बधाई। गुजरात और पंजाब के लोगों को बहुत बधाई और बहुत बहुत शुक्रिया। दोनों जगह पिछले चुनाव के मुकाबले लगभग दोगुने मार्जिन से जीत हुई है। ये दिखाता है कि पंजाब के लोग हमारी सरकार के कामों से बहुत खुश हैं और उन्होंने 2022 से भी ज़्यादा वोट दिया है। गुजरात की जनता अब बीजेपी से परेशान हो चुकी है और उन्हें आम आदमी पार्टी में उम्मीद दिखाई दे रही है। दोनों जगह कांग्रेस और बीजेपी, दोनों पार्टियां मिलकर चुनाव लड़ीं। इन दोनों का एक ही मकसद था - आप को हराना। लेकिन लोगों ने दोनों जगह इन दोनों पार्टियों को नकार दिया।

वहीं, पंजाब के लुधियाना वेस्ट सीट से आम आदमी पार्टी के उम्मीदवार संजीव अरोड़ा की जीत पर पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने खुशी जाहिर की। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट किया। पोस्ट में उन्होंने लिखा, ÷विधानसभा हलका लुधियाना पश्चिमी उपचुनाव में आम आदमी पार्टी की शानदार जीत पर सभी को बहुत-बहुत बधाइयां। बड़ी लीड से मिली यह जीत इस बात का साफ संकेत है कि राज्य के लोग हमारी सरकार के कामों से बेहद खुश है। हम पंजाब की तरक्की और खुशहाली के लिए दिन-रात बिना किसी भेदभाव और पूरी ईमानदारी से काम कर रहे हैं। उपचुनाव के दौरान पंजाबियों से किए गए हर एक वादे को हम प्राथमिकता के आधार पर पूरा करेंगे। संजीव अरोड़ा को बहुत-बहुत मुबारकबाद। साथ ही, इस जीत के लिए दिन-रात मेहनत करने वाली पूरी लीडरशिप और वॉलंटियर्स की टीम को भी बहुत-बहुत बधाई।

आप के वरिष्ठ नेता मनीष सिसोदिया ने कहा कि गुजरात और पंजाब के कार्यकर्ता को बधाई देता हूं। गुजरात की जीत पार्टी के लिहाज से काफी महत्वपूर्ण है। हमारे विधायक जनता के मुद्दों को विधानसभा में मजबूती के साथ उठाएंगे। संजीव अरोड़ा पंजाब की विधानसभा में पहुंचे हैं। भगवंत मान की सरकार तीन साल से अच्छा कार्य कर रही है। विधानसभा उपचुनाव में जनता ने अपने वोट की मुहर लगाई है। राज्यसभा सीट खाली होने पर सिसोदिया ने कहा कि पार्टी जब तय करेगी तब बताया जाएगा कि कौन राज्यसभा जाएगा।

गुजरात विसावदर उपचुनाव में 'आप' की जीत पर पार्टी के वरिष्ठ नेता गोपाल राय ने कहा कि वहां के किसानों और लोगों ने स्पष्ट संदेश दिया है कि वे मौजूदा राजनीति के खिलाफ हैं। विसावदर का परिणाम पूरे गुजरात में बदलाव का संकेत देता है और यह जीत निस्संदेह ऐतिहासिक है। इसमें शामिल सभी लोगों को बधाई।

आप के वरिष्ठ नेता सौरभ भारद्वाज ने लुधियाना वेस्ट सीट से आम आदमी पार्टी के उम्मीदवार संजीव अरोड़ा की जीत पर कहा कि संजीव अरोड़ा काफी प्रसिद्ध थे। उनकी जीत से एक राज्यसभा सीट खाली होगी। भारद्वाज ने कहा कि इसे ऐसा नहीं देखा जाना चाहिए कि राज्यसभा सीट खाली कराने के लिए उन्हें चुनाव लड़वाया गया। सीट खाली हुई है तो आने वाले दिनों में साफ हो जाएगा कि पार्टी किसे राज्यसभा भेजेगी। पार्टी के वरिष्ठ नेता संजीव झा ने कहा कि गुजरात में मिली जीत बड़ी है। गुजरात की जनता आप के साथ खड़ी है। 2022 की तुलना में यह बड़ी जीत है।

सरकार, विकसित भारत @2047 विज़न के तहत किशोरियों को कौशल प्रदान करने के लिए एक संयुक्त पायलट पहल, 'नव्या' की कल शुरूआत करेगी

शशांक चौधरी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री के विकसित भारतञ्च2047 के विज़न और महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता जाहिर करते हुए, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (एमडब्ल्यूसीडी), कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (एमएसडीई) के साथ मिलकर एक नई पहल की शुरूआत करने जा रहा है। इसके तहत 24 जून 2025 को उत्तर प्रदेश के सोनभद्र में किशोरियों के कौशल विकास के लिए एक संयुक्त पायलट पहल नव्या - युवा किशोरियों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण के ज़रिए आकांक्षाओं का पोषण कार्यक्रम की शुरूआत की जाएगी। कार्यक्रम का शुभारंभ एमएसडीई राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) जयंत चौधरी और महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर द्वारा संयुक्त रूप से किया जाएगा।

नव्या एक पायलट पहल है, जिसका मकसद 16-18 वर्ष की आयु की किशोरियों को कक्षा 10 की न्यूनतम योग्यता के साथ मुख्य रूप से गैर-पारंपरिक नौकरी भूमिकाओं में व्यावसायिक प्रशिक्षण मुहैया कराना है। यह पायलट पहल देश के 27 जिलों में लागू की जाएगी, जिसमें 19 राज्यों में फैले आकांक्षी जिले और पूर्वोत्तर राज्यों के जिले भी शामिल हैं, जो वंचित क्षेत्रों और कमज़ोर वर्गों तक पहुँचने की सरकार की समावेशी विचारधारा को दर्शाता है।

उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान, दोनों मंत्रालय किशोरियों के लिए कौशल प्रयासों को संस्थागत बनाने की प्रक्रिया के लिए अपने सहयोग को औपचारिक रूप देंगे। यह कार्यक्रम प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) और अन्य प्रमुख कौशल विकास योजनाओं की विशेषताओं पर आधारित होगा।

इस कार्यक्रम में किशोर बालिका प्रशिक्षुओं के साथ बातचीत, पीएमकेवीवाई और पीएम विश्वकर्मा प्रमाणपत्र भी बांटे जाएंगे।

नव्या के ज़रिए, भारत सरकार कौशल, आत्मविश्वास और अवसरों के साथ लड़कियों को सशक्त बनाने की अपनी प्रतिबद्धता दोहरा रही है, ताकि हर युवा महिला एक विकसित, आत्मनिर्भर और समावेशी भविष्य बनने के भारत के सफर में भागीदार बन सके।

एफआईएच हॉकी प्रो लीग: संघर्षरत भारतीय महिला टीम को बेल्जियम से मिली 0-2 की हार

एजेंसी

एंटवर्प। भारतीय महिला हॉकी टीम बेल्जियम के खिलाफ 0-2 की हार के साथ एफआईएच हॉकी प्रो लीग 2024/25 की अंक तालिका में नौवें स्थान पर फिसल गई है। मेजबान टीम के लिए अम्ब्रे बालेनगिएन (40) और लिएन हिलेवार्ट (43) ने गोल किए, जिससे बेल्जियम ने अंक तालिका में तीसरा स्थान बरकरार रखा।1-5 की करारी हार के बाद भारत ने इस मुकाबले की शुरुआत आक्रामक इरादों के साथ की। पहले क्वार्टर में पेनल्टी कॉर्नर भी अर्जित किया गया, लेकिन गोल में तब्दील नहीं हो सका। वहीं, बेल्जियम को मिले एक पेनल्टी स्ट्रोक को भारत की वीडियो रेफरल के जरिए लॉन्ग कॉर्नर में बदल दिया गया, जिससे भारत राहत में रहा। दूसरे क्वार्टर में कप्तान सलीमा टेटे के नेतृत्व में भारतीय फॉरवर्ड्स ने गति और साहस के साथ अटैकिंग की कोशिशें तेज कीं। हाफ टाइम तक मुकाबला बराबरी पर था – भारत के पास दो और बेल्जियम के पास एक पेनल्टी कॉर्नर था। दोनों टीमों की सर्कल एंट्रीज़ भी लगभग समान (भारत 8, बेल्जियम 10) थीं। लेकिन तीसरे क्वार्टर में खेल का रुख बदल गया। बेल्जियम ने एक पेनल्टी कॉर्नर पर बालेनगिएन के पहले प्रयास को भारतीय गोलकीपर सविता ने रोक तो लिया, लेकिन रिबाउंड पर बेल्जियम ने गोल कर बढ़त ले ली।

आठवीं आल कामरूप जिला तैराकी प्रतियोगिता संपन्न

गुवाहाटी। असम तैराकी संघ के अधीन आल कामरूप जिला तैराकी संघ के तत्वावधान में आयोजित आठवीं आल कामरूप जिला तैराकी प्रतियोगिता गुवाहाटी स्थित डॉ. जाकिर हुसैन एक्वेटिक कॉम्प्लेक्स में भव्य रूप से संपन्न हुई। इस प्रतियोगिता में कामरूप महानगर और कामरूप ग्रामीण जिलों के कुल 250 छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया। सुबह 8 बजे से आरंभ हुई इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने कुल 82 इवेंट्स में भाग लिया। प्रतियोगिता के समापन पर विजयी छात्र-छात्राओं को असम तैराकी संघ के महासचिव भास्कर रंजन दास, प्रचार सचिव मुकुटेश्वर गोस्वामी, अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तैराक फारिहा जमान, आल कामरूप जिला तैराकी संघ के सचिव नवज्योति गोगोई, प्रशिक्षक बाबुल गुरुंग, मोमी बर्मन, डेविड चेतिया, रविंद्र मोदक और अन्य विशिष्ट अतिथियों ने पुरस्कार प्रदान किए।

उत्तर मध्य रेल प्रयागराज मंडल की लगातार चौथी शानदार जीत

प्रयागराज। प्रयागराज जिला हॉकी एसोसिएशन के तत्वावधान में प्रथम हफीजुल्लाह मेमोरियल हॉकी लीग जो 15 से 25 जून तक मजीदिया इस्लामिया इंटर कालेज मे चल रही है, शानदार प्रदर्शन करते हुए उत्तर मध्य रेल प्रयागराज मण्डल की हॉकी टीम अपना चौथा मैच जीत कर लीग तालिका में सबसे ऊपर जगह बना लिया है। रविवार को लीग का चौथा मैच एमआईसी और उत्तर मध्य रेलवे प्रयागराज मंडल के माध्य खेला गया। जिसमे उत्तर मध्य रेल की टीम शानदार खेल प्रदर्शन करते हुए मैच 2-1 से जीत लिया। उत्तर मध्य रेलवे की ओर से शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए राजेश कुमार ने दो गोल किए वही एमआईसी के खिलाड़ियों ने मात्र 1 गोल पेनाल्टी कारनर पे किया। जनसम्पर्क अधिकारी अमित कुमार सिंह ने बताया कि मैच बहुत रोमांचक रहा। उत्तर मध्य रेलवे टीम की इस जीत से फ़ाइनल में पहुंचने रास्ता बन गया है। उत्तर मध्य रेल के कोच पंकज गोस्वामी की रणनीति से रेलवे का प्रदर्शन सराहनी रहा। वह लगातार अपनी टीम को बाहर से खिलाड़ियों को दिशा निर्देश देते रहे। उत्तर मध्य रेल का मैच सोमवार को मदन मोहन मालवीय स्टेडियम के मध्य खेला जाएगा।

शिमला में आयोजित राज्य ग्रैपलिंग चैंपियनशिप में ऑकलैंड हाउस स्कूल की लड़कियों का दबदबा

धर्मशाला। पांचवीं हिमाचल प्रदेश राज्य ग्रैपलिंग (कुश्ती) चैंपियनशिप रविवार को इंदिरा गांधी राज्य खेल परिसर में सम्पन्न हुई, जिसमें ऑकलैंड हाउस स्कूल की लड़कियों ने शानदार प्रदर्शन कर अपना दबदबा बनाया है। ऑकलैंड हाउस की रुद्रांशी शर्मा ने 25 किलोग्राम से कम वर्ग में स्वर्ण पदक जीता। अन्य लड़कियों ने भी विभिन्न वजन वर्गों में स्वर्ण पदक हासिल किए, जिनमें स्वर्णांजली (26 किग्रा), मायरा (27 किग्रा), काव्या (28 किग्रा), वराही (30 किग्रा), योकशिता (34 किग्रा) और यतिका (35 किग्रा) शामिल हैं। स्कूल के कोच अजय कुमार ने बताया कि यह चैंपियनशिप हिमाचल प्रदेश ग्रैपलिंग समिति द्वारा आयोजित की गई थी। 21-22 जून को दो दिनों तक चले इस आयोजन में सब-जूनियर, कैडेट, जूनियर और सीनियर वर्गों में रोमांचक प्रदर्शन देखने को मिले। भारत की ग्रैपलिंग समिति से संबद्ध और भारत सरकार के युवा मामले और खेल मंत्रालय द्वारा मान्यता प्राप्त इस चैंपियनशिप में राज्य भर से प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। यह आयोजन भारतीय कुश्ती संघ के तत्वावधान में हुआ, जो इसके राष्ट्रीय महत्व को दर्शाता है। प्रतियोगिता के समापन पर प्रतिभागियों को उनकी समर्पण और कौशल के लिए योग्यता और भागीदारी प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। यह चैंपियनशिप न केवल ग्रैपलिंग को एक खेल के रूप में बढ़ावा देने में सफल रही, बल्कि युवा पहलवानों को अपनी प्रतिभा दिखाने का मंच भी प्रदान किया, जिसने हिमाचल प्रदेश की राष्ट्रीय खेलों में बढ़ती प्रमुखता को और मजबूत किया।

प्रो लीग का शानदार समापन :भारत ने बेल्जियम को 4-3 से हराया, सुखजीत-सिंह की डबल सेंचुरी पर जश्न

एजेंसी

एंटवर्प। एफआईएच हॉकी प्रो लीग 2024-25 (पुरुष वर्ग) में भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने अपने अभियान का अंत मेजबान बेल्जियम पर 4-3 की रोमांचक जीत के साथ किया। यह मुकाबला भारत के लिए विशेष बन गया क्योंकि सुखजीत सिंह और दिलप्रीत सिंह ने अपने 100 अंतरराष्ट्रीय मैच पूरे किए, वहीं टीम ने आठवें स्थान के साथ 14 अंकों के साथ अभियान समाप्त किया। भारत की जीत में सुखजीत सिंह (21', 35'), अमित रोहिदास (36') और कप्तान हरमनप्रीत सिंह (59') ने गोल किए। बेल्जियम की ओर से आर्थर डी स्लूवर (8'), थिबो स्टॉकब्रुक्स (34') और हुगो लैबूशेर (41') ने गोल दागे।

पहले क्वार्टर में बेल्जियम ने तेज शुरुआत की और 8वें मिनट में स्लूवर ने एक शानदार गोल कर

भारत को चौंका दिया। भारत ने कुछ देर बाद प्रतिक्रिया दी, जब 21वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर के जरिए हरमनप्रीत के फ्लिक को सुखजीत ने शानदार डिफ्लेक्शन से गोल में बदल दिया। दूसरे हाफ में मुकाबला और तेज हो गया। बेल्जियम ने 34वें मिनट में बढ़त ली, लेकिन भारत ने जवाबी हमला करते हुए 35वें मिनट में सुखजीत का दूसरा गोल और फिर अगले ही मिनट में अमित रोहिदास के पेनल्टी कॉर्नर से 3-2 की बढ़त ले ली। हालांकि, बेल्जियम ने 41वें मिनट में स्कोर बराबर कर दिया। इसके बाद भारत ने एक और गोल किया, लेकिन वीडियो रेफरल के बाद उसे खारिज कर दिया गया।

फाइनल क्वार्टर में मैच बेहद रोमांचक हो गया। अंततः, 59वें मिनट में भारत को वीडियो रेफरल के बाद पेनल्टी स्ट्रोक मिला, जिसे कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने गोल में बदलते हुए भारत को जीत दिला दी। प्लेयर ऑफ द मैच बने सुखजीत सिंह ने कहा, हमने पूरे आत्मविश्वास के साथ वापसी की। यह जीत हमारी गलतियों से सीखने और आगे बेहतर करने की प्रेरणा देगी।

मुरादाबाद के आठ ताइक्वांडों खिलाड़ी बने राष्ट्रीय रेफरी

एजेंसी

मुरादाबाद। जिला ताइक्वांडो स्पोर्ट्स एसोसिएशन के सचिव शाहवेज़ अली ने बताया कि मुरादाबाद जनपद के आठ ताईक्वांडों खिलाड़ी राष्ट्रीय रेफरी बन गए है। शाहवेज़ अली के अनुसार 13 जून से 16 जून तक भारतीय ताइक्वांडो महासंघ के अंतर्गत उत्तर प्रदेश ताइक्वांडो एसोसिएशन द्वारा नेशनल रेफरी फ्रेशर एवं रिफ्रेशर सेमिनार का आयोजन लखनऊ के केडी सिंह बाबू स्टेडियम में हुआ था। जिसमें जिले के आठ खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया था। सोमवार को उत्तर प्रदेश ताइक्वांडो एसोसिएशन की ओर से सूचना प्राप्त हुई कि जनपद के आठ ताईक्वांडों खिलाड़ी केशव थापा, अरुण कुमार, प्रियांशु रस्तोगी, हाकिमीन हसीब, यशोदा थापा, वैष्णवी कश्यप, वैभव सक्सेना राष्ट्रीय रेफरी बन गए है। जिला ताइक्वांडो स्पोर्ट्स एसोसिएशन के सचिव शाहवेज़ अली ने बताया कि इस सेमिनार में सभी प्रतिभागियों को ताइक्वांडो खेल की संपूर्ण जानकारी प्रदान की गई थी, जिसमें ताइक्वांडो खेल के नियम, टेक्नीक, उल्लंघन, स्कोरिंग एवं फ़ाउल आदि के बारे में जानकारी दी गई थी।

फर्स्ट हॉकी इंडिया मास्टर्स कप:पांचवें दिन कर्नाटक, केरल, हरियाणा और महाराष्ट्र की शानदार जीत

एजेंसी

चेन्नई। चेन्नई के मेयर राधाकृष्णन हॉकी स्टेडियम में जारी फर्स्ट हॉकी इंडिया मास्टर्स कप 2025 का रोमांच दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। प्रतियोगिता के पांचवें दिन महिला और पुरुष वर्ग में कुल चार मुकाबले खेले गए, जिनमें कर्नाटक, केरल, हरियाणा और महाराष्ट्र ने अपने-अपने प्रतिद्वंद्वियों को हराकर शानदार जीत दर्ज की।

महिला वर्ग:

पहले मुकाबले में हॉकी कर्नाटक ने कड़ा मुकाबला करते हुए हॉकी हिमाचल को 2-0 से मात दी। पहले हाफ में दोनों टीमें गोल करने में असफल रहीं, लेकिन दूसरे हाफ में मनसा केपी (36फीसदी) और रोहिणी एमआर (42फीसदी) के गोलों ने कर्नाटक को जीत दिलाई।

दूसरे मैच में केरल हॉकी ने एकतरफा प्रदर्शन करते हुए हॉकी महाराष्ट्र को 5-1 से हराया। सुशा मोल केएस (25', 51') ने दो गोल किए जबकि मलैयालगु (4'), विध्या वीसी (30') और नीतू पीजे (38') ने एक-एक गोल दागा। महाराष्ट्र की ओर से जिसा चंद्रन आर (58फीसदी) ने आखिरी मिनटों में सांत्वना गोल किया।

पुरुष वर्ग:

पहले मुकाबले में हॉकी महाराष्ट्र ने हॉकी चंडीगढ़ को 2-0 से हराया। तीसरे क्वार्टर में मात्र तीन मिनट के

अंतराल में शक्ति भरतसिंह ठाकुर (33फीसदी) और कप्तान धनंजय महाडिक (35फीसदी) ने गोल दागकर टीम को जीत दिलाई।

दिन के अंतिम मुकाबले में हरियाणा ने कर्नाटक को 5-2 से पराजित किया। हरियाणा के लिए अशोक कुमार (29', 35', 43') ने हैट्रिक लगाकर मैच में चमक बिखेरी, जबकि विवेक दहिया (12फीसदी) और वीरेंद्र कुमार (57फीसदी) ने भी स्कोरशीट में नाम दर्ज कराया। कर्नाटक के लिए मंदन्ना (15फीसदी) और कप्तान विनया वीएस (55फीसदी) ने गोल किए, लेकिन वे जीत नहीं दिला सके।

जसप्रीत बुमराह ने आलोचकों को दिया करारा जवाब, कहा- मैं अपनी राह खुद तय करता हूं

एजेंसी

लीड्स। लंबे समय बाद टेस्ट क्रिकेट में वापसी करने वाले जसप्रीत बुमराह ने लीड्स में इंग्लैंड के खिलाफ 5 विकेट लेकर एक बार फिर साबित कर दिया कि वह भारतीय गेंदबाजी आक्रमण की रीढ़ हैं। ऑस्ट्रेलिया में चोटिल होने के बाद बुमराह के भविष्य को लेकर अटकलें तेज थीं, लेकिन उन्होंने मैदान पर वापसी उसी आत्मविश्वास के साथ की, जैसे उन्होंने खेल को छोड़ा था।

लीड्स में चौथे दिन के खेल की समाप्ति के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में बुमराह ने कहा, मैं अपनी वापसी को लेकर कभी भी घबराया नहीं। लोग क्या लिखते हैं, इस पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं है। और ना ही मैं किसी को सिखाना चाहता हूं कि उनके हेडलाइन में मेरा नाम हो या नहीं। मैं जानता हूं कि क्रिकेट हमारे देश में बहुत लोकप्रिय है, और मेरा नाम लगाने से व्यूज़ बढ़ते हैं। लेकिन ये सब मेरे लिए कोई मायने नहीं रखता। अगर मैं इन सब बातों को अपने दिमाग में बिठा लूं, तो मैं अपनी राह से भटक जाऊंगा। बुमराह ने याद दिलाया कि जब उन्होंने क्रिकेट की शुरुआत की थी, तब भी लोग उन्हें लेकर शंका जताते थे। उन्होंने कहा, शुरू में कहा गया कि मैं टीम में नहीं आ पाऊंगा। फिर कहा गया कि छह महीने भी नहीं टिकूंगा। फिर आठ

महीनेज़ और इस तरह मैंने 10 साल अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में बिता दिए। आईपीएल में भी 12-13 साल से खेल रहा हूं। अब भी लोग कहते हैं कि ये चोट शायद आखिरी होगी। मैं इन सबकी परवाह नहीं करता। मैं अपना काम करता रहूंगा। तीन-चार महीने में एक नई हेडलाइन आएगी, लेकिन मैं खेलता रहूंगा जब तक किस्मत में लिखा है। अपनी हालिया चोट के बाद बुमराह ने टेस्ट मैचों के चयन को लेकर सतर्कता बरती है। उन्होंने टीम मैनेजमेंट को पहले ही सूचित कर दिया है कि वह पूरी सीरीज के लिए उपलब्ध नहीं रहेंगे। कप्तानी से पीछे हटने की यही मुख्य वजह थी। उन्होंने कहा, ÷मेरे लिए यह मायने नहीं रखता कि मैं कितने मैच खेल रहा हूं। उस समय जब मैं मैदान में हूं, मेरा पूरा ध्यान विकेट को पढ़ने, बल्लेबाज को समझने और रणनीति बनाने पर होता है। भविष्य की चिंता में प्रदर्शन पर असर नहीं डालना चाहता। टेस्ट मैच खत्म होने के बाद बाकी सब देखा जाएगा। अपनी सोच को लेकर बुमराह ने एक गहरी बात कही। उन्होंने कहा, रात को मैं खुद से एक सवाल करता हूं - क्या मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ दिया? अगर जवाब हां में होता है, तो मैं शांति से सो जाता हूं। अपने बयान के अंत में बुमराह ने कहा कि वह हर दिन अपने आप को बेहतर बनाने और भारतीय क्रिकेट को आगे ले जाने की कोशिश करते हैं।

दो बार के ओलंपिक पदक विजेता ललित उपाध्याय ने लिया संन्यास, हॉकी इंडिया ने दी बधाई

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय हॉकी टीम के अनुभवी फॉरवर्ड और दो बार के ओलंपिक पदक विजेता ललित उपाध्याय न अंतरराष्ट्रीय हॉकी से संन्यास की घोषणा कर दी। भारत ने बेल्जियम के खिलाफ एफआईएच प्रो लीग मुकाबले में 4-3 की जीत के साथ अपना सीजन खत्म किया, जिसके तुरंत बाद ललित ने सोशल मीडिया के जरिए अपने फैसले से सभी को अवगत कराया। ललित उपाध्याय ने भारत के लिए 183 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले और 67 गोल दागे। उन्हें भारतीय फॉरवर्ड लाइन का एक अहम और भरोसेमंद हिस्सा माना गया, जो अपनी बहुमुखी प्रतिभा, मैदान पर सूझबूझ और दबाव की घड़ी में संयमित खेल के लिए जाने जाते थे। 2014 हॉकी

वर्ल्ड कप से पदार्पण करने वाले ललित ने टोक्यो 2020 ओलंपिक में ऐतिहासिक कांस्य पदक और पेरिस 2024 ओलंपिक में दोबारा कांस्य पदक जीतकर खुद को बड़े मुकाबलों का खिलाड़ी साबित किया। ओलंपिक के अलावा ललित भारत की 2016 एशियन चैंपियंस ट्रॉफी, 2017 एशिया कप (जिसमें उन्होंने चार गोल किए), 2018 एशियाई खेलों (कांस्य), 2018 पुरुष एशियन चैंपियंस ट्रॉफी (स्वर्ण), 2017 हॉकी वर्ल्ड लीग फाइनल (कांस्य) और 2018 एफआईएच चैंपियंस ट्रॉफी (रजत) जैसी कई अहम सफलताओं के भागीदार रहे। वे 2021-22 एफआईएच प्रो लीग में कांस्य और 2022 एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाली टीम का भी हिस्सा थे। भारतीय हॉकी में उनके योगदान को देखते हुए उन्हें वर्ष 2021 में अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले के छोटे से गांव से आने वाले ललित का सफर संघर्षों से भरा रहा। उन्होंने रविवार रात अपने फेसबुक पोस्ट में लिखा, यह सफर एक छोटे से गांव से शुरू हुआ, जहां संसाधन सीमित थे, लेकिन सपने अनंत।

कनाडा ने भारत और श्रीलंका में होने वाले टी20 विश्व कप 2026 के लिए क्वालीफाई किया

एजेंसी

नई दिल्ली। कनाडा क्रिकेट टीम ने भारत और श्रीलंका की संयुक्त मेजबानी में खेले जाने वाले आईसीसी टी20 विश्व कप 2026 के लिए क्वालीफाई कर लिया है। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) की आधिकारिक वेबसाइट के अनुसार अमेरिका क्वालीफायर के मेजबान ने बहामास के खिलाफ जीत हासिल कर टूर्नामेंट में अपना स्थान सुनिश्चित किया, जो मौजूदा अभियान में उनकी लगातार पांचवीं जीत है। आईसीसी वेबसाइट के अनुसार कलीम सना और शिवम शर्मा ने तीन-तीन विकेट चटकाए, जिससे कनाडा ने बहामास को सिर्फ 57 रन पर ढेर कर दिया। इसके बाद इस छोटे से लक्ष्य को कनाडा के बल्लेबाजों ने सिर्फ 5.3 ओवर में 3 विकेट खोकर हासिल लिया गया। कनाडा के बल्लेबाज दिलप्रीत बाजवा ने 14 गेंदों पर नाबाद 36 रन बनाए।पिछले साल अमेरिका और वेस्टइंडीज की मेजबानी में खेले गए टी20 विश्व कप में भाग लेने के बाद कनाडा क्वालीफायर में आगे बढ़ने के लिए पसंदीदा टीमों में से एक के रूप में पहुंचा। निकोलस किर्टन की अगुवाई वाली कनाडाई टीम ने बरमूडा के खिलाफ 110 रनों से बड़ी जीत के साथ अपने अभियान की शुरुआत की थी। इसके बाद केमैन आइलैंड्स के खिलाफ 59 रनों से जीत दर्ज की। फिर अगले मैच में बहामास को 10 विकेट से रौंदा। चौथे मैच में केमैन आइलैंड्स के खिलाफ आरामदायक जीत दर्ज की। अब अपने पांचवें मैच में लगातार जीत दर्ज कर टी20 विश्व कप 2026 के लिए अपना स्थान सुनिश्चित किया।

फीफा क्लब वर्ल्ड कप 2025:10 खिलाड़ियों के साथ रियल मैड्रिड ने पचुका को 3-1 से हराया

एजेंसी

नई दिल्ली। फीफा क्लब वर्ल्ड कप 2025 के ग्रुप-एच मुकाबले में रियल मैड्रिड ने रविवार को मैक्सिकन क्लब पचुका को 3-1 से मात दी। यह जीत मैड्रिड के नए कोच जाबी आलोन्सो के लिए बतौर मैनेजर पहली जीत रही। यह मुकाबला अमेरिका के नॉर्थ कैरोलिना स्थित चार्लोट में बेहद गर्म मौसम के बीच खेला गया। मैच में रियल मैड्रिड को सातवें मिनट में ही झटका लगा जब डिफेंडर राउल एसेन्सियो को सोलोमन रोंडन को फाउल करने पर रेड कार्ड दिखाकर बाहर कर दिया गया। इसके बावजूद 10 खिलाड़ियों वाली मैड्रिड टीम ने बेहतरीन जुझारूपन दिखाते हुए पहले हाफ में ही दो गोल कर बढ़त बना ली। मैच के 35वें मिनट में गोंजालो गार्सिया के त्वरित फ्लिक से फ्रान गार्सिया को गेंद मिली, जिन्होंने बेलिंगहम को पास दिया। बेलिंगहम ने शानदार

तरीके से 15 गज की दूरी से गेंद को गोल में डालकर टीम को बढ़त दिला दी। इसके बाद 43वें मिनट में एक और बेहतरीन मूव में ट्रेंट एलेक्जेंडर-अर्नोल्ड के फर्स्ट-टच क्रॉस पर गार्सिया ने अरदा गुलर को पास दिया और गुलर ने कोई चूक नहीं वाल्वरडे ने किया जीत का पक्का दूसरे हाफ में पचुका ने लगातार दबाव बनाए रखा, लेकिन थिबो कोर्टुआ की शानदार गोलकीपिंग के चलते उन्हें कामयाबी नहीं मिली। उन्होंने पूरे मैच में 10 बेहतरीन बचाव किए। हालांकि 80वें मिनट में एलियास मोंटिएल के डिफ्लेक्टेड शॉट ने एक सांत्वना गोल जरूर दिलाया। इससे पहले 70वें मिनट में फेडेरिको वाल्वरडे ने स्लाइडिंग वॉली से गोल कर रियल की जीत सुनिश्चित कर दी। इस जीत के साथ रियल मैड्रिड के दो मैचों में 4 अंक हो गए हैं (1 जीत, 1 ड्रॉ)। अब वे गुरुवार को फिलाडेल्फिया में आरबी साल्ज़बर्ग से भिड़ेंगे, जहां जीत या ड्रॉ से उनका अंतिम-16 में स्थान पक्का हो जाएगा। वहीं, पचुका की टीम दो हार के साथ टूर्नामेंट से बाहर हो गई है। मैच में शॉट्स के आंकड़े पचुका के पक्ष में थे (25-8 कुल शॉट्स, 11-3 ऑन टारगेट), लेकिन निर्णायक क्षणों में रियल ने अधिक गुणवत्ता दिखाई और नतीजा अपने पक्ष में कर लिया।

एएफसी महिला एशियाई कप क्वालीफायर के लिए तैयार भारतीय टीम, पहले मैच में मंगोलिया से सामना

चियांग माई (थाईलैंड)। भारतीय सीनियर फुटबाल महिला टीम थाईलैंड के चियांग माई में अपने एएफसी महिला एशियाई कप ऑस्ट्रेलिया 2026 क्वालीफायर अभियान की शुरुआत करने के लिए तैयार है। टीम अपना पहला मैच मंगोलिया के खिलाफ खेलेगी। यह प्रमुख प्रतियोगिता पिछले कई सालों में ब्लू टाइग्रेस के लिए दुर्भाग्यपूर्ण रही है। भारतीय टीम ने आखिरी बार 2003 में एएफसी महिला एशियाई कप में जगह बनाई थी। वहीं जब 2022 में टूर्नामेंट की मेजबानी की, तो कोविड-19 मामलों और चोटों के कारण टीम को टूर्नामेंट से हटना पड़ा था। ऐसे में मुख्य कोच क्रिस्पिन छेत्री और टीम जब 16 जून को थाईलैंड पहुंचीं, तो उनका एकमात्र लक्ष्य क्वालीफायर के जरिए एएफसी महिला एशियाई कप के लिए क्वालीफाई करना है।

मैथ्यूज और फ्लेचर ने दिलाई वेस्टइंडीज को जीत, सीरीज 1-1 से बराबर

एजेंसी

ओवल । वेस्टइंडीज ने रविवार को कप्तान हेली मैथ्यूज की नाबाद अर्धशतकीय पारी (63*) और अफी फ्लेचर व करिश्मा रामहरक की घातक गेंदबाजी के दम पर दक्षिण अफ्रीका को छह विकेट से हराकर तीन मैचों की टी20 सीरीज 1-1 से बराबर कर ली। अब सीरीज का निर्णायक मुकाबला सोमवार को खेला जाएगा।

अफ्रीकी बल्लेबाज़ों की धीमी शुरुआत

टॉस हारकर पहले बल्लेबाज़ी करने उतरी दक्षिण अफ्रीकी टीम की शुरुआत अच्छी रही। कप्तान लौरा वोल्वार्ड्ट और ताजमिन ब्रिट्स ने पहले विकेट के लिए 30 रन जोड़े। वोल्वार्ड्ट ने कुछ आकर्षक चौके लगाए लेकिन 16 रन बनाकर पवेलियन लौट गईं। हेली मैथ्यूज ने मरिज़ाने कैप को बिना खाता खोले आउट कर बड़ा झटका दिया।इसके बाद फ्लेचर ने कसी हुई गेंदबाजी करते हुए ब्रिट्स (14) को आउट

किया और फिर नादिन डि क्लार्क (19) का भी विकेट लिया। करिश्मा रामहरक ने भी दो विकेट झटके। आखिरी ओवरों में अनेरी डर्कसेन (21*) और कराबो मेसो ने टीम को 113 रन तक पहुंचाया।

मैथ्यूज ने संभाली पारी

114 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए वेस्टइंडीज की शुरुआत भी अच्छी रही। किआना जोसेफ ने दो चौके लगाकर लय दी, जबकि मैथ्यूज धीरे-धीरे सेट होती गईं। जोसेफ के आउट होने के बाद कुछ विकेट जल्दी गिरे - हेक्टर (3), कैंपबेल (7), और हेनरी (3) जल्द पवेलियन लौट गईं। हालांकि मैथ्यूज ने एक छोर संभाले रखा। आखिरी के ओवरों में जब टीम को 16 गेंदों में 12 रन चाहिए थे, तब उन्होंने खाका पर छक्का और चौका लगाकर मैच को लगभग खत्म कर दिया। अंत में जानिलिया ग्लासगो ने विजयी रन लगाए।

स्कोरकार्ड

दक्षिण अफ्रीका: 113/6 (डर्कसेन 21*, फ्लेचर 2/13, रामहरक 2/25)

वेस्टइंडीज: 116/4 (मैथ्यूज 63*, म्लाबा 2/17)

वेस्टइंडीज ने 6 विकेट से मैच जीतकर सीरीज 1-1 से बराबर की।

भारतीय शूटिंग स्टार्स ने ओलंपिक डे पर मनाया जश्न, लॉस एंजेलिस में कामयाबी की जताई उम्मीद

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय शूटिंग दल ने ओलंपिक डे के अवसर पर जश्न मनाया और आने वाले ओलंपिक खेलों में देश के लिए और अधिक पदक जीतने का विश्वास जताया। पेरिस ओलंपिक 2024 में भारत ने शूटिंग की सभी 15 स्पर्धाओं में भाग लेने के लिए 21 सदस्यीय दल भेजा था। इस दौरान मनु भाकर ने इतिहास रचते हुए महिलाओं की 10 मीटर एयर पिस्टल और 10 मीटर एयर पिस्टल मिक्स्ड टीम इवेंट (सरबजोत सिंह के साथ) में दो पदक जीतकर एक ही ओलंपिक संस्करण में दो पदक जीतने वाली पहली भारतीय खिलाड़ी बनीं। स्वप्नील कुसाले ने पुरुषों की 50 मीटर राइफल 3 पोजिशन में भारत को एकमात्र पदक दिलाया। 2024 ओलंपिक में भारत के कुल छह पदकों में से तीन पदक शूटिंग से आने के बाद इस खेल की लोकप्रियता देशभर में तेजी से बढ़ी और भारतीय निशानेबाजों को वैश्विक स्तर पर बड़ी पहचान मिली। हाल ही में म्यूनिख में संपन्न हुए आईएसएसएफ वर्ल्ड कप 2025 में भी भारतीय निशानेबाजों ने दो स्वर्ण और दो कांस्य समेत कुल चार पदक जीतकर अपना शानदार फॉर्म जारी रखा। अब खिलाड़ियों की नजरें 2028 में लॉस एंजेलेस में होने वाले अगले ओलंपिक खेलों पर टिकी हैं। पेरिस ओलंपिक में कांस्य पदक

जीतने वाले निशानेबाज सरबजोत सिंह ने कहा, यह दिन हम सभी के लिए बेहद खास है क्योंकि यह हमें उस मेहनत की याद दिलाता है जो हमने ओलंपिक जैसे बड़े मंच पर देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए की थी। एक खिलाड़ी के लिए ओलंपिक में हिस्सा लेना ही सबसे बड़ी उपलब्धि होती है और जब आप वहां पदक जीतते हैं, तो वह पल जीवनभर याद रहता है। 23 वर्षीय सरबजोत ने आगे कहा, पेरिस ओलंपिक और हाल के शूटिंग टूर्नामेंट्स में मिली सफलता ने हम सभी के भीतर नई ऊर्जा भर दी है। हम पूरे आत्मविश्वास के साथ कह सकते हैं कि लॉस एंजेलिस ओलंपिक में भारतीय निशानेबाज और भी ज्यादा पदक जीतकर देश का गौरव बढ़ाएंगे। ओलंपिक पदक विजेता स्वप्नील कुसाले ने भी सरबजोत की भावना को साझा करते हुए कहा, पिछले साल ओलंपिक में मिली सफलता के कारण इस बार ओलंपिक डे मनाना और भी खास लग रहा है। अब लगता है कि पूरे देश की निगाहें हम पर हैं और हर कोई हमारी सफलता के लिए दुआ कर रहा है। उन्होंने आगे कहा, हालांकि यह एक अतिरिक्त जिम्मेदारी है, लेकिन साथ ही यह हमें प्रेरणा भी देती है कि हम अपने प्रदर्शन को और बेहतर करें और भारत को गौरवान्वित करें। मुझे पूरा भरोसा है कि 2028 लॉस एंजेलेस ओलंपिक में शूटिंग में भारत की पदक यात्रा एक नया अध्याय लिखेगी। ओलंपिक डे की शुरुआत 1948 में हुई थी, जो 23 जून 1894 को पेरिस के सोरबोन में आधुनिक ओलंपिक खेलों की स्थापना की याद में मनाया जाता है। इसका उद्देश्य दुनिया भर में उम्र, लिंग या क्षमता की परवाह किए बिना खेलों में भागीदारी को बढ़ावा देना है।

स्टॉक मार्केट में समय प्रोजेक्ट सर्विसेज की मजबूत एंट्री, निवेशकों को 10 प्रतिशत से अधिक का फायदो

एजेंसी

नई दिल्ली। ईपीसी सर्विसेज मुहैया कराने वाली कंपनी समय प्रोजेक्ट सर्विसेज के शेयरों ने आज स्टॉक मार्केट में मजबूत एंट्री करके अपने आईपीओ निवेशकों को खुश कर दिया। आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 34 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे। आज एनएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर इसकी एंट्री 6.03 प्रतिशत प्रीमियम के साथ 36.05 रुपये के स्तर पर हुई। लिस्टिंग के बाद खरीदारी के सपोर्ट से इस शेयर में और तेजी आई। बाजार में जारी खरीद-बिक्री के बीच सुबह 10~30 बजे ये शेयर 37.50 रुपये के स्तर पर पहुंचा हुआ था। इस तरह कंपनी के आईपीओ निवेशकों को अभी तक के कारोबार में 10.29 प्रतिशत का फायदा हो चुका है। समय प्रोजेक्ट सर्विसेज का 14.69 करोड़ रुपये का आईपीओ 16 से 18 जून के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था। इस आईपीओ को निवेशकों की ओर से अच्छा रिस्पॉन्स मिला था, जिसके कारण ये ओवरऑल 29.08 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इनमें क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) के लिए रिजर्व पोर्शन 22.64 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इसी तरह नॉन इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स (एनआईआई) के लिए रिजर्व पोर्शन में 69.19 गुना सब्सक्रिप्शन आया था। इसके अलावा रिटेल इन्वेस्टर्स के लिए रिजर्व पोर्शन 15.09 गुना सब्सक्राइब हुआ था।

चीन में भीषण गर्मी को देखते हुए चेतावनी जारी

बीजिंग। चीन की राजधानी बीजिंग में सोमवार को भीषण गर्मी के कारण ऑरेंज अलर्ट जारी किया गया।बीजिंग मौसम विज्ञान वेधशाला ने यह जानकारी दी। देश में सोमवार और मंगलवार को दोपहर 12 बजे से शाम छह बजे तक शहर के मैदानी इलाकों में तापमान 38 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचने का अनुमान है। मौसम विभाग के अधिकारियों ने चेतावनी दी है कि वे इस गर्मी के दौरान बाहर निकलने से बचें और लंबे समय तक धूप में नहीं रहें। उल्लेखनीय है कि चीन में शुक्रवार को येलो अलर्ट जारी किया गया था और शनिवार दोपहर 3:40 बजे बीजिंग के दक्षिणी इलाके में तापमान 38.1 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया था जो अब तक देश में सबसे गर्म दिन रहा।

अफगान पुलिस ने हथियार और गोला-बारूद बरामद

काबुल। पूर्वी अफगानिस्तान के पाकतिया प्रांत में आतंकवाद निरोधक दस्ते ने भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद किया है। गृह मंत्रालय ने सोमवार को यह जानकारी दी। गृह मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि समकानी जिले के बाहरी इलाके में एक अभियान के दौरान प्रतिबंधित वस्तुओं को जब्त किया गया, जिसमें कलाश्निकोव राइफल, पिस्तौल, ग्रेनेड, बड़ी मात्रा में कारतूस एवं गोलियां तथा अवैध रूप से रखे गए अन्य सैन्य उपकरण शामिल हैं। इस मामले में अभी तक किसी की गिरफ्तारी नहीं हुई है और बरामद किए गए सैन्य उपकरणों को संबंधित अधिकारियों को सौंप दिया गया। इससे पहले, पुलिस ने पिछले सप्ताह पूर्वी लघमन प्रांत में अवैध रूप से हथियार रखने और ले जाने के आरोप में 10 लोगों को गिरफ्तार किया था। अफगानिस्तान की अंतरिम सरकार ने अब तक देश में सुरक्षा स्थिति को सामान्य करने के प्रयासों के अंतर्गत भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद किया है।

ईरान में इजरायल अपने लक्ष्य की प्राप्ति के बहुत नजदीक :नेतन्याहू

यरूशलम। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने कहा है कि ईरान के परमाणु प्रतिष्ठानों एवं मिसाइल कार्यक्रमों को भारी नुकसान पहुंचाने के बाद इजरायल अपने उद्देश्यों को पूरा करने के 'बहुत नजदीक' है। यह जानकारी द टाइम्स ऑफ इजरायल सोमवार को दी। श्री नेतन्याहू ने पहले से रिकॉर्ड संवाददाता सम्मेलन में कहा कि इजरायल, ईरान के 400 किलोग्राम संवर्धित यूरेनियम की जानकारी हासिल कर रहा है। उन्होंने दावा किया कि इजरायल के पास इसके ठिकाने के बारे में दिलचस्प जानकारी है, लेकिन उन्होंने विस्तार से नहीं बताया। उन्होंने युद्ध की संभावना से इनकार किया लेकिन यह भी कहा कि सभी लक्ष्य पूरे होने तक अभियान जारी रहेगा। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने यह पुष्टि की थी कि अमेरिका ने इस्फ़हान, फोर्डो और नतांज़ में ईरान के तीन परमाणु प्रतिष्ठानों पर सफलतापूर्वक हमला किया। ईरान ने भी इन हमलों की पुष्टि की लेकिन कहा कि इन हमलों में उसके परमाणु अभियान को कोई नुकसान नहीं पहुंचा है, क्योंकि उन स्थलों को खाली कर दिया गया था और परमाणु सामग्री को पहले ही हटा लिया गया था।

टॉप 10 में शामिल देश की 6 कंपनियों के मार्केट कैप में 1.62 लाख करोड़ की बढ़ोतरी

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में पिछले कारोबारी सप्ताह के दौरान हुई खरीद-बिक्री के कारण देश की टॉप 10 मोस्ट वैल्यूड कंपनियों में से 6 कंपनियों के मार्केट कैप में 1.62 लाख करोड़ रुपये से अधिक की बढ़ोतरी दर्ज की गई। इनमें सबसे अधिक फायदे में भारती एयरटेल और रिलायंस इंडस्ट्रीज रहीं। टॉप 10 में शामिल 4 कंपनियों के मार्केट कैप में इस सप्ताह 26 हजार करोड़ रुपये से अधिक की गिरावट आ गई। इनमें सबसे अधिक नुकसान बजाज फाइनेंस को हुआ।इस सप्ताह के कारोबार के दौरान भारती एयरटेल, रिलायंस इंडस्ट्रीज, एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) और इंफोसिस के मार्केट कैप में 1,62,288.06 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी हुई। दूसरी ओर, बजाज फाइनेंस, टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस), भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) और हिन्दुस्तान यूनिलीवर के मार्केट कैप में 26,932.78 करोड़ रुपये की गिरावट आ गई। 16 जून से 20 जून के बीच हुए कारोबार के दौरान भारती एयरटेल का मार्केट कैप 54,055.96 करोड़ रुपये उछल कर 11,04,469.29 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। इसी तरह रिलायंस इंडस्ट्रीज का मार्केट कैप 50,070.14 करोड़ रुपये बढ़ कर 19,82,033.60 करोड़ रुपये के स्तर पर आ गया। इसके अलावा, एचडीएफसी बैंक का मार्केट कैप 38,503.91 करोड़ रुपये की उछाल के साथ 15,07,281.79 करोड़ रुपये के स्तर पर, इंफोसिस का मार्केट कैप 8,433.06 करोड़ रुपये बढ़ कर 6,73,751.09 करोड़ रुपये के स्तर पर, आईसीआईसीआई बैंक का मार्केट कैप 8,012.13 करोड़ रुपये उछल कर 10,18,387.76 करोड़ रुपये के स्तर पर और स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) का मार्केट कैप 3,212.86 करोड़ रुपये बढ़ कर 7,10,399.75 करोड़ रुपये के स्तर पर आ गया। दूसरी ओर, बजाज फाइनेंस का मार्केट कैप 17,876.42 करोड़ रुपये कम होकर 5,62,175.67 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया।

विदेशी मुद्रा भंडार 2.3 अरब डॉलर बढ़कर 698.9 अरब डॉलर

एजेंसी

मुंबई। विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति, स्वर्ण, विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के पास आारक्षित निधि में भारी इजाफा होने से 13 जून को समाप्त सप्ताह में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 2.3 अरब डॉलर की बढ़ोतरी लेकर 698.9 अरब डॉलर पर पहुंच गया। वहीं, इसके पिछले सप्ताह देश का विदेशी मुद्रा भंडार 5.2 अरब डॉलर की बढ़ोतरी के साथ 696.7 अरब डॉलर पर रहा था। रिजर्व बैंक की ओर से जारी साप्ताहिक आंकड़े के अनुसार, 13 जून को समाप्त सप्ताह में विदेशी मुद्रा भंडार के सबसे बड़े घटक विदेशी मुद्रा परिसंपत्ति 1.7 अरब डॉलर की बढ़ोतरी लेकर 589.4 अरब डॉलर पर पहुंच गई। इसी तरह इस अवधि में स्वर्ण भंडार में 42.8 करोड़ डॉलर का इजाफा हुआ और यह बढ़कर 86.3 अरब डॉलर पर पहुंच गया। आलोच्य सप्ताह एसडीआर 8.5 करोड़ डॉलर चढ़कर 18.8 अरब डॉलर हो गया। इसी तरह इस अवधि में आईएमएफ के पास आरक्षित निधि में 4.3 करोड़ डॉलर की बढ़ोतरी हुई और यह पिछले सप्ताह के मुकाबले बढ़कर 4.5 अरब डॉलर हो गया।

ट्रेडिंग के नाम पर 4.83 करोड़ रुपये की ठगी, सेबी ने दो आरोपियों पर तीन साल का लगाया प्रतिबंध

एजेंसी

नई दिल्ली। शेयर बाजार के नियामक भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ने शिवप्रसाद पट्टिया और अलकेश नरवारे नामक दो व्यक्तियों को निवेशकों से धोखाधड़ी करने के मामले में तीन साल के लिए शेयर बाजार से प्रतिबंधित कर दिया है। साथ ही इन दोनों से 4.83 करोड़ रुपये की अवैध कमाई ब्याज सहित वसूलने का आदेश भी दिया गया है।

बता दें कि सेबी की जांच में सामने आया कि दोनों आरोपियों ने ऑउट ऑफ द मनी (ओटीएम' ऑप्शंस में फर्जी ट्रेड कर निवेशकों को गुमराह किया। ये लोग व्हाट्सएप ग्रुप के जरिए निवेशकों को ऑल्गो ट्रेडिंग के नाम पर गारंटी रिटर्न का झांसा देकर उनके ट्रेडिंग अकाउंट का नियंत्रण हासिल कर लेते थे। फिर इन खातों से खुद के नियंत्रण वाले अकाउंट में पैसे ट्रांसफर कर लेते थे। मामले में सेबी ने कहा है कि यह कार्रवाई बस झूठी कमाई रोकने के अलावा, निवेशकों की रक्षा और बाज़ार की ईमानदारी बनाए रखने का संदेश है। जारी बयान में कहा गया कि अगर कोई भी व्यक्ति नकली व्यवहार, बड़ी कमाई का लालच देकर निवेशकों को ठगने की कोशिश करता है, तो उसे कड़ी कार्रवाई और गंभीर परिणामों का सामना करना पड़ेगा। सेबी ने दोनों आरोपियों पर सख्त कर्रवाई किए। इसके तहत सेबी की ओर से.दोनों आरोपियों पर तीन साल तक शेयर बाजार में ट्रेडिंग पर प्रतिबंध लगाया गया है। दोनों को ?25 लाख-?25 लाख का जुर्माना भी निर्देशित किया गया है, जो कि 45 दिन में अदा करना होगा। इसके साथ ही सेबी ने इसमें ?4.83 करोड़ की राशि को 12त्न वार्षिक ब्याज सहित फरवरी 2022 से वसूलने का भी आदेश दिया है।गौरतलब है कि शिवप्रसाद पट्टिया और अलकेश नरवारे पर सेबी ने आरोप लगाया है कि यह जोड़ी व्हाट्सएप ग्रुप्स के ज़रिए लोगों को बुलाती थी। उन्हें ऑल्गो ट्रेडिंग यानी कंप्यूटर सिस्टम से स्वचालित ट्रेडिंग करने की सुविधा व गारंटीड रिटर्न का लालच दिया जाता था। इसके बाद वे उन निवेशकों से उनके ट्रेडिंग अकाउंट के लॉगिन डिटेल्स लेकर, उनके नाम पर ओटीएम विकल्पों में ट्रेड करते और पैसा अपने नियंत्रण वाले खातों में ट्रांसफर कर लेते थे। इन्हीं खातों में ?4.83 करोड़ की अवैध कमाई मिली, जिसे सेबी ने जब्त करने का आदेश दिया है।

ईरान पर अमेरिकी हमले के बाद कच्चे तेल का भाव 2 फीसदी से ज्यादा उछला

एजेंसी

नई दिल्ल। ईरान में परमाणु ठिकानों पर अमेरिकी हमले का वैश्विक बाजार पर व्यापक असर देखने को मिल रहा है। अमेरिका की ओर से सप्ताहांत ईरान के परमाणु ठिकानों पर हमले के बाद अंतरराष्ट्रीय बाजार में सोमवार को कच्चे तेल के भाव में 2 फीसदी से ज्यादा की तेजी दर्ज की गई है, जो 80 डॉलर प्रति डॉलर के करीब पहुंच गया है। आने वाले समय में इसका व?यापक असर भारत में पेट्रोल और डीजल के दाम पर पड़ सकता है।

अंतरराष्ट्रीय बाजार में शुरुआती कारोबार के दौरान कच्चे तेल (क्रूड ऑयल) की कीमतों में 2 फीसदी से अधिक की तेजी दिखी है। अंतरराष्ट्रीय मानक ब्रेंट क्रूड की कीमत 1.92 डॉलर यानी 2.49 फीसदी उछलकर 78.93 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया। वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट क्रूड (डब्ल्यूटीआई) 1.89 डॉलर यानी 2.56 फीसदी बढ़कर 75.73 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया है। जानकारों का कहना है कि ईरान की संसद ने हाल ही में अमेरिकी हवाई हमलों के जवाब में स्ट्रेट ऑफ होर्मुज को बंद करने का प्रस्ताव पास किया है। अगर ईरान स्ट्रेट ऑफ होर्मुज बंद करता है, तो इसका असर भारत में पेट्रोल-डीजल की कीमतों पर पड़ सकता है। दरअसल यह कच?चे तेल के व्यापार का अहम रास्ता है। इस खबर के बाद क्रूड ऑयल का भाव बढ़कर 80 डॉलर प्रति बैरल के करीब पहुंच गया है। राजधानी नई दिल्ली में पेट्रोल की कीमत 94.72 रुपये, मुंबई में 104.21 रुपये, कोलकाता में 103.94 रुपये और चेन्नई में 100.75 रुपये प्रति लीटर है। वहीं, डीजल का भाव दिल्ली में 87.62 रुपये, मुंबई में 92.15 रुपये, कोलकाता में 90.76 रुपये और चेन्नई में 92.34 रुपये प्रति लीटर है। हालांकि, सार्वजनिक क्षेत्र की तेल एवं गैस विपणन कंपनियों ने पेट्राल और डीजल के दाम में अभी इजाफा नहीं किया है, लेकिन क्रूड ऑयल के दाम बढ़ने पर तेल कंपनियों को पेट्रोलियम पदार्थों के दाम बढ़ाने पड़ सकते हैं, क्योंकि भारत अपनी कच्चे तेल जरूरतों का बड़ा हिस्सा इंपोर्ट करता है।

घरेलू सर्राफा बाजारों में नरमी का रुख, बीते सप्ताह 930 रुपये तक सस्ता हुआ सोना

एजेंसी

नई दिल्ली। देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में रविवार को 24 कैरेट सोना 1,00,750 रुपये से लेकर 1,00,900 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना आज 92,350 रुपये से लेकर 92,500 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। सोना की तरह ही चांदी के भाव में आज गिरावट दर्ज की गई है, जिसके कारण ये चमकीली धातु दिल्ली सर्राफा बाजार में 1,10,000 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर पहुंच गई है। साप्ताहिक आधार पर देखा जाए तो सोमवार से शनिवार तक देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोने के भाव में 930 रुपये प्रति 10 ग्राम तक की कमजोरी दर्ज की गई है। इसी तरह 22 कैरेट सोना भी पिछले एक सप्ताह के दौरान 850 रुपये प्रति 10 ग्राम तक सस्ता हो चुका है। साप्ताहिक आधार पर सोने की कीमत में तो गिरावट आई है, लेकिन उतार चढ़ाव का सामना करने के बावजूद चांदी की कीमत में सोमवार से शनिवार तक के कारोबार के बाद साप्ताहिक आधार पर कोई बदलाव नहीं हुआ है।दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 1,00,900 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 92,500 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 1,00,750 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 92,350 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 1,00,800 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 92,400 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 1,00,750 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 92,350 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 1,00,750 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 92,350 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 1,00,900 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 92,500 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 1,00,800 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 92,400 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। जयपुर में 24 कैरेट सोना 1,00,900 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 92,500 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी आज सोना सस्ता हुआ है। इन तीनों राज्यों की राजधानियों बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर में 24 कैरेट सोना आज 1,00,750 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है।

व्यापार लाइसेंसिंग प्रक्रिया से दिल्ली पुलिस को हटाने का निर्णय ऐतिहासिक : खंडेलवाल

एजेंसी

नई दिल्ली। चांदनी चौक से सांसद एवं कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय महामंत्री प्रवीन खंडेलवाल ने विभिन्न तरह के व्यापार को लाइसेंसिंग एवं एनओसी प्रक्रिया से दिल्ली पुलिस को हटाने के फैसले का स्वागत किया है। खंडेलवाल ने कहा कि इससे दिल्ली के 4 लाख के लगभग छोटे बड़े व्यवसायों को लाभ मिलेगा। प्रवीण खंडेलवाल ने दिल्ली के मुख्यमंत्री के इस निर्णय को ऐतिहासिक और दूरदर्शी बताते हुए कहा कि यह व्यवसाय सुगमता की दिशा में एक शानदार कदम है। व्यापार लाइसेंसिंग प्रणाली से पुलिस की भूमिका को समाप्त करना पारदर्शी, भ्रष्टाचार-मुक्त और प्रभावी प्रशासन की ओर बढ़ने जैसा हैं, जिससे उद्यमियों को सशक्त बनाया जाएगा और आर्थिक गतिविधियों को गति मिलेगी। मुख्यमंत्री का यह निर्णय न केवल अनावश्यक नौकरशाही बाधाओं को समाप्त करेगा, बल्कि पुलिस को भी उनके मुख्य, कर्तव्यों कानून व्यवस्था बनाए रखने, अपराध रोकने और महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने पर पूरी तरह ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाएगा। संशोधित व्यवस्था के अनुसार होटल, गेस्ट हाउस, रेस्टोरेंट, मोटल, स्विमिंग पूल, वीडियो गेम पार्लर, डिस्कोथेक, ऑडिटोरियम और मनोरंजन पार्क जैसे व्यवसायों के लाइसेंस और एनओसी अब शहरी स्थानीय निकायों से जारी किए जाएंगे। व्यापारिक समुदाय पुलिस आधारित लाइसेंस प्रणाली में देरी और भ्रष्टाचार के आरोपों से जुड़ी इन मांगों को लंबे समय से उठा रहा था।

खाद्य तेलों में उबाल; मूंग दाल और चीनी सस्ती

एजेंसी

नई दिल्ली। विदेशी बाजारों की जबरदस्त तेजी के साथ ही स्थानीय स्तर पर मांग निकलने से बीते सप्ताह दिल्ली थोक जिंस बाजार में खाद्य तेलों में उबाल आ गया जबकि आवक बढ़ने से मूंग दाल और चीनी सस्ती हो गई वहीं अन्य जिंसों में टिकाव रहा।

तेल-तिलहन : वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में पाम ऑयल का जुलाई वायदा सप्ताहांत पर 140 रिंगिट उबलकर 4067 रिंगिट प्रति टन पर पहुंच गया। इसी तरह जुलाई का अमेरिकी सोया तेल वायदा 6.9 सेंट की बढ़ोतरी लेकर 55.22 सेंट प्रति पौंड बोला गया।

इस दौरान खाद्य तेलों में जबरदस्त तेजी रही। इससे सरसों तेल 183 रुपये, मूंगफली तेल 366 रुपये, सूरजमुखी तेल 512 रुपये, सोया रिफाइंड 329 रुपये, पाम ऑयल 667 रुपये और वनस्पति तेल के भाव 233 रुपये प्रति क्विंटल उछल गए।

सप्ताहांत पर सरसों तेल 16849 रुपये प्रति क्विंटल, मूंगफली तेल 17948 रुपये प्रति क्विंटल, सूरजमुखी तेल 16116 रुपये प्रति क्विंटल, सोया रिफाइंड 14102 रुपये प्रति क्विंटल, पाम ऑयल 13333 रुपये प्रति क्विंटल और वनस्पति तेल 14666 रुपये प्रति क्विंटल पर रहा।

दाल-दलहन : बीते सप्ताह दाल-दलहन के बाजार में मूंग दाल में 250 रुपये प्रति क्विंटल की गिरावट को छोड़कर अन्य दालों में टिकाव रहा। चना, दाल चना, मसूर दाल, उड़द दाल और अरहर दाल में कोई बदलाव नहीं हुआ सप्ताहांत पर चना 5700-5800, दाल चना 6700-6800, मसूर काली 7600-7700, मूंग दाल 9350-9450, उड़द दाल 9300-9400, अरहर दाल 8600-8700 रुपये प्रति क्विंटल रही।

अनाज : अनाज मंडी में भाव स्थिर रहे। इस दौरान गेहूं और चावल के भाव पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर पड़े रहे।

इस दौरान (भाव प्रति क्विंटल) गेहूं दड़ा 2950-3050 रुपये और चावल 3650-3750 रुपये प्रति क्विंटल रहा।

चीनी-गुड़ः बीते सप्ताह मीठे के बाजार में मिलाजुला रुख रहा। चीनी 300 रुपये प्रति क्विंटल सस्ती हो गई जबकि गुड़ के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ।

सप्ताहांत पर चीनी एस 3590-3690, चीनी एम. 4200-4300, मिल डिलीवरी 3470-3570 और गुड़ 4400-4500 रुपये प्रति क्विंटल बोले गये।

कोलकाता मेट्रो ने अपनाई पर्यावरण-अनुकूल ब्रेकिंग तकनीक, कार्बन उत्सर्जन में बड़ी कमी

एजेंसी

कोलकाता। कोलकाता मेट्रो रेलवे ने पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक अहम कदम उठाते हुए अपने ट्रेनों में एक नई टिकाऊ ब्रेकिंग तकनीक रेजेनरेटिव ब्रेकिंग को अपनाया है। इससे न सिर्फ बिजली की बचत हो रही है, बल्कि कार्बन उत्सर्जन में भी काफी कमी आई है। यह जानकारी रविवार को मेट्रो रेलवे के एक अधिकारी ने दी। रेजेनरेटिव ब्रेकिंग तकनीक में ट्रेन जब ब्रेक लगाती है, तो उसके इलेक्ट्रिक मोटर उल्टी दिशा में काम करते हैं और ट्रेन की गतिज ऊर्जा को दोबारा विद्युत ऊर्जा में बदल देते हैं। सामान्य ब्रेकिंग में यह ऊर्जा गर्मी में बदलकर व्यर्थ हो जाती है, लेकिन इस तकनीक से वह ऊर्जा फिर से काम में लाई जा सकती है। वित्त वर्ष 2024-25 में इन 37 रैकों की तरफ से कुल 1.08 करोड़ यूनिट बिजली रेजेनरेट की गई, जिससे करीब 8.2 करोड़ रुपये की ऊर्जा लागत की बचत हुई है। इस प्रणाली की वजह से 13,500 टन कार्बन उत्सर्जन में कमी दर्ज की गई है, जो पर्यावरण के लिहाज से एक बड़ी उपलब्धि है।मेट्रो रेलवे की तरफ से किए गए अध्ययन में पाया गया है कि इस तकनीक से 17 से 20 प्रतिशत तक ऊर्जा दोबारा उत्पन्न की जा सकती है। कोलकाता मेट्रो के प्रवक्ता ने बताया कि यह तकनीक लंदन, टोक्यो और न्यूयॉर्क जैसे बड़े शहरों की मेट्रो सेवाओं में भी उपयोग में लाई जाती है। कोलकाता मेट्रो एक और पर्यावरण हितैषी कदम के तहत 4 मेगावॉट की एडवांस केमिकल सेल (एसीसी) बैटरी स्टोरेज सिस्टम भी स्थापित कर रही है। यह भारतीय रेल में पहली बार किया जा रहा है। बैटरियों की आपूर्ति हो चुकी है और यह प्रणाली जुलाई 2025 के मध्य तक चालू हो सकती है। रेजेनरेटिव ब्रेकिंग से न सिर्फ ऊर्जा की बचत होती है, बल्कि ब्रेक, पहियों और अन्य हिस्सों की घिसावट भी कम होती है। इससे रखरखाव का खर्च भी घटेगा।

स्टॉक मार्केट में पाटिल ऑटोमेशन की धांसू एंट्री, प्रीमियम लिस्टिंग के बाद लगा अपर सर्किट

एजेंसी

नई दिल्ली। लाइन ऑटोमेशन सॉल्यूशन मुहैया कराने वाली कंपनी पाटिल ऑटोमेशन के शेयरों ने आज स्टॉक मार्केट में जबरदस्त एंट्री करके अपने आईपीओ निवेशकों को खुश कर दिया। आईपीओ के तहत कंपनी के शेयर 120 रुपये के भाव पर जारी किए गए थे। आज एनएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर इसकी एंट्री 29.17 प्रतिशत लिस्टिंग गेन के साथ 155 रुपये के स्तर पर हुई। लिस्टिंग के बाद खरीदारी के सपोर्ट से ये शेयर कुछ देर में ही उछल कर 162.75 रुपये के अपर सर्किट लेवल तक पहुंच गया। इस तरह कंपनी के आईपीओ निवेशकों को आज पहले दिन ही 35.63 प्रतिशत का फायदा हो गया। पाटिल ऑटोमेशन का 69.61 करोड़ रुपये का आईपीओ 16 से 18 जून के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था। इस आईपीओ को निवेशकों की ओर से जोरदार रिस्पॉन्स मिला था, जिसके कारण ये ओवरऑल 101.42 गुना सब्सक्राइब हो गया था। इनमें क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) के लिए रिजर्व पोर्शन 82.92 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इसी तरह नॉन इंस्टीट्यूशनल इन्वेस्टर्स (एनआईआई) के लिए रिजर्व पोर्शन में 258.18 गुना सब्सक्रिप्शन आया था। इसके अलावा रिटेल इन्वेस्टर्स के लिए रिजर्व पोर्शन 44.77 गुना सब्सक्राइब हुआ था। इस आईपीओ के तहत 10 रुपये फेस वैल्यू वाले 58,00,800 नए शेयर जारी किए गए हैं।

अगले सप्ताह 17 नए आईपीओ की लॉन्चिंग, पांच शेयर स्टॉक मार्केट में करेंगे एंट्री

एजेंसी

नई दिल्ली।शुरू हो रहे नए कारोबारी सप्ताह में प्राइमरी मार्केट में जबरदस्त हलचल रहने वाली है। इस सप्ताह 17 नए आईपीओ लॉन्च होने वाले हैं। इनमें एचडीबी फाइनेंशियल सर्विसेज और कल्पतरु समेत 6 आईपीओ मेनबोर्ड सेगमेंट का है, जबकि शेष 12 आईपीओ एसएमई सेगमेंट के हैं। अगले कारोबारी सप्ताह में भी 24 को सबसे ज्यादा हलचल रहने वाली है। इस एक दिन में ही मेनबोर्ड और एसएमई सेगमेंट मिला कर कुल 6 आईपीओ की लॉन्चिंग होने वाली है। इन नए आईपीओ के अलावा पिछले सप्ताह सब्सक्रिप्शन के लिए खुले तीन आईपीओ में भी इस सप्ताह 24 जून तक बोली लगाने का मौका रहेगा। जहां तक स्टॉक मार्केट में लिस्टिंग के जरिए कारोबार की शुरुआत करने की बात है, तो इस सप्ताह पांच कंपनियां स्टॉक मार्केट में एंट्री करने वाली हैं।सप्ताह के पहले कारोबारी दिन 23 जून को ही समय एजेसी ज्वेल का 15.39 करोड़ रुपये का आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। इसमें 26 जून तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 90 से 95 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 1,200 शेयर का है। कंपनी के शेयरों का अलॉटमेंट 27 जून को होगा। इसके बाद 1 जुलाई को एनएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर इसकी लिस्टिंग होगी। सप्ताह के दूसरे कारोबारी दिन 24 जून को कल्पतरु लिमिटेड का 1,590 करोड़ रुपये का आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। इसमें 26 जून तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 380 से 400 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 36 शेयर का है। कंपनी के शेयरों का अलॉटमेंट 27 जून को होगा। इसके बाद 1 जुलाई को बीएसई और एनएसई पर इसकी लिस्टिंग होगी।इसी दिन एलेनबेरी इंडस्ट्रियल गैसेस का 852.53 करोड़ रुपये का आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। इसमें 26 जून तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 387 से 414 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 37 शेयर का है। कंपनी के शेयरों का अलॉटमेंट 27 जून को होगा। इसके बाद 1 जुलाई को बीएसई और एनएसई पर इसकी लिस्टिंग होगी। 24 जून को ही मेनबोर्ड के एक और आईपीओ के रूप में ग्लोब सिविल प्रोजेक्ट्स का 119 करोड़ रुपये का पब्लिक इश्यू सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। इस आईपीओ में भी 26 जून तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 67 से 71 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 211 शेयर का है। कंपनी के शेयरों का अलॉटमेंट 27 जून को होगा। इसके बाद 1 जुलाई को बीएसई और एनएसई पर इसकी लिस्टिंग होगी।मेनबोर्ड के इन आईपीओ के अलावा इसी दिन श्री हरे-कृष्णा स्पॉन्ज आयरन का 29.91 करोड़ रुपये का आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। इसमें 26 जून तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 56 से 59 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है, जबकि लॉट साइज 2,000 शेयर का है। कंपनी के शेयरों का अलॉटमेंट 27 जून को होगा। इसके बाद 1 जुलाई को एनएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर इसकी लिस्टिंग होगी। इसी दिन श्री आईकॉन फैसिलिटेटर्स का 19.11 करोड़ रुपये का आईपीओ सब्सक्रिप्शन के लिए खुलेगा। इसमें 26 जून तक बोली लगाई जा सकेगी। आईपीओ के तहत बोली लगाने के लिए 85 से 91 रुपये प्रति शेयर का प्राइस बैंड तय किया गया है।

बिरसा टाइम्स देश का सर्वाधिक प्रसारित रविवारीय अखबार है। अपनी खोजपूर्ण तथा विश्लेषणात्मक खबरों के कारण बिरसा टाइम्स ने मीडिया– जगत में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई हैं। वर्ष 1980 से शुरू हुआ बिरसा टाइम्स का सफरनामा इसके पाठकों के निरंतर स्नेह और समर्थन के चलते आज भी उसी तेवर के साथ जारी हैं।

राँची और दिल्ली के साथ–साथ
अब
बिहार, छत्तीसगढ़ तथा उड़ीसा
से
प्रकाशित होने जा रहा है।

बिरसा टाइम्स

देश का सर्वाधिक प्रसारित नंबर-1 रविवारीय अखबार

जन सम्पर्क विभाग में विशाल भ्रष्टाचार का वट वृक्ष

“ जब झारखंड और बिहार एक साथ था तब पांडे अपने पिता के साथ पटना में महावीर मंदिर में साफ–सफाई का काम करता था और पांडे जी के पिता मंदिर के सचिव आईपीएस स्वर्गीय आचार्य किशोर कुणाल जी के घर पर पूजा पाठ करते थे एवं महावीर मंदिर में भी काम करते थे और उसी समय अवधेश पांडे बिहार सरकार में दैनिक मजदूर में बहाली होकर धीरे–धीरे आई इ एस पदाधिकारी के घर पर कप–प्लेट साफ कर प्रभारी निदेशक तक पहुंच गए ! श्री पांडे को हिंदी और अंग्रेजी में एक लाइन भी लिखने नहीं आता था ! इनका सारा का सारा फाइल का काम के नीचे वाले अधिकारी लिखते थे और इस काम में उप निदेशक श्री शालिनी वर्मा और वर्तमान में बोकारो के उपायुक्त श्रीअजय नाथ झा सारा फाइल का काम करते थे ! दोनों के दोनों से पांडे के कार्यालय से लेकर आवास तक 11:00 बजे रात तक गुरु मंत्र लेते रहते थे और इसमें अपनी कुशलता से श्री झा ने उपायुक्त पद पर पहुंच गए ! ऐसे पांडे कभी भी अपनी पत्नी को अपने आवास में नहीं रखते थे और पांडे के समय में सिर्फ सिर्फ उसके पिता ही रहते थे और श्री पांडे के समय में जनसंपर्क विभाग में भ्रष्टाचार का पेड़–पौधा लगन ! शुरू हुआ और अब वर्तमान में जनसंपर्क विभाग में भ्रष्टाचार का बड़ा बरगद का पेड़ हो चुका है।

बिरसा टाइम्स देश का विश्वास पत्रकारिता के उन मूल्यों में हैं जो आम आदमी की चिंताओं और सरोकारों को आवाज देते हैं। इसीलिए बिरसा टाइम्स लोगो के बीच इस लम्बी यात्रा में भी अपनी विश्वसनीयता बरकरार रखने में कामयाब रहा है। अपने खास कंटेंट, गंभीर राजनैतिक विश्लेषण, अलग अंदाज और सुन्दर छपाई के चलते बिरसा टाइम्स को सम्मान–जनक स्थान मिला हैं। शायद इसीलिए बिरसा टाइम्स के पाठक वे युवा और संवेदनशील लोग हैं जो न केवल देश के बारे में सोचते हैं बल्कि देश के लिए कुछ करने का जज़्बा भी रखते हैं।

सत्य और निष्पक्ष समाचारों के लिए पढ़ें !

सम्पर्क सूत्र :–

aadivasiexpress@gmail.com
birsatimes@gmail.com
8084674042
6202611859
8084674042